अमदावाद.
युनाइटेड प्रीन्टींग प्रेस, पानी

सांकळियु.

शुद्धिपत्रक.

पानुं	लीटी.	अशुद्ध	शुद्ध.
१२	९	न	ते
१८	६	निमग्नहोय	निमग्नहोय,
,,	९	ममाणी	गमभावी,
१९	३	उपजीविका [illegible]	उपजीविकामां
,,	२०	उत्तमगतिनु	उत्तमगतिनुं
२९	१३	हेतुथी	गतिना
३१	१४	उडा	उंडो
३३	१८	आत्महितैवण्	आत्महितैषिण्
३९	२१	निर्गथ	निर्ग्रंथ
४०	१४	संगत्नां	संगत्नांने.
४१	१३	पत्ता	पुत्री
४३	१९	पात्रमां	पात्रना
४४	१०	प्रतिक्रमणी	प्रतिक्रमण
४८	१६	भगवंतवांधनी	भगवंतेवीचर्ष.
६०	९	आत्मु	आत्मं
६७	१८	त्र	ते
६८	३	उत्तराध्ययनं	उत्तराध्ययनं
,,	२२	तेव	ते
७२	७	विज्ञान	विज्ञान
७३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८१	३	पर्णो	पर्णो
,,	१८	[illegible]	[illegible]

૧૨	મન	મત
૧૬	વિચારને	વિચારીને
૧૮	વિચારમું	વિચારમું
૯	ધર્મ	ધર્મ
૧૮	[illegible]	[illegible]
૩	[illegible]	[illegible]
૨૧	[illegible]	[illegible]
૨૦	[illegible]	[illegible]
૧૬	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
૧૯	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
૧૦	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		
[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्रस्तावना.

शिक्षणपद्धति अने मुख्यमुद्दा.

१. आ ग्रंथ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विवेचन अने प्रज्ञावबोध भाग भिन्न छे. आ पुस्तक एमांनो एक खंड छे; छतां सामान्य तत्त्वरूप छे.

गुजराती भाषानुं जेने सारुं ज्ञान छे, अने नवतत्त्वादि सामान्य प्रकरणो जे समजी शकेछे, एओने आ ग्रंथ विशेष बोधदायक थशे. आ ग्रंथनी योजनानो एक हेतु उछरता युवानोने आत्म-हित भणी लक्ष करावानो छे. तेमज आत्मार्थी पुरुषो आवी बीजी स्व–पर हितकारी माळा गुंथी प्रसिद्धिमां आवे एवो पण एक हेतु छे. आ मोक्षमाळानां चार पुस्तको थवानी योजना हती; एमांनुं आ बीजुं पुस्तक छे.

अगाउ कह्युं तेम आ पुस्तक बालावबोध छे; विवेचन अने प्रज्ञावबोध त्रीजा अने चोथा पुस्तकमां आववानी योजना हती. पहेलां पुस्तकनो उद्देश पांचमा पारिग्राफथी सूचित थाय छे. आ ग्रंथना कर्ता पुरुष ए बाकीनां पुस्तको गुंथे ए प्रथम तेओश्रीनो देहोत्सर्ग थयो छे; जेना जेवुं बीजुं कंइ संतापजनक होइ शके नहीं. त्रीजा अने चोथा पुस्तकनी संकलना—दरेक माळाना १०८ शिक्षापाठरूप मणकारूपे—अंतरमां भरी वचनथी एओए प्रकाशी छे. कोइ विवेकी, मध्यस्थभावी जीव ज्ञानिपुरुषनुं आलंबन लइ ए संकलना प्रमाणे माळा गुंथवा पुरुषार्थ करे तो ते महाभागने कल्याणरूप सुखदाइ. तथास्तु!

२. आ ग्रंथनी आ बीजी आवृत्ति बहार पडे छे. "वीतराग मार्गसेविका" एवुं उपनाम था ग्रंथने घटे छे. वीतराग कथित मार्गनुं स्वरूप था ग्रंथमां दर्शाव्युं छे इत्यादि हिकमतवाळी, विशुद्ध करवानी आशा हुता पर कर्ता पुरुष महात्मा छे

केः—"बहु उंडा उतरतां आ मोक्षमाळा मोक्षनां कारणरुप थइ पडशे. (कारणके) मध्यस्थतायी एमां तत्त्वज्ञान अने शिल बोधवानो उद्देश छे." आ मोक्षमाळा मोक्षवधूमाटेनी वरमाळा थाय ए सहज सिद्ध थाय छे. तत्त्वज्ञान अने सत्शील, अथवा ज्ञान अने क्रिया, अथवा श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना, अथवा सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन अने सम्यक्चारित्र,सरळ भाषामां सत्य जाणपणुं अने ते प्रमाणे सत्य वर्त्तन आ मोक्षप्राप्तिनां साधनछे; अने ए साधनोनो आ ग्रंथमां बोधछे. तो ते यथार्थ वांची-विचारी ते प्रमाणे प्रवर्त्तनारने मोक्ष केम सुलभ न होय? अर्थात् तत्त्व समजवानो प्रयास करी, ते समजी सुधी रीते वर्त्ते तो तेने मोक्ष दूर नथी. आम तत्त्वज्ञान पामवानो, सत्शील सेववानो, अने परिणामे मोक्ष मेळववानो आखा ग्रंथमां बोधेछे. तत्त्वजिज्ञासा जागृत करे, अने सद्वर्त्तनमां प्रेरे एवो स्थळे स्थळे उपदेशछे. अज्ञान अने मतमतांतर टाळवानो, मध्यस्थतायी तत्त्व उपर आववानो, एवी रुचि उपजाववानो प्रयास स्थळे स्थळे छे; जे मोक्षनां कारणरुप छे. शिक्षापाठमात्र मनन करवा योग्य छे. एटले प्रत्येकनुं पृथग् अवलोकन न करतां ए वांचनारने धीर राखवुं योग्य छे. वांचनारने भलामणना पाठमां दर्शाव्या प्रमाणे विवेकपूर्वक, मननपूर्वक. आ माळा कंठे धरवाथी मोने बहुहित थशे. माटे सर्व सुज्ञ भाइओ, व्हेनोए विवेक पूर्वक. मध्यस्थतायी. ममत्त्व दूर करी, बहुमान अने विनय पूर्वक आ ग्रंथनुं पठन—मनन करवुं, जेथी मोक्षनां कारण रुप थइ पडवानो आ मालानो हेतु सहज सिद्ध थाय तथास्तु!

ॐ

मोक्षमाळा.

पुस्तक बीजुं.

शिक्षापाठ १ वांचनारने भलामण.

वांचनार! आ पुस्तक आजे तमारा हस्तकमळमां आवे छे, तेने लक्ष पूर्वक वांचजो, तेमां कहेला विषयोने विवेकथी विचारजो, अने परमार्थने हृदयमां धारण करजो. एम करशो तो तमे नीति, विवेक, ध्यान, ज्ञान, सद्गुण अने आत्मशांति पामी शकशो.

तमे जाणता हशो के केटलांक अज्ञान मनुष्यो नहीं वांचवा योग्य पुस्तको वांचीने अमूल्य वखत वृथा खोइ देछे, जेथी तेओ अवळे रस्ते चडी जाय छे, आ लोकमां अपकीर्ति पामे छे, अने परलोकमां नीच गतिए जाय छे.

भाषाज्ञानना पुस्तकोनी पेठे आ पुस्तक पठन करवानुं नथी, पण मनन करवानुं छे. तेथी आ भव अने परभव बन्नेमां तमारुं हित थशे. भगवानना कहेलां वचनोनो एमां उपदेश कर्यो छे.

तमे आ पुस्तकनो विनय अने विवेकथी उपयोग करजो. विनय अने विवेक ए धर्मना मूळ हेतुओ छे.

तमने बीजी एक आ पण भलामण छे के जेओने वांचतां

आवडतुं न होय अने तेओनी इच्छा होय तो आ पुस्तक अनुक्रमे तेमने वांची संभळाववुं.

तमने आ पुस्तकमांथी जे कंइ न समजाय ते सुविचक्षण पुरुष पासेथी समजी लेवुं योग्य छे.

तमारा आत्मानुं आथी हित थाय; तमने ज्ञान, शांति अने आनंद मळे; तमे परोपकारी, दयाळु, क्षमावान, विवेकी अने बुद्धिशाळी थाओ; एवी शुभ याचना अर्हत भगवान पासे करी आ पाठ पूर्ण करुं छउं.

—:o:—

शिक्षापाठ २ सर्वमान्यधर्म.

चोपाइ.

धर्मतत्व जे पूछयुं मने,
ते संभळावुं स्नेहे तने;
जे सिद्धांत सकळनो सार,
सर्व मान्य सहुने हितकार. १.
भाख्युं भाषणमां भगवान,
धर्म न बीजो दया समान;
अभयदान साथे संतोष,
द्यो प्राणीने, दळवा दोष. २.
सत्य शीळने सघळां दान,
दया होइने रह्यां प्रमाण;

दया नहीं तो ए नहि एक,
विना सूर्य कीरण नहि देख. ३.
पुष्पपांखडी ज्यां दूभाय,
जिनवरनी त्यां नहि आज्ञाय;
सर्व जीवनुं ईच्छो सूख,
महावीरनी शिक्षा मुख्य. ४.
सर्व दर्शने ए उपदेश;
ए एकांते-नहीं विशेष;
सर्व प्रकारे जिननो बोध,
दया दया निर्मळ अविरोध ! ५
ए भवतारक सुंदर राह,
धरिये तरिये करि उत्साह;
धर्म सकळनुं ए शुभ मूळ,
ए वण धर्म सदा प्रतिकूळ. ६.
तत्त्वरुपथी ए ओळखे,
ते जन प्होचे शाश्वत सुखे;
शांतिनाथ भगवान प्रसिद्ध,
राज्यचंद्र करुणाए सिद्ध. ७

शिक्षापाठ ३ कर्मना चमत्कार.

हुं तमने केटलीक सामान्य विचित्रताओ कही जाउं छउं; ए उपर विचार करशो तो तमने परभवनी श्रद्धा दृढ थशे.

एक जीव सुंदर पलंगे पुष्पशय्यामां शयन करे छे, एकने

फाटल गोदडी पण मळती नथी; एक मात मातनां भोजनोथी तृप्त रहे छे, एकने काळी जारनां पण सांसा पडे छे; एक अगणित लक्ष्मीनो उपभोग ले छे, एक फुटी बदाम माटे थइने घेर घेर भटके छे; एक मधुरां वचनथी मनुष्यनां मन हरे छे, एक अवाचक जेवो थइने रहे छे, एक सुंदर वस्त्रालंकारथी विभूषित थइ फरे छे, एकने खरा शियाळामां फाटेलुं कपडुं पण ओढवाने मळतुं नथी. एक रोगी छे, एक मबळ छे. एक बुद्धिशाळी छे, एक जडभरत छे. एक मनोहर नयनवाळो छे, एक अंध छे. एक लूलो के पांगळो छे, एकना पग ने हाथ रमणीय छे. एक कीर्तिमानछे, एक अपयश भोगवे छे. एक लाखो अनुचरो पर हुकम चलावे छे, अने तेटलानाज टुंबा सहन अेक करे छे. एकने जोइने आनंद उपजे छे, एकने जोतां वमन थाय छे. एक संपूर्ण इंद्रियो वाळो छे, अने एक अपूर्ण इंद्रियोवाळो छे. एकने दीन दुनियानुं लेश भान नथी, एकनां दुःखनो किनारो पण नथी.

एक गर्भाधानमां आवतां ज मरण पामे छे, एक जन्म्यो के तरत मरण पामे छे, एक मुवेलो अवतरे छे अने एक सो वर्षनो वृद्ध थईने मरे छे.

कोइना मुख, भाषा अने स्थिति सरखां नथी. मूर्ख राज्यगादी पर खमा खमाथी वधावाय छे, समर्थ विद्वानो धक्का खाय छे!

आम आवा जगतनी विचित्रता भिन्न भिन्न प्रकारे तमे जुओ छो; ए उपरथी तमने कंइ विचार आवे छे? में कयुं छे

ते उपरथी तमने विचार आवतो होय तो कहो के ते शा वडे थाय छे?

पोतानां वांधेलां शुभाशुभ कर्मवडे. कर्म वडे आखो संसार भमवो पडे छे. परभव नहीं माननार पोते ए विचारो शा-वडे करे छे?–ते उपर यथार्थ विचार करे तो ते पण आ सिद्धांत मान्य राखे.



शिक्षापाठ ४ मानवदेह.

आगळ कह्युं छे ते प्रमाणे विद्वानो मानवदेहने वीजा सघळा देह करतां उत्तम कहे छे; ते उत्तम कहेवानां केटलांक कारणो अत्रे कहीशुं.

आ संसार बहु दुःखथी भरेलो छे. एमांथी ज्ञानीयो तरीने पार पामवा प्रयोजन करे छे. मोक्षने साधी तेओ अनंत सुखमां विराजमान थाय छे. ए मोक्ष वीजा कोइ देहथी मळतो नथी. देव, तिर्यंच के नर्क ए एके गतिथी मोक्ष नथी, मात्र मानवदेहथी मोक्षछे.

त्यारे तमे कहेशो के सघळां मानवियोनो मोक्ष केम थतो नथी? तेनो उत्तर जेओ मानवपणुं समजे छे, तेओ संसार शोकने तरी जायछे. जेनामां विवेकबुद्धि उदय पामी होय, अने ते वडे सत्यासत्यनो निर्णय समजीने परम तत्त्वज्ञान तथा उत्तम चारित्ररूप सद्धर्मनुं सेवन करीने जेओ अनुपम मोक्षने पामे छे, तेनां देहधारीपणाने विद्वानो मानवपणुं कहेछे.मनुष्यना शरीरना देखाव उपरथी विद्वानो तेने मनुष्य कहेता नथी; परंतु तेना विवेकने लइने

कहे छे. बे हाथ, बे पग, बे आंख, बे कान, एक मुख, बे होठ अने एक नाक ए जेने होय तेने मनुष्य कहेवो एम आपणे समजवुं नहीं; जो एम समजीए तो पछी वांदराने पण मनुष्य गणवो जोइए; एणे पण ए प्रमाणे सघळुं प्राप्त कर्युं छे. विशेषमां एक पूंछडुं पण छे; त्यारे शुं एने महा मनुष्य कहेवो? ना, नहीं—मानवपणुं समजे तेज मानव केहेवाय.

ज्ञानीओ कहेछे के ए भव बहु दुर्लभ छे; अति पुण्यना प्रभावथी ए देह सांपडे छे; माटे एथी उतावळे आत्मसार्थक करी लेवुं. अयमंतकुमार, गजसुकुमार जेवां नानां बाळको पण मानवपणाने समजवाथी मोक्षने पाम्यां. मनुष्यमां जे शक्ति वधारे छे, ते शक्तिवडे करीने मदोन्मत्त हाथी जेवां प्राणीने पण वश करी लेछे; एज शक्तिवडे जो तेओ पोतानां मनरूपी हाथीने वश करी ले तो केटलुं कल्याण थाय!

कोइ पण अन्य देहमां पूर्ण सद्‌विवेकनो उदय थतो नथी अने मोक्षना राजमार्गमां प्रवेश थइ शकतो नथी. एथी आपणने मळेलो आ बहु दुर्लभ मानवदेह सफळ करी लेवो अवश्यनो छे. केटलाक मूर्खो दुराचारमां, अज्ञानमां, विषयमां, अने अनेक प्रकारना मदमां आवो मानवदेह वृथा गुमावे छे. अमूल्य कौस्तुभ हारी बेसे छे. ए नामना मानव गणाय, बाकी वानररूप छे.

मोतनी पळ निश्चय जाणी शकाती नथी, माटे बने तेम धर्ममां त्वराथी सावधान थवुं.

— ❖ —

शिक्षापाठ ५ अनाथी मुनि भाग १.

अनेक प्रकारनी रीद्धिवाळो मगधदेशनो श्रेणिक नामे राजा अश्वक्रिडाने माटे मंडिकुक्ष नामनां वनमां नीकळी पड्यो, वननी विचित्रता मनोहारिणी हती. नाना प्रकारनां तरुओ त्यां आवी रह्यां हतां; नाना प्रकारनी कोमळ वेलीओ घटाटोप थइ रही हती; नाना प्रकारनां पंखीओ आनंदथी तेनुं सेवन करतां हतां; नाना प्रकारनां पक्षियोनां मधुरां गायन त्यां संभळातां हतां; नाना प्रकारनां फूलथी ते वन छवाइ रह्युं हतुं; नाना प्रकारनां जळनां झरण त्यां वहेतां हतां; टुंकामां ए वन नंदन-वन जेवुं लागतुं हतुं. ते वनमां एक झाड तळे महा समाधिवंत पण सुकुमार अने सुखोचित मुनिने ते श्रेणिके बेठेलो दीठो. एनुं रुप जोइने ते राजा अत्यंत आनंद पाम्यो. उपमारहित रुपथी विस्मित थइने मनमां तेनी प्रशंसा करवा लाग्यो. आ मुनिनो केवो अद्भुत वर्णछे ! एनुं केवुं मनोहर रुप छे ! एनी केवी अद्भुत सौम्यता छे ! आ केवी विस्मयकारक क्षमानो धरनार छे ! आना अंगथी वैराग्यनो केवो उत्तम प्रकाश छे ! आनी केवी निर्लोभता जणाय छे ! आ संयति केवुं निर्भय नम्रपणुं धरावे छे ! ए भोगथी केवा विरक्त छे ! एम चिंतवतो चिंतवतो-मुदित थतो थतो-स्तुति करतो करतो-धीमेथी चालतो चालतो, प्रदक्षिणा देइने ते मुनिने वंदन करीने अति समीप नहीं तेम अति दूर नहीं, एम ते श्रेणिक बेठो; पछी बे हाथनी अंजलि करीने विनयथी तेणे मुनिने पूछ्युं के:

आर्य ! तमे प्रशंसा करवा योग्य एवा तरुण छो; भोगविलासने माटे तमारी वय अनुकूळ छे; संसारमां नाना प्रकारनां सुख रह्यांछे, ऋतु ऋतुना कामभोग, जळ संबंधीना विलास, तेमज मनोहारिणी स्त्रिओनां मुखवचननुं मधुरुं श्रवण छतां ए सघळानो त्याग करीने मुनित्वमां तमे महा उद्यम करोछो एनुं शुं कारण? ते मने अनुग्रहथी कहो. राजानां आवां वचन सांभळीने मुनिए कह्युं, हे राजा हुं अनाथ हतो. मने अपूर्व वस्तुनो प्राप्त करावनार, तथा योगक्षेमनो करनार, मारापर अनुकंपा आणनार, करुणाथी करीने परम सुखनो देनार एवो मारो कोइ मित्र थयो नहीं. ए कारण मारा अनाथीपणानुं हतुं.

—:o—

शिक्षापाठ ६ अनाथी मुनि भाग २.

श्रेणिक, मुनिनां भाषणथी स्मित हसीने बोल्यो, तमारे महा रीद्धिवंतने नाथ केम न होय? जो कोइ नाथ नथी तो हुं थउं छउं. हे भयत्राण! तमे भोग भोगवो. हे संयति! मित्र, ज्ञातिए करीने दुर्लभ एवो आ तमारो मनुष्यभव सुलभ करो! अनाथीए कह्युं, अरे श्रेणिक राजा! पण तुं पोते अनाथछो तो मारो नाथ शुं थइश? निर्धन ते धनाढ्य क्यांथी बनावे? अबुध ते बुद्धिदान क्यांथी आपे? अज्ञ ते विद्वता क्यांथी दे? वंध्या ते संतान क्यांथी आपे? ज्यारे तु पोते अनाथ छे; त्यारे मारो नाथ क्यांथी थइश? मुनिनां वचनथी राजा अति आकुळ अने अति विस्मित थयो. कोइ काळे जे वचननुं श्रवण थयुं नथी ते वचननुं यति मुखथी श्रवण थयुं एथी ते शंकित

थयो अने थोल्यो हुं अनेक प्रकारना अश्वनो भोगी छउं; अनेकप्रकारना मदोन्मत्त हाथीओनो धणी छउं; अनेक प्रकारनी सैन्या मने आधीन छे; नगर, ग्राम, अंतःपुर अने चतुष्पादनी मारे कंइ न्यूनता नथी; मनुष्य संबंधी सघळा प्रकारना भोग हुं पाम्यो छउं; अनुचरो मारी आज्ञाने रुडी रीते आराधे छे; एम राजाने छाजती सर्व प्रकारनी संपत्ति मारे घेरछे; अनेक मनवांछित वस्तुओ मारी समीपे रहेछे. आवो हुं महान् छतां अनाथ केम होउं ! रखे हे भगवन्, तमे मृषा बोलता हो ! मुनिए कह्युं, राजा ! मारु कहेवुं तुं न्यायपूर्वक समज्यो नथी. हवे हुं जेम अनाथ थयो; अने जेम में संसार त्याग्यो तेम तने कहुं छउं; ते एकाग्र अने सावधान चित्तथी सांभळ; सांभळीने पछी तारी शंकानो सत्यासत्य निर्णय करजे.

कौशांबी नामे अति जीर्ण अने विविध प्रकारनी भव्यताथी भरेली एक सुंदर नगरी छे; त्यां रीद्धिथी परिपूर्ण धनसंचय नामनो मारो पिता रहेतो हतो. हे महाराजा ! योवन वयना प्रथम भागमां मारी आंखो अति वेदनाथी घेराइ; आखे शरीरे अग्नि बळवा मंड्यो. शस्त्रथी पण अतिशय तीक्ष्ण ते रोग वैरीनी पेठे मारापर कोपायमान थयो. मारुं मस्तक ते आंखनी असह्यवेदनाथी दुःखवा लाग्युं. वज्रना प्रहार जेवी, बीजाने पण रौद्रभय उपजावनारी एवी ने दारुण वेदनाथी हुं अत्यंत शोकमां हतो. संख्याबंध वैद्यकशास्त्रनिपुण वैद्यराजा मारी ते वेदनानो नाश करवाने माटे आव्या अने तेमणे अनेक औषध उपचार कर्या पण ते वृथा गया. ए महा निपुण गणाता वैद्यराजो

मने ते दरदथी मुक्त करी शक्या नहीं; एज हे राजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी आंखनी वेदना टाळवाने माटे मारा पिताए सर्व धन आपवा मांड्युं; पण तेथी करीने मारी ते वेदना टळी नहीं, हे राजा! एज मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी माता पुत्रने शोके करीने अति दुःखार्त्त था; परंतु ते पण मने दरदथी मूकावी शकी नहीं, एज हे राजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. एक पेटथी जन्मेला मारा ज्येष्ठ अने कनिष्ट भाइओ पोताथी बनतो परिश्रम करी चूक्या पण मारी ते वेदना टळी नहीं, हे राजा! एज मारुं अनाथ पणुं हतुं. एक पेटथी जन्मेली मारी ज्येष्ठा अने कनिष्ठा भगनीओथी मारुं ते दुःख टळ्युं नहीं, हे महाराजा! एज मारुं अनाथपणुं हतुं, मारी स्त्री जे पतिव्रता, मारापर अनुरक्त अने प्रेमवंती हती, ते आंसु भरी मारुं हैयुं पलाळती हती तेणे अन्न पाणी आप्या छतां अने नानाप्रकारनां अंघोलण, चुवादिक सुगंधि पदार्थ, तेमज अनेक प्रकारनां फुल चंदनादिकनां जाणिता अजाणिता विलेपन कर्या छतां, हुं ते विलेपनथी मारो रोग शमावी न शक्यो. क्षण पण अळगी रहेती नहोती, एवी ते स्त्री पण मारा रोगने टाळी न शकी, एज हे महाराजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. एम कोइना प्रेमथी, कोइनां औषधथी, कोइना विलापथी के कोइना परिश्रमथी ए रोग उपशम्यो नहीं. ए वेळा पुनः पुनः में असह्य वेदना भोगवी; पछी हुं प्रपंची संसारथी खेद पाम्यो. एकवार जो आ महा विडंबनामय वेदनाथी मुक्त थउं तो खंती, दंती अने निरारंभी प्रवर्ज्याने धारण

करुं, एम चिंतवीने शयन करी गयो. ज्यारे रात्रि अतिक्रमी गइ त्यारे हे महाराजा! मारी ते वेदना क्षय थइ गइ; अने हुं निरोगी थयो. मात, तात स्वजन बंधवादिकने पूछीने प्रभाते में महा क्षमावंत, इंद्रियने निग्रह करवावाळुं, अने आरंभोपाधिथी रहित एवुं अणगारत्व धारण कर्युं.



शिक्षापाठ ७ अनाथी मुनि भाग ३.

हे श्रेणिक राजा! त्यार पछी हुं आत्मा परआत्मानो नाथ थयो. हवे हुं सर्व प्रकारना जीवनो नाथ छउं. तुं जे शंका पाम्यो हतो ते हवे टळी गइ हशे. एम आखुं जगत्–चक्रवर्त्ति पर्यंत अशरण अने अनाथ छे. ज्यां उपाधि छे त्यां अनाथता छे; माटे हुं कहुंछउं ते कथन तुं मनन करी जजे. निश्चय मानजे के आपणो आत्माज दुःखनी भरेली वैतरणीनो करनार छे; आपणो आत्माज क्रूर सालमलि वृक्षनां दुःखनो उपजावनार छे; आपणो आत्माज वंछित वस्तुरुपी दुधनी देवावाळी कामधेनु सुखनो उपजावनार छे; आपणो आत्माज नंदनवननी पेठे आनंदकारी छे; आपणो आत्माज कर्मनो करनार छे; आपणो आत्माज ते कर्मनो टाळनार छे; आपणो आत्माज दुःखोपार्जन करनार छे, अने आपणोआत्माज सुखोपार्जन करनारछे; आपणो आत्माज मित्र ने आपणो आत्माज वैरी छे; आपणो आत्मा कनिष्ट आचारे स्थित अने आपणो आत्माज निर्मळ आचारे स्थित रहे छे. एम आत्मप्रकाशकबोध श्रेणिकने ते अनाथी मुनिए आप्यो. श्रेणिकराजा बहु संतोष पाम्यो. बे हाथनी अंजलि करीने ते एम बोल्यो

अनंत संसार जेनो गयो छे तेने, निर्ग्रंथना आगममां सद्देव कह्या छे. ए दोषरहित शुद्ध आत्मस्वरूपने पामेला होवाथी पूजनीय परमेश्वर कहेवा योग्य छे. उपर कह्या ते अढार दोषमांनो एक पण दोष होय त्यां सद्देवनुं स्वरूप घटतुं नथी. आ परम तत्व महत्पुरुषोथी विशेष जाणवुं अवश्यनुं छे.

शिक्षापाठ ९ सद्धर्मतत्व.

अनादि काळथी कर्मजाळना बंधनथी आ आत्मा संसारमां रझळ्या करे छे. समय मात्र पण तेने खरुं सुख नथी. अधोगतिने ए सेव्या करे छे; अने अधोगतिमां पडता आत्माने धरी राखनार-सद्गति आपनार वस्तु तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे, अने एज सत्य सुखनो उपाय छे. ते धर्मतत्वना सर्वज्ञ भगवाने भिन्न भिन्न भेद कह्याछे. तेमांना मुख्य बे छे १ व्यवहारधर्म २ निश्चयधर्म.

व्यवहारधर्ममां दया मुख्य छे. सत्यादि बाकीनां चार महाव्रतो तेपण दयानी रक्षा वास्ते छे. दयाना आठ भेदछे. १ द्रव्यदया २ भाव दया ३ स्वदया ४ परदया ५ स्वरूपदया ६ अनुबंधदया ७ व्यवहारदया, ८ निश्चयदया.

प्रथम द्रव्यदया—कोइ पण काम करवुं ते यत्नापूर्वक जीवरक्षा करीने करवु ते द्रव्यदया.

बीजी भावदया—बीजा जीवने दुर्गति जतो देखीने अनुकंपाबुद्धिथी उपदेश आपवो ते भावदया.

त्रीजी स्वदया—आ आत्मा अनादि काळथी मिथ्यात्व-

थी गृहायोछे, तत्त्व पामतो नथी, जिनाज्ञा पाळी शकतो नथी. एम चिंतवी धर्ममां प्रवेश करवो ते स्वदया.

चोथी परदया—छकाय जीवनी रक्षा करवी ते परदया.

पांचमी स्वरूपदया—सूक्ष्म विवेकथी स्वरुप-विचारणा ते स्वरुप दया.

छट्ठी अनुबंधदया—सद्गुरु के सुशिक्षक शिष्यने कडवां कथनथी उपदेश आपे ए देखवामां तो अयोग्य लागेछे; परंतु परिणाम करुणानुं कारणछे-एनुं नाम अनुबंधदया.

सातमी व्यवहारदया—उपयोगपूर्वक तथा विधिपूर्वक जे दया पाळवी तेनुं नाम व्यवहारदया.

आठमी निश्चयदया—शुद्ध साध्य उपयोगमां एकता भाव, अने अभेद उपयोग ते निश्चयदया.

ए आठ प्रकारनी दयावडे करीने व्यवहारधर्म भगवाने कह्यो छे. एमां सर्व जीवनुं सुख, संतोष अभयदान ए सघळुं विचारपूर्वक जोतां आवी जायछे.

बीजो निश्चयधर्म—पोतानां स्वरुपनी भ्रमणा टाळवी, आत्माने आत्मभावे ओळखवो, आ संसार ते मारो नथी, हुं एथी भिन्न परमअसंग सिद्धसदृश्य शुद्ध आत्मा छुं, एवी आत्मस्वभाववर्त्तना ते निश्चयधर्म छे.

जेमां कोइ प्राणीनुं दुःख, अहित के असंतोष रह्योछे त्यां दया नथी; अने दया नथी त्यां धर्म नथी. अर्हत भगवाननां कहेला धर्मतत्त्वथी सर्व प्राणी अभय थायछे.



शिक्षापाठ १० सद्गुरुतत्व भाग १.

पिता—पुत्र, तुं जे शाळामां अभ्यास करवा जायछे ते शाळानो शिक्षक कोणछे?

पुत्र—पिताजी, एक विद्वान अने समजु ब्राह्मणछे.

पिता—तेनी वाणी, चालचलगत वगेरे केवांछे?

पुत्र—एना वचन बहु मधुरां छे. ए कोईने अविवेकथी बोलावता नथी अने बहु गंभीर छे, बोलेछे त्यारे जाणे मुखमांथी फूल झरेछे. कोईनुं अपमान करता नथी; अने अमने योग्य नीति समजाय तेवी शिक्षा आपे छे.

पिता—तुं त्यां शा कारणे जाय छे ते मने कहे जोईए.

पुत्र—आप एम केम कहोछो पिताजी? संसारमां विचक्षण थवाने माटे पद्धतिओ समजुं, व्यवहारनी नीति शीखुं एटला माटे थईने आप मने त्यां मोकलोछो.

पिता—तारा ए शिक्षक दुराचरणी के एवा होतता?

पुत्र—तो तो बहु माठुं थात; अमने अविवेक अने कुवचन बोलतां आवडत; व्यवहार नीति तो पछी शीखवे पण कोण?

पिता—जो पुत्र, ए उपरथी हुं हवे तने एक उत्तम शिक्षा कहुं. जेम संसारमां पडवा माटे व्यवहारनीति शीखवानुं प्रयोजन छे तेम धर्मतत्व अने धर्मनीतिमां प्रवेश करवानुं परभवने माटे प्रयोजन छे. जेम ते व्यवहारनीति सदाचारी शिक्षकथी उत्तम मळी शके छे; तेम परभव श्रेयस्कर धर्मनीति उत्तम गुरुथी मळी शके छे. व्यवहारनीतिना शिक्षक अने धर्मनीतिना

शिक्षकमां बहु भेद छे. एक बीलोरीना कटका जेम व्यवहार शिक्षक अने अमूल्य कौस्तुभ जेम आत्मधर्मशिक्षक छे.

पुत्र—शीरछत्र! आपनुं कहेवुं व्याजबी छे. धर्मना शिक्षकनी संपूर्ण अवश्य छे. आपे वारंवार संसारनां अनंत दुःख संबंधी मने कह्यु छे; एथी पार पामवा धर्मज सहायभूत छे; त्यारे धर्म केवा गुरुथी पामिये तो श्रेयस्कर नीवडे ते मने कृपा करीने कहो.

शिक्षापाठ ११ सद्गुरुतत्व भाग २.

पिता—पुत्र! गुरु त्रण प्रकारना कहेवाय छे. १ काष्ठस्वरुप. २ कागळस्वरुप. ३. पथ्थरस्वरुप. काष्ठस्वरुप गुरु सर्वोत्तम छे; कारण संसाररुपी समुद्रने काष्ठस्वरुपी गुरुज तरेछे—अने तारी शकेछे. २ कागळस्वरुप गुरु ए मध्यम छे. ते संसारसमुद्रने पोते तरी शके नहीं; परंतु कंइ पुन्य उपार्जन करी शके. ए बीजाने तारी शके नहीं. ३ पथ्थरस्वरुप ते पोते बुडे अने परने पण बुडाडे. काष्ठस्वरुप गुरु मात्र जिनेश्वर भगवंतना शासनमां छे. बाकी बे प्रकारना जे गुरु रह्या ते कर्मावरणने वृद्धि करनार छे. आपणे बधा उत्तम वस्तुने चाहिए छीए; अने उत्तमथी उत्तम मळी शके छे. गुरु जो उत्तम होय तो ते भवसमुद्रमां नाविकरुप थइ सद्धर्मनावमां बेसारी पार पमाडे. तत्वज्ञानना भेद, स्वस्वरुपभेद, लोकालोकविचार, संसारस्वरुप ए सघळुं उत्तम गुरु विना मळी शके नहीं; त्यारे तने प्रश्न करवानी इच्छा थशे के एवा गुरुना लक्षण कयां कयां? ते कहुं. जिनेश्वर भ-

गवाननी भाखेली आज्ञा तेने यथातथ्य पाळे, जाणे, अने बीजाने बोधे, कंचन कामिनीथी सर्व भावथी त्यागी होय, विशुद्ध अहारजळ लेता होय, बाविश प्रकारना परिसह सहन करता होय, क्षांत, दांत, निरारंभि अने जितेंद्रिय होय, सिद्धांतिक ज्ञानमां निमग्न होय धर्म माटे थइने मात्र शरीरनो निर्वाह करता होय, निर्ग्रंथ–पंथ पाळतां कायर न होय, सळी मात्र पण अदत्त लेता न होय, सर्व प्रकारना अहार रात्रिये त्यागया होय, समभावि होय, अने निरागताथी सत्योपदेशक होय. टुंकामां तेओने काष्ट स्वरुप सद्गुरु जाणवा. पुत्र! गुरुना आचार, ज्ञान ए सम्बंधी आगममां बहु विवेक पूर्वक वर्णन कर्युं छे. जेम तु आगळ विचार करतां शीखतो जइश, तेम पछी हुं तने ए विशेष तत्त्वो बोधतो जइश.

पुत्र–पिताजी, आपे मने टुंकामां पण बहु उपयोगी अने कल्याणमय कह्युं; हुं निरंतर ते मनन करतो रहीश.

—:o:—

शिक्षापाठ १२ उत्तम गृहस्थ.

संसारमां रह्या छतां पण उत्तम श्रावको गृहाश्रमथी आत्मसाधनने साधेछ; तेओनो गृहाश्रम पण वखणायछे.

ते उत्तम पुरुष, सामायिक, क्षमापना चोविहार प्रत्याख्यान इ॰ यम नियमने सेवे छे.

पर पत्नि भणी मात् बहेननी दृष्टि राखे छे.

सत्पात्रे यथाशक्ति दान दे छे.

शांत, मधुरी अने कोमळ भाषा बोले छे.

सत्शास्त्रनुं मनन करे छे.

बने त्यां सुधी उपजीविकामा पण माया, कपट, इ० करतो नथी.

स्त्री, पुत्र, मात, तात, मुनि अने गुरुए सघळांने यथायोग्य सन्मान आपे छे.

मावापने धर्मनो बोध आपे छे.

यत्नाथी घरनी स्वच्छता, रांधवुं, सींधवुं शयन इ० रखावे छे.

पोते विचक्षणताथी वर्ती स्त्री, पुत्रने विनयि अने धर्मि करे छे.

सघळां कुटुंबमां संपनी वृद्धि करे छे.

आवेला अतिथिनुं यथायोग्य सन्मान करे छे.

याचकने क्षुधातुर राखतो नथी.

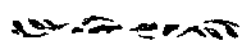
सत्पुरुषोनो समागम अने तेओनो बोध धारण करे छे.

समर्याद अने संतोष युक्त निरंतर वर्त्ते छे.

यथाशक्ति शास्त्रसंचय जेनां घरमां रह्यो छे.

अल्प आरंभथी जे व्यवहार चलावे छे.

आवो गृहस्थावास उत्तम गतिनु कारण थाय, एम ज्ञानीओ कहे छे.



शिक्षापाठ १२ जिनेश्वरनी भक्ति भाग १.

जिज्ञासु—विचक्षण सत्य ! कोइ शंकरनी, कोइ ब्रह्मानी

कोई विष्णुनी, कोई ब्रह्मानी, कोई भवानीनी, कोई पेगम्बरनी अने कोई क्राइस्टनी भक्ति करेछे. एओ भक्ति करीने शुं आशा राखता हशे ?

सत्य—प्रिय जिज्ञासु, ते भाविक मोक्ष मेळववानी परम आकांक्षाथी ए देवोने भजेछे.

जिज्ञासु—कहो त्यारे, एथी तेओ उत्तम गति पामे एम तमारुं मत छे ?

सत्य—एओनी भक्तिवडे तेओ मोक्ष पामे एम हुं कही शकतो नथी. जेओने ते परमेश्वर कहेछे तेओ कंई मोक्षने पाम्या नथी; तो पछी उपासकने ए मोक्ष क्यांथी आपे ? शंकर वगेरे कर्मक्षय करी शक्या नथी अने दूषणसहीत छे. एथी ते पूजवा योग्य नथी.

जिज्ञासु—ए दूषणो कयां कयां ते कहो ?

सत्य—अज्ञान, निद्रा, मिथ्यात्व, राग, द्वेष, अविरति, भय, शोक, जुगुप्सा दानांतराय, लाभांतराय, वीर्यांतराय अने उपभोगांतराय, काम, हास्य, रति, अने अरति ए अढार दूषणमानुं एक दूषण होय तोपण ते अपूज्य छे. एक समर्थ पंडिते पण कह्युं छे के परमेश्वर छउं एम मिथ्या रीते मनावनारा पुरुषो पोते पोताने ठगे छे; कारण पडखामां स्त्री होवाथी तेओ विषयी ठरेछे; शस्त्र धारण करेलां होवाथी द्वेषी ठरेछे. जपमाळा धारण करवाथी तेनुं चित्त व्यग्र छे एम सूचवे छे. मारे शरण आव हुं सर्व पाप हरी लइश एम कहेनारा अभिमानी अने नास्तिक ठरे छे. आम छे तो पछी बीजाने तेओ

केम तारी शके ? वळी केटलाक अवतार लेवारूपे परमेश्वर कहेवरावे छे तो त्यां तेओने अमुक कर्मनुं भोगववुं बाकी छे एम सिद्ध थाय छे.

जिज्ञासु—भाई, त्यारे पूज्य कोण ? अने भक्ति कोनी करवी के जेथी आत्मा स्वशक्तिनो प्रकाश करे.

सत्य—शुद्ध सच्चिदानंदस्वरूप जीवन सिद्ध भगवाननी भक्तिथी तेमज सर्व दूषणरहित, कर्मकलंकहीन, शुद्ध वीतराग सकळभय रहित, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी आत्मशक्ति प्रकाश पामे छे.

जिज्ञासु—एओनी भक्ति करवाथी आपणने तेओ मोक्ष आपे छे एम मानवुं खरुं ?

सत्य—भाई जिज्ञासु, ते अनंतज्ञानी भगवान तो निरागी अने निर्विकार छे. एने स्तुति निंदानुं आपणने कंई फळ आपवानुं प्रयोजन नथी. आपणो आत्मा अज्ञानी अने मोहांध थाने जे कर्मरूपी मेलवाळो छे ते कर्मदळ टाळवा अनुपम पुरुषार्थनी अवश्य छे. सर्व कर्मदळ क्षय करी अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य, अने स्वस्वरूपमय थया एवा जिनेश्वरोनुं स्वरूप—आत्मानी निश्चयनये रिद्धि होवाथी ते भगवाननुं स्मरण, चिंतवन, ध्यान अने भक्ति पुरुषार्थता आपे छे. विकारथी आत्मा विरक्त करे छे शांति अने निर्जरा आपे छे. तेम तरवार हाथमां लेवाथी शौर्य अने भांग पीवाथी नशो उत्पन्न थाय छे तेम गुण चिंतवनथी आत्मा स्वस्वरूपानंदनी श्रेणिए चढतो जाय छे. दर्पण हाथमां लेतां जेम मुखाकृति

भान थाय छे तेम सिद्ध के जिनेश्वरस्वरूपना चिंतवनरूप दर्पणथी आत्मस्वरूपनुं भान थाय छे.

शिक्षापाठ १४ जिनेश्वरनी भक्तिभाग २.

जिज्ञासु—आर्य सत्य! सिद्धस्वरूप पामेला ते जिनेश्वरो तो सघळा पूज्य छे; त्यारे नामथी भक्ति करवानी कंइ जरूर छे?

सत्य—हा, अवश्य छे. अनंत सिद्धस्वरूपने ध्याता जे शुद्ध स्वरूपनो विचार थाय ते तो कार्य परंतु ए जे जेथी ते स्वरूपने पाम्या ते कारण कयुं? ए विचारतां उग्रतप, महानवैराग्य, अनंतदया, महानध्यान ए सघळांनुं स्मरण थशे; एओना अर्हंत तीर्थंकर पदमां जे नामथी तेओ विहार करता हता ते नामथी तेओना पवित्र आचार अने पवित्र चारित्रो अंतःकरणमां उदय पामशे. जे उदय परिणामे महा लाभदायक छे. जेम महावीरनुं पवित्र नाम स्मरण करवाथी तेओ कोण? क्यारे? केवा प्रकारे सिद्धि पाम्या? ए आदि चरित्रोनी स्मृति थशे. अने एथी आपणे वैराग्य, विवेक इत्यादिकनो उदय पामीए.

जिज्ञासु—पण लोगस्समां तो चोवीश जिनेश्वरनां नाम सूचवन कर्यां छे? एनो हेतु शुं छे ते मने समजावो.

सत्य—आ काळमां आ क्षेत्रमां जे चोवीश जिनेश्वरो थया एओनां नामनुं अने चरित्रोनुं स्मरण करवाथी शुद्ध तत्त्वनो लाभ थाय. वैरागीनुं चारित्र वैराग्य बोधे छे. अनंत चोवीशीनां अनंत नाम सिद्ध स्वरूपमां समग्र आवी जाय छे. वर्तमानकाळ-

ना चोवीश तीर्थंकरनां नाम आ काळे लेवाथी काळनी स्थितिनुं बहु सूक्ष्मज्ञान पण सांभरी आवेछे. जेम एओनां नाम आ काळमां लेवायछे. तेम चोवीशी चोवीशीनां नाम काळ अने चोवीशी फरतां लेवातां जायछे. एटले अमुक नाम लेवां एम कंइ हेतु नथी. परंतु तेओना गुण अने पुरुषार्थ स्मृति माटे वर्त्तती चोवीशीनी स्मृति करवी एम तत्व रह्युं छे. तेओना जन्म, विहार उपदेश ए सघळुं नाम निक्षेपे जाणी शकायछे. ए वडे आपणो आत्मा प्रकाश पामेछे. सर्प जेम मोरलीना नादथी जागृत थायछे; तेम आत्मा पोतानी सत्य रीद्धि सांभळतां ते मोहनिद्राथी जागृत थाय छे.

जिज्ञासु—मने तमे जिनेश्वरनी भक्ति संबंधी बहु उत्तम कारण कह्युं. आधुनिक केळवणीथी जिनेश्वरनी भक्ति कंइ फळदायक नथी एम मने आस्था थइ हती. ते नाश पामी छे. जिनेश्वर भगवाननी अवस्य भक्ति करवी जोइए ए हुं मान्य राखुं छउं.

सत्य—जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी अनुपम लाभ छे, एना कारणो महान छे; तेमना परम उपकारनेलीधे पण तेओनी भक्ति अवश्य करवी जोईए. वळी तेओना पुरुपार्थनुं स्मरण थतां पण शुभ वृत्तियोनो उदय थायछे. जेम जेम श्री जिननां स्वरूपमां वृत्ति लय पामेछे तेम तेम परम शांति प्रवहेछे. एम जिनभक्तिनां कारणो अत्रे संक्षेपमां कह्याछे ते आत्मार्थियोए विशेपपणे मनन करवां योग्य छे.

— —

शिक्षापाठ १५ भक्तिनो उपदेश.

तोटकछंद.

शुभ शीतळतामय छांय रही,
मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिन भक्ति ग्रहो तरु-कल्प अहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. १
निज आत्मस्वरुप मुदा प्रगटे,
मन ताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वण दाम ग्रहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. २
समभावि सदा परिणाम थशे,
जडमंद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. ३
शुभ भाववडे मन शुद्ध करो,
नवकार महा पदने समरो;
नहि एह समान सुमंत्र कहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. ४
करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्त्वस्वरुप यथा;
नृपचंद्र प्रपंच अनंत दहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. ५

शिक्षापाठ १९ खरी महत्ता.

केटलाक लक्ष्मीथी करीने महत्ता मळे छे एम मानेछे; केटलाक महान कुटुंबथी महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक पुत्र वडे करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक अधिकारथी महत्ता मळे छे एम माने छे. पण ए एमनुं मानवुं विवेकथी जोतां मिथ्या छे. एओ जेमां महत्ता ठरावे छे तेमां महत्ता नथी, पण लघुता छे; लक्ष्मीथी संसारमां खानपान मान, अनुचरोपर आज्ञा वैभव ए सघळुं मळे छे अने ए महत्ता छे, एम तमे मानता हशो, पण एटलेथी एने महत्ता मानवी जोइती नथी. लक्ष्मी अनेक पाप वडे करीने पेदा थाय छे. आव्या पछी अभिमान, बेभानता, अने मूढता आपे छे. कुटुंबसमुदायनी महत्ता मेळववा माटे तेनुं पालण पोषण करवुं पडे छे. ते वडे पाप अने दुःख सहन करवां पडे छे. आपणे उपाधिथी पाप करी एनुं उदर भरवुं पडे छे. पुत्रथी कंइ शाश्वत नाम रहेनुं नथी; एने माटे पण अनेक प्रकारनां पाप अने उपाधि वेठवी पडे छे; छतां एथी आपणुं मंगळ शुं थाय छे? अधिकारथी परतंत्रता के अमलमद आवे छे अने एथी जुल्म, अनीति, लांच तेमज अन्याय करवा पडे छे;—के थाय छे. कहो त्यारे एमांथी महत्ता शानी थाय छे? मात्र पापजन्य कर्मनी पापी कर्मवडे करी आत्मानी नीच गति थाय छे; नीच गति छे त्यां महत्ता नथी पण लघुता छे

आत्मानी महत्ता तो सत्यवचन दया, क्षमा, परोपकार अने समतामां रही छे लक्ष्मी इ० ए तो कर्ममहत्ता छे. एम

छतां लक्ष्मीथी शाणा पुरुषो दान देछे, उत्तम विद्याशाळाओ स्थापी परदुःखभंजन थाय छे. एक परणेली स्त्रीमांज मात्र वृत्ति रोकी परस्त्री तरफ पुत्रिभावथी जुएछे. कुटुंबवडे करीने अमुक समुदायनुं हित काम करेछे. पुत्रवडे तेने संसारभार आपी पोते धर्ममार्गमां प्रवेश करे छे. अधिकारथी डहापण वडे आचरण करी राजा प्रजा बन्नेनुं हित करी—धर्मनीतिनो प्रकाश करेछे, एम करवाथी केटलीक महत्ता प्राप्त खरी छतां ए महत्ता चोकस नथी. मरणभय माथे रह्यो छे. धारणा धरी रहेछे. योजेली योजना के विवेक वखते हृदयमांथी जतो रहे एवी संसारमोहिनीय छे. एथी आपणे एम निस्संशय समजवुं के सत्यवचन, दया, क्षमा, ब्रह्मचर्य अने समता जेवी आत्ममहत्ता कोइ स्थळे नथी. शुद्ध पंचमहाव्रतधारी भिक्षुके जे रीद्धि अने महत्ता मेळवी छे ते ब्रह्मदत्त जेवा चक्रवर्तिए लक्ष्मी, कुटुंब, पुत्र के अधिकारथी मेळवी नथी एम मारुं मानवुं छे!

शिक्षापाठ १७ बाहुबळ.

बाहुबळ एटले पोतानी भुजानुं बळ एम अहीं अर्थ करवानो नथी, कारण के बाहुबळ नामना महापुरुषनुं आ एक नानुं पण अद्भुत चरित्र छे.

सर्व संग परित्याग करी, ऋषभदेवजी भगवान भरत अने बाहुबळ नामना पोताना बे पुत्रने राज्य सोंपी विहार करता हता. त्यारे भरतेश्वर चक्रवर्ति थयो. आयुधशाळामां चक्रनी उत्पत्ति थया पछी प्रत्येक राज्यपर तेणे पोतानी आम्नाय बेसारी, अने छखंडनी प्रभुता मेळवी. मात्र बाहुब-

लेज ए प्रभुता अंगीकार न करी. एथी परिणाममां भरते-श्वर अने बाहुबळने युद्ध मंडायुं. घणा वखत सुधी भरतेश्वर के बाहुबळ ए बन्नेमांथी एके हार्या नहीं, त्यारे क्रोधावेशमां आवी जइ भरतेश्वरे बाहुबळपर चक्र मूक्युं. पण एक वीर्यथी उत्पन्न थयेला भाइपर पण ते चक्र प्रभाव न करी शके, ए नियमथी फरीने पाछुं भरतेश्वरना हाथमां आव्युं. भरते चक्र मूकवाथी बाहुबळने बहु क्रोध आव्यो. तेणे महा बळवत्तर मुष्टि उपाडी. तत्काळ त्यां तेनी भावनानुं स्वरूप फर्युं. ते विचारी गयो के हुं आ बहु निंदनिय करुं छउं; आनुं परिणाम केवुं दुःखदायक छे! भले भरतेश्वर राज्य भोगवो. मिथ्या परस्परनो नाश शा माटे करवो ? आ मुष्टि मारवी योग्य नथी; तेम उगामी ते हवे पाछी वाळवी पण योग्य नथी. एम विचारी तेणे पंच मुष्टि केश लुंचन कर्युं; अने त्यांथी मुनिभावे चाली नीकळ्या. भगवान आदीश्वर ज्यां अठाणु दिक्षित पुत्रोथी तेमज आर्य--आर्याथी विहार करता हता त्यां जवा इच्छा करी; पण मनमां मान आव्युं के त्यां हुं जइश तो माराथी नाना अठाणु भाइने वंदन करवुं पडशे. माटे त्यां तो जवुं योग्य नथी. एम मानवृत्तिथी वनमां ते एकाग्र ध्याने रह्या. हळवे हळवे बार मास थइ गया. महातपथी काया हाडकानो माळो थइ गइ; ते सूका झाड जेवा देखावा लाग्या; परंतु ज्यांसुधी माननो अंकुर तेना अंतःकरणथी खस्यो नहोतो त्यांसुधी ते [illegible] अने सुंदरीए आवीने तेने उपदेश कर्यो; आर्य वीर, हवे मदोन्मत्त हाथी परथी उतरो, एनाथी तो बहु शोस्युं. एओनां आ वचनो

थी बाहुबळ विचारमां पड्या. विचारतां विचारतां तेने भान थयुं के सत्यछे—हुं मानरुपी मदोन्मत्त हाथीपरथी हजु क्यां उतर्यो छउं ! हवे एथी उतरवुं एज मंगळकारकछे; एम विचारी तेणे वंदन करवाने माटे पगलु भर्युं के ते अनुपम दिव्य कैवल्य कमळाने पाम्या.

वांचनार, जुओ मान ए केवी दुरित वस्तु छे !!

शिक्षापाठ १८ चारगति.

संसारवनमां शुभाशुभ जीव सातावेदनीय, असातावेदनीय वेदतो कर्मनां फळ भोगववा आ चारगतिमां भम्या करे छे; तो ए चारगति खचीत जाणवी जोइए.

१ नर्कगति—महारंभ, मदीरापान, मांस भक्षण, इत्यादिक तीव्र हिंसाना करनार जीवो अघोर नर्कमां पडे छे. त्यां लेश पण शाता, विश्राम के सुख नथी. महा अंधकार व्याप्त छे. अंगछेदन सहन करवुं पडेछे. अग्निमां बळवुं पडेछे अने छरपलानी धार जेवुं जळ पीवुं पडेछे. अनंत दुःखथी करीने ज्यां प्राणीभूते सांकड, अशाता अने विलविलाट सहन करवा पडे छे. आवा जे दुःखने केवळज्ञानीओ पण कही शकता नथी. अहोहो !! ते दुःख अनंतिवार आ आत्माए भोगव्यांछे.

२ तिर्यचगति—छल, जुठ प्रपच इत्यादिक करीने जीव सिंह, वाघ, हाथी, मृग, गाय, भेंस, बळद इत्यादिक तिर्यचना शरीर धारण करेछे. ते तिर्यचगतिमा भूख, तरस, ताप, वध बंधन, ताडन, भारवहन इत्यादिना दुःखने सहन करे छे,

३ मनुष्यगति—खाद्य, अखाद्य, विषे विवेकरहितछे; लज्जाहीन, माता पुत्री साथे काम गमन करवामां जेने पापापापनुं भान नथी; निरंतर मांसभक्षण, चोरी, परस्त्रीगमन वगेरे महा पातक कर्या करेछे. एतो जाणे अनार्यदेशनां अनार्य मनुष्य छे. आर्यदेशमां पण क्षत्रि, ब्राह्मण, वैश्य प्रमुख मतिहीन, दारिद्रि, अज्ञान अने रोगथी पीडित मनुष्योछे. मान, अपमान इत्यादि अनेक प्रकारनां दुःख तेओ भोगवी रह्यां छे.

४ देवगति—परस्पर वेर, झेर, क्लेश, शोक, मत्सर, काम, मद, क्षुधा आदिथी देवताओ पण आयुष्य व्यतित करी रह्याछे; ए देवगति. एम चारगति सामान्यरूपे कही. आ चारे गतिमां मनुष्यगति सौथी श्रेष्ट अने दुर्लभ छे, आत्मानुं परमहित मोक्ष ए हेतुथी पमाय छे; ए मनुष्यगतिमां पण केटलाक दुःख अने आत्मसाधनमां अंतरायो छे.

एक तरुण सुकुमारने रोमे रोमे लालचोळ सुया घोंचवाथी जे असह्य वेदना उपजेछेः ते करतां आठगुणी वेदना गर्भस्थानमां जीव ज्यारे रहेछे त्यारे पामेछे. लगभग नवमहीना मळ, मूत्र, लोही, परु आदिमां अहोरात्र मुर्छागत स्थितिमां वेदना भोगवी भोगवीने जन्म पामे छे. गर्भस्थाननी वेदनाथी अनंत गणी वेदना जन्मसमये उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी बाळावस्था पमाय छे. मळमूत्र धूळ अने नग्नावस्थामां अणसमजथी रडी रखडीने ते बाळावस्था पूर्ण थयेः अने युवावस्था आवेछे. धन उपार्जन करवा माटे नाना प्रकारना पापमां पडवुं पडेछे. ज्यांथी उत्पन्न थयोछे त्यां एटले विषय विकारमां वृत्ति जायछे.

उन्माद, आळस, अभिमान, निंद्यदृष्टि संयोग वियोग एम घटमाळमां युवावय चाली जायछे त्यां वृद्धावस्था आवे छे. शरीर कंपेछे, मुखे लाळ झरे छे. त्वचापर करोचली पडी जायछे. सुंघवुं सांभळवुं अने देखवुं ए शक्तियो केवळ मंद थइ जायछे. केश धवळ थइ खरवा मंडेछे; चालवानी आय रहेती नथी. हाथमां लाकडी लइ लडथडीयां खातां चालवुं पडे छे. कांतो जीवन पर्यंत खाटले पडयां रहेवुं पडे छे. श्वास, खांसी इत्यादिक रोग आवीने वळगे छे. अने थोडा काळमां काळ आवीने कोळीओ करी जाय छे. आ देहमांथी जीव चाली नीकळेछे. काया हती नहती थइ जायछे. मरण समये पण केटली बधी वेदनाछे! चतुर्गतिनां दुःखमां जे मनुष्यदेह श्रेष्ट तेमां पण केटलां बधां दुःख रह्यां छे! तेम छतां उपर जणाव्या प्रमाणे अनुक्रमे काळ आवेछे एम पण नथी गमे ते वखते ते आवीने लइ जायछे. माटेज विचक्षण पुरुषो प्रमाद विना आत्मकल्याणने आराधे छे.

—:०:—

शिक्षापाठ १९ संसारने चार उपमाभाग १.

संसारने महा तत्वज्ञानीओ एक समुद्रनी उपमा पण आपे छे. संसाररुपी समुद्र अनंत अने अपारछे. अहो लोको! एनो पार पामवा पुरुषार्थनो उपयोग करो! उपयोग करो!! आम एमनां स्थळे स्थळे वचनोछे. संसारने समुद्रनी उपमा छाजती पण छे. समुद्रमां जेम मोजांनी छोळो उछळ्या करेछे तेम संसारमां विषयरुपी अनेक मोजांओ उछळेछे. जळनो उपरथी जेम

सपाट देखाव छे तेम संसारपण सरळ देखाव देछे. समुद्र जेम क्यांक बहु उंडो छे, अने क्यांक भमरीओ खवरावेछे तेम संसार काम विषय प्रपंचादिकमां बहु उंडोछे. ते मोहरुपी भमरीओ खवरावे छे. थोडुं जळ छतां समुद्रमां जेम उभा रहेवाथी कादवमां गुची जइए छीए तेम संसारना लेश प्रसंगमां ते तृष्णारुपी कादवमां घुंचवी देछे. समुद्र जेम नाना प्रकारना खरावा अने तोफानथी नाव के वहाणने जोखम पहोंचाडे छे. तेम स्त्रीयोरुपी खरावा अने कामरुपी तोफानथी संसार आत्माने जोखम पहोंचाडे छे. समुद्र जेम अगाध जळथी शीतळ देखातो छतां वडवानळ नामना अग्निनो तेमां वास छे तेम संसारमां मायारुपी अग्नि वळ्याज करेछे. समुद्र जेम चोमासामां वधारे जळ पामीने उंडो उतरेछे तेम पापरुपी जळ पामीने संसार उंडो उतरे छे, एटले मजबुत पाया करतो जाय छे.

२ संसारने बीजी उपमा अग्निनी छाजे छे. अग्निथी करीने जेम महातापनी उत्पत्ति छे. एम संसारथी पण त्रिविध तापनी उत्पत्ति छे. अग्निथी बळेलो जीव जेम महा विलविलाट करेछे. तेम संसारथी बळेलो जीव अनंत दुःखरुप नर्कथी असह्य विलविलाट करेछे. अग्नि जेम सर्व वस्तुनो भक्ष करी जायछे, तेम संसारना मुखमां पडेलांनो ते भक्ष करी जायछे. अग्निमां जेम जेम घी अने इंधन होमाय छे तेम तेम ते वृद्धि पामे छे, तेवीज रीने संसाररुप अग्निमां तीव्र मोहिनीरुप घी अने विषयरुप इंधन होमातां ते वृद्धि पामे छे.

३ संसारने त्रीजी उपमा अंधकारनी छाजे छे अंधका-

रमां जेम सींदरी, सर्पनुं भान करावे छे तेम संसार सत्यने असत्यरुप बतावे छे; अंधकारमां जेम प्राणीओ आम तेम भटकी विपत्ति भोगवे छे तेम संसारमां बेभान थइने अनंत आत्माओ चतुर्गतिमां आम तेम भटके छे. अंधकारमां जेम काच अने हीरानु ज्ञान थतुं नथी तेम संसाररुपी अंधकारमां विवेक अविवेकनुं ज्ञान थतुं नथी. जेम अंधकारमां प्राणीओ छती आंखे अंध बनी जाय छे तेम छती शक्तिए संसारमां तेओ मोहांध बनी जाय छे अंधकारमां जेम घुवड इत्यादिकनो उपद्रव वधे छे तेम संसारमां लोभ, मायादिकनो उपद्रव वधे छे. एम अनेक भेदे जोतां संसार ते अंधकाररुपज जणाय छे.



शिक्षापाठ २० संसारने चार उपमा भाग २.

४ संसारने चोथी उपमा शकटचक्रनी एटले गाडांना पैडांनी छाजे छे चालतां, शकटचक्र जेम फरतुं रहे छे तेम संसारमां प्रवेश करतां ते फरतां रुपे रहे छे शकटचक्र जेम धरी विना चाली शकतुं नथी तेम संसार मिथ्यात्वरुपी धरी विना चाली शकतो नथी. शकटचक्र जेम आरावडे करीने रह्युं छे तेम संसार शंका प्रमादादिक आराथी टक्यो छे. एम अनेक प्रकारथी शकटचक्रनी उपमा पण संसारने लागी शके छे.

एवी रीते संसारने जटली अशेपमा आपो एटली थोडी छे. मुख्यपणे ए चार उपमा आपणे जाणी हवे एमांथी तत्व लेवु योग्य छे.

१ सागर जेम मजबुत नाव अने माहितगार नाविकथी तरीने पार पमाय छे तेम सद्धर्मरुपी नाव अने सद्गुरुरुपी नाविकथी संसारसागर पार पामी शकाय छे. सागरमां जेम डाह्या पुरुषोए निर्विघ्न रस्तो शोधी काढ्यो होय छे तेम जिनेश्वर भगवाने तत्वज्ञानरुप निर्विघ्न उत्तम राह बताव्यो छे.

२ अग्नि जेम सर्वने भक्ष करी जाय छे, परंतु पाणीथी बुझाइ जाय छे तेम वैराग्यजळथी संसारअग्नि बुझवी शकाय छे.

३ अंधकारमां जेम दीवो लइ जवाथी प्रकाश थतां, जोइ शकाय छे; तेम तत्वज्ञान रुपी निर्धुज दीवो संसाररुपी अंधकारमां प्रकाश करी सत्य वस्तु बतावे छे.

४ शकटचक्र जेम बळदविना चाली शकतुं नथी तेम संसारचक्र राग, द्वेषविना चाली शकतुं नथी.

एम ए संसारदरदनुं निवारण उपमावडे अनुपानादि प्रतिकार साथे कह्युं. ते आत्महितैषिए निरंतर मनन करवुं; अने बीजाने बोधवुं.



शिक्षापाठ २१ बार भावना.

वैराग्यनी, अने तेवा आत्महितैषि विषयोनी सुद्रढता थवा माटे बार भावना चिंतववानुं तत्वज्ञानीओ कहेछे.

१ शरीर, वैभव, लक्ष्मी कुटुंब परिवारादिक सर्व विनाशी छे; जीवनो मूळ धर्म अविनाशी छे; एम चिंतववुं ते पहेली अनित्यभावना.

२ संसारमा मरण समये जीवने शरण राखनार कोई

नथी, मात्र एक शुभ धर्मनुंज शरण सत्यछे; एम चिंतववुं ते बीजी अशरण भावना.

३ आ आत्माए संसारसमुद्रमां पर्यटन करतां करतां सर्वे भव कीधाछे, ए संसारजंजीरथी हुं क्यारे छुटीश? ए संसार मारो नथी, हुं मोक्षमयि छुं; एम चिंतववुं ते त्रीजी संसार भावना.

४ आ मारो आत्मा एकलोछे; ते एकलो आव्योछे, एकलो जशे; पोतानां करेलां कर्म एकलो भोगवशे एम चिंतववुं ते चोथी एकत्वभावना.

५ आ संसारमां कोई कोइनुं नथी एम चिंतववुं ते पांचमी अन्यत्वभावना.

६ आ शरीर अपवित्र छे, मळमुत्रनी खाण छे, रोग जराने रहेवानुं धाम छे, ए शरीरथी हुं न्यारो छउं एम चिंतववुं ते छठ्ठी अशुचिभावना.

७ राग, द्वेष, अज्ञान, मिथ्यात्व ईत्यादिक सर्व आश्रवछे एम चिंतववुं ते सातमी आश्रवभावना.

८ ज्ञान, ध्यानमां जीव प्रवर्त्तमान थईने नवां कर्म बांधे नहीं एवी चिंतवना करवी ते आठमी सम्वरभावना.

९ ज्ञानसहित क्रिया करवी ते निर्जरानुं कारण छे एम चिंतववुं ते नवमी निर्जराभावना.

१० लोकस्वरुपनुं उत्पत्ति, स्थिति, विनाशस्वरुप विचारवुं ते दशमी लोकस्वरुपभावना.

११ संसारमा भमता आत्माने सम्यक्ज्ञाननी प्रसादी प्राप्त थवी दुर्लभ छे; वा सम्यक्ज्ञान पाम्यो तो

विरति परिणामरूप धर्म पामवो दुर्लभ छे. एवुं चिंतवन ते अग्यारमी बोधदुर्लभभावना.

१२ धर्मना उपदेशक तथा शुद्ध शास्त्रना बोधक एवा गुरु अने एवुं श्रवण मळवुं दुर्लभ छे एवुं चिंतवन ते बारमी धर्मदुर्लभभावना.

आ बार भावनाओ मननपूर्वक निरंतर विचारवाथी मनुष्यो उत्तम पदने पाम्या छे-पामेछे-अने पामशे.

शिक्षापाठ २२ कामदेव श्रावक.

महावीर भगवानना समयमां द्वादशव्रतने विमळ भावथी धारण करनार, विवेकी अने निर्ग्रंथवचनानुरक्त कामदेव नामना एक श्रावक तेओना शिष्य हता. सुधर्मा सभामां इंद्रे एक वेळा कामदेवनी धर्मअचळतानी प्रशंसा करी. एवामां त्यां एक तुच्छ बुद्धिवान देव बेठो हतो तेणे एवी सुदृढतानो अविश्वास बताव्यो अने कह्युं के ज्यांसुधी परिषह पड्या न होय त्यांसुधी बधाय सहनशील अने धर्मदृढ जणाय. आ मारी वात हुं एने चळावी आपीने सत्य करी देखाडुं. धर्मदृढ कामदेव ते वेळा कायोत्सर्गमां लीन हता. देवताए प्रथम हाथीनुं रूप वैक्रिय कर्युं; अने पछी कामदेवने खूब गुंद्या तोपण ते अचळ रह्या. एटले मुशळ जेवुं अंग करीने काळावर्णनो सर्प थईने भयंकर फुंकार कर्या. तोय कामदेव कायोत्सर्गथी लेश चळ्या नहीं; पछी अट्टहास्य करता राक्षसनो देह धारण करीने अनेक प्रकारना परिषह कर्या. तोपण कामदेव कायोत्सर्गथी चळ्या नहीं. सिंह वगेरेना अनेक भयंकर रूप कर्यां; तोपण कायोत्सर्गमां लेश हीनता कामदेवे आणी नहीं. एम रात्रिना

चारे पहोर देवताए कर्या कर्युं; पण ते पोतानी धारणामां फाव्यो नहीं. पछी ते देवे अवधिज्ञानना उपयोगवडे जोयुं तो कामदेवने मेरुना शिखरनी पेरे अडोळ रह्या दीठा. कामदेवनी अद्भुत निश्चळता जाणी तेने विनयभावथी प्रणाम करी पोतानो दोष क्षमावीने ते देवता स्वस्थानके गयो.

कामदेव श्रावकनी धर्मद्रढता एवो बोध करेछे के सत्यधर्म अने सत्यप्रतिज्ञामां परम द्रढ रहेवुं; अने कायोत्सर्ग आदि जेम बने तेम एकाग्र चित्तथी अने सुद्रढताथी निर्दोष करवां. चळविचळ भावथी कायोत्सर्गादि बहु दोषयुक्त थायछे. पाई जेवा द्रव्यलाभ माटे धर्मशास्त्र काढनारथी धर्ममां द्रढता क्यांथी रही शके! अने रही शकतो केवी रहे! ए विचारतां खेद थायछे.

—:०:—

शिक्षापाठ २३ सत्य.

सामान्य कथनमां पण कहेवायछे के सत्य ए आ जगतनुं धारण छे. अथवा सत्यने आधारे आ जगत रह्युंछे. ए कथनमांथी एवी शिक्षा मळेछे के धर्म, नीति, राज, अने व्यवहार ए सत्यवडे प्रवर्त्तन करी रह्यां छे अने ए चार नहोय तो जगतनुं रूप केवुं भयंकर होय? ए माटे सत्य ए जगतनुं धारण छे एम कहेवुं ए कंइ अतिशयोक्ति जेवुं के नहीं मानवा जेवुं नथी.

वसुराजानुं एक शब्दनुं असत्य बोलवुं केटलुं दुःखदायक थयुं हतुं ते समजवा विचार करवा माटे अहीं कहीशुं.

वसुराजा, नारद अने पर्वत ए त्रणे एक गुरु पासेथी वि-

था भणता हता. पर्वत अध्यापकनो पुत्र हतो; अध्यापके काळ कर्यो. एथी पर्वत तेनी मा सहीत वसुराजाना दरबारमां आवी रह्यो हतो. एक रात्रे तेनी मा पासे बेठी छे; अने पर्वत तथा नारद शास्त्राभ्यास करेछे. एमां एक वचन पर्वत एवुं बोल्यो के 'अजाहोतव्यं.' त्यारे नारदे पूछयुं अज ते शुं पर्वत? पर्वते कह्युं, 'अज' ते 'बोकडो.' नारद बोल्यो, आपणे त्रणे जण तारा पिता कने भणता हता त्यारे तारा पिताए तो 'अज' ने त्रण वर्षनी 'व्रीहि' कहीछे; अने तुं अवळुं शा माटे कहेछे? एम परस्पर वचनविवाद वध्यो. त्यारे पर्वते कह्युं, आपणने वसुराजा कहे ते खरुं. ए वातनी नारदे हा कही; अने जीते तेने माटे अमुक शरत करी. पर्वतनी मा जे पासे बेठी हती तेणे आ सांभळ्युं. 'अज' एटले 'व्रीहि' एम तेने पण याद हतुं; शरतमां पोतानो पुत्र हारशे एवा भयथी पर्वतनी मा रात्रे राजा पासे गई अने पूछयुं, राजा, 'अज' एटले शुं? वसुराजाए संबंधपूर्वक कह्युं. 'अज' एटले 'व्रीहि.' त्यारे पर्वतनी माए राजाने कह्युं मारा पुत्रथी 'बोकडो' कहेवायो छे माटे, तेनो पक्ष करवो पडशे; तमने पूछवा माटे तेओ आवशे. वसुराजा बोल्योः हुं असत्य केम कहुं? माराथी ए बने नहीं. पर्वतनी माए कह्युं. पण जो तमे मारा पुत्रनो पक्ष नहि करो तो तमने हुं हत्या आपीश. राजा विचारमां पडी गयो के सत्य वडे करीने हुं मणिमय सिंहासन पर अद्धर बेसुं छउं. लोकसमुदायने न्याय आपुं छउं. लोक पण एम जाणे छे के राजा सत्य गुणे करीने सिंहासनपर अंतरिक्ष बेसेछे; हवे केम करवुं? जो पर्वतनो पक्ष

न कहुं तो ब्राह्मणी मरेछे; ए वळी मारा गुरुनी स्त्री छे. न चालतां छेवटे राजाए ब्राह्मणीने कह्युं तमे भले जाओ; हुं पर्वतनो पक्ष करीश. आवो निश्चय करावीने पर्वतनी मा घेर आवी. प्रभाते नारद, पर्वत अने तेनी मा विवाद करतां राजा पासे आव्यां. राजा अजाण थई पूछवा लाग्यो, शुं छे पर्वत? पर्वते कह्युं, राजाधिराज! अज ते शुं? ते कहो. राजाए नारदने पूछयुं, तमे शुं कहोछो? नारदे कह्युं, 'अज' ते त्रण वर्षनी 'ब्रीही' तमने क्यां नथी सांभरतुं? वसुराजा बोल्यो, 'अज' एटले 'बोकडो' पण 'ब्रीही' नहीं. तेज वेळा देवताए सिंहासनथी उछाळी हेठो नाख्यो; वसु काळपरिणाम पामी नरके गयो.

आ उपरथी सामान्य मनुष्योए सत्य, तेमज राजाए न्यायमां अपक्षपात अने सत्य बन्ने ग्रहण करवायोग्य छे ए मुख्य बोध मळेछे.

जे पांच महाव्रत भगवाने प्रणीत कर्यां छे; तेमांना प्रथम महाव्रतनी रक्षाने माटे बाकीनां चार व्रत वाडरूपे छे; अने तेमां पण पहेली वाड ते सत्य महाव्रत छे. ए सत्यना अनेक भेद सिद्धांतथी श्रुत करवा अवश्यना छे.

—※—

शिक्षापाठ २४ सत्संग.

सत्संग ए सर्व सुखनुं मूळ छे; सत्संगनो लाभ मळ्यो के तेना प्रभाववडे वांछित सिद्धि थइज पडी छे; गमे तेवा पवित्र थवाने माटे सत्संग श्रेष्ठ साधन छे; सत्संगनी एक घडी जे लाभ देछे ते कुसंगना एक कोटयावधि वर्ष पण लाभ न दई श-

कर्तां अधोगतिमय महा पापो करावेछे, तेमज आत्माने मलिन करे छे. सत्संगनो सामान्य अर्थ एटलोछे के उत्तमनो सहवास. ज्यां सारी हवा नथी आवती त्यां रोगनी वृद्धि थाय छे; तेम ज्यां सत्संग नथी त्यां आत्मरोग वधे छे. दुर्गंधथी कंटाळीने जेम नाके वस्त्र आडुं दइए छीए तेम कुसंगथी सहवास बंध करवानुं अवश्यनुं छे; संसार ए पण एक प्रकारनो संग छे; अने ते अनंत कुसंगरुप तेमज दुःखदायक होवाथी त्यागवा योग्य छे. गमे ते जातनो सहवास होय परंतु जेवडे आत्मसिद्धि नथी ते सत्संग नथी. आत्माने सत्य रंग चढावे ते सत्संग. मोक्षनो मार्ग बतावे ते मैत्रि. उत्तम शास्त्रमां निरंतर एकाग्र रहेवुं ते पण सत्संग छे; सत्पुरुषोनो समागम ए पण सत्संग छे. मलिन वस्त्रने जेम साबु तथा जळ स्वच्छ करेछे तेम शास्त्रबोध अने सत्पुरुषोनो समागम, आत्मानी मलिनता टाळीने शुद्धता आपेछे.जेनाथी हमेशनो परिचय रही राग,रंग,गान,तान,अने स्वादिष्ट भोजन सेवातां होय ते तमने गमे तेवो प्रिय होय तोपण निश्चय मानजो के ते सत्संग नथी, पण कुसंग छे सत्संगथी प्राप्त थयेलु एक वचन अमुल्य लाभ आपे छे. तत्वज्ञानीओए मुख्य बोध एवो कर्यो छे के सर्व संग परित्याग करी. अंतरमां रहेला सर्व विकारथी पण विरक्त रही एकांतनुं सेवन करो. तेमां सत्संगनी स्तुति आवी जाय छे. केवळ एकांत तेतो ध्यानमां रहेवु के योगाभ्यासमां रहेवुं ए छे. परंतु समस्वभाविनो समागम जेमांथी एकज प्रकारनी वर्तननानो प्रवाह नीकळे छे ते, भावे एकज

रूप होवाथी घणा माणसो छतां अने परस्परनो सहवास छतां ते एकांतरूपज छे; अने तेवी एकांत मात्र संतसमागममां रही छे. कदापि कोइ एम विचारशे के विषयीमंडळ मळे छे त्यां समभाव सरखी वृत्ति होवाथी एकांत कां न कहेवी? तेनुं समाधान तत्काळछे के तेओ एक स्वभावि होता नथी. तेमां परस्पर स्वार्थ बुद्धि अने मायानुं अनुसंधान होय छे; अने ज्यां ए बे कारणथी समागमछे ते एक स्वभावि के निर्दोष होता नथी. निर्दोष अने समस्वभावि समागम तो परस्परथी शांत मुनीश्वरोनो छे; तेमज धर्मध्यानप्रशस्त अल्पारंभी पुरुषनो पण केटलेक अंशे छे. ज्यां स्वार्थ अने माया कपटज छे त्यां समस्वभावता नथी; अने ते सत्संग पण नथी. सत्संगथी जे सुख अने आनंद मळे छे ते अति स्तुतिपात्र छे. ज्यां शास्त्रोनां सुंदर प्रश्नो थाय, ज्यां उत्तम ज्ञान ध्याननी सुकथा थाय, ज्यां सत्पुरुषोनां चरित्रपर विचार बंधाय, ज्यां तत्वज्ञानना तरंगनी लहरियो छूटे, ज्यां सरळ स्वभावथी सिद्धांत विचार चर्चाय, ज्यां मोक्षजन्य कथनपर पुष्कळ विवेचन थाय; एवो सत्संग ते महा दुर्लभ छे. कोइ एम कहे के सत्संगमंडळमां कोइ मायावि नहि होय? तो तेनुं समाधान आ छेः ज्यां माया अने स्वार्थ होय छे त्यां सत्संगज होतो नथी. राजहंसनी सभानो काग देखावे कदापि न कळाय तो अवश्य रागे कळाशे, मौन रहे तो मुखमुद्राए कळाशे पण ते अंधारामां जाय नहि. तेमज मायावि सत्संगमां जाय तो त्यां शुं करे? त्यां स्वार्थ बजाववानो प्रसंग तो होय नहि. ए पहेलां त्यां जइ ते विश्रांति लेवा इच्छा तो नज करे [illegible]

बीजीवार तेनुं आगमन होय नहीं; जेम पृथ्वीपर तराय नहीं, तेम सत्संगथी बुडाय नहीं; आवी सत्संगमां चमत्कृति छे. निरंतर एवा निर्दोष समागममां माया लइने आवे पण कोण ? कोइक दुर्भागी; अने ते पण असंभवित छे.

सत्संग ए आत्मानुं परम हितकारि औषध छे.

—:::—

शिक्षापाठ २५ परिग्रहने संकोचवो.

जे प्राणीने परिग्रहनी मर्यादा नथी, ते प्राणी सुखी नथी; तेने जे मळ्युं ते ओछुंछे. कारण जेटलुं जाय तेटलांथी विशेष प्राप्त करवा तेनी इच्छा थायछे. परिग्रहनी प्रबळतामां जे कंइ मळ्युं होय तेनुं सुख तो भोगवातुं नथी परंतु होय ते पण वखते जायछे. परिग्रहथी निरंतर चळविचळ परिणाम अने पापभावना रहेछे; अकस्मात् योगथी एवा पापभावनामां आयुष्य पूर्ण थाय तो बहुधा अधोगतिनुं कारण थइ पडे. केवळ परिग्रह तो मुनिश्वरो त्यागी शके; पण गृहस्थो एनी अमुक मर्यादा करी शके. मर्यादा थवाथी उपरांत परिग्रहनी उत्पत्ति नथी; अने एथी करीने विशेष भावना पण बहुधा थती नथी; अने वळी जे मळ्युंछे तेमां संतोष राखवानी प्रथा पडेछे; एथी सुखमां काळ जायछे. कोण जाणे लक्ष्मीआदिकमां केवीए विचित्रता रहीछे के जेम जेम लाभ थतो जायछे तेम तेम लोभनी वृद्धि थती जाय छे; धर्म संबंधी केटलुंक ज्ञान छतां, धर्मनी दृढता छतां पण परिग्रहना पाशमां पडेलो पुरुष कोइक ज छूटी शके छे. वृत्ति एमांज लटकी रहे छे, परंतु ए वृत्ति कोइ

काळ शुभदायक के आत्महितैषि थइ नथी. जेणे एनी टुंकी मर्यादा करी नहीं; ते पछोळो दुःखना भोगी थया छे.

छ खंड साधी आज्ञा मनावनार राजाधिराज, चक्रवर्ती कहेवाय छे. ए समर्थ चक्रवर्तीमां सुभुम नामे एक चक्रवर्ती थइ गयो छे. एणे छ खंड साधी लीधा एटले चक्रवर्ति-पद-थी ते मनायो; पण एटलेथी एनी मनोवांछा तृप्त न थइ; हजु ते तरस्यो रह्यो. एटले धातकी खंडना छ खंड साधवा एणे निश्चय कर्यो. बधा चक्रवर्त्ती छखंड साधेछे; अने हुं पण एटला ज साधुं तेमां महत्ता शानी ? बारखंड साधवाथी चिरकाळ हुं नामांकित थइश. समर्थ आज्ञा जीवनपर्यंत ए खंडोपर मनावी शकीश; एवा विचारथी समुद्रमां चर्मरत्न मुक्युं; ते उपर सर्व सैन्यादिकनो आधार रह्यो हतो; चर्मरत्नना एक हजार देवता सेवक कहेवायछे; तेमां प्रथम एके विचार्युं के कोण जाणे केटलाय वर्षे आमांथी छुटको थशे ! माटे देवांगनाने तो मळी आवुं एम धारी ते चाल्यो गयो; पछी बीजो गयो; पछी त्रीजो गया. एम एम करतां करतां हजारे चाल्या गया; त्यारे चर्मरत्न बुडयु अश्व, गज अने सर्व सैन्यसहित सुभुम नामनो ते चक्रवर्ती बुडयो; पापभावनामां ने पापभावनामां [illegible] अनंत दुःखथी भरेली सातमी तमतमप्रभा नर्कने [illegible] परंतु आधिपत्य तो भोगववुं [illegible] परिग्रहनी प्रीतिथी ए [illegible] कहेवुं शुं ! प-रिग्रह [illegible] अन्य एकादश-

ने महा दोप दे एवो एनो स्वभाव छे. ए माटे थइने आत्महितैषिए जेम बने तेम तेनो त्याग करी मर्यादापूर्वक वर्त्तन करवुं.



शिक्षापाठ २६ तत्व समजवुं.

शास्त्रोनां शास्त्रो मुख पाठे होय एवा पुरुषो घणा मळी शके; परंतु जेणे थोडां वचनोपर मौढ अने विवेकपूर्वक विचार करी शास्त्र जेटलुं ज्ञान हृदयगत कर्युं होय तेवा मळवा दुर्लभ छे. तत्वने पहोंची जवुं ए कंइ नानी वात नथी. कूदीने दरियो ओळंगी जवोछे.

अर्थ एटले लक्ष्मी, अर्थ एटले तत्व अने अर्थ एटले शद्वनुं वीजुं नाम. आवा अर्थशद्वना घणा अर्थ थायछे. पण अर्थ एटले तत्व ए विषयपर अहीं आगळ कहेवानुंछे. जेओ निर्ग्रंथप्रवचनमां आवेलां पवित्र वचनो मुखपाठे करेछे; ते तेओनां उत्साहवळे सत्फळ उपार्जन करेछे; परंतु जो तेनो मर्म पाम्यो होय तो एथी ए सुख, आनंद, विवेक अने परिणामे महद्भूतफळ पामेछे. अभणपुरुष सुंदर अक्षर अने ताणेला मिथ्या लीटा ए वेना भेदने जेटलुं जाणेछे तेटलुंज मुखपाठी अन्य ग्रंथ विचार अने निर्ग्रंथप्रवचनने भेद रूप मानेछे कारण तेणे अर्थ पूर्वक निर्ग्रंथ वचनामृतो धार्यां नथी; तेम ते पर यथार्थ तत्वविचार कर्यो नथी. जोके तत्वविचार करवामां समर्थ बुद्धिप्रभाव जोइए छीए; तोपण कंइ विचार करी शके; पत्थर पाणी नहीं पीगळे तोपण पाणीथी पलळे तेमज जे वचनामृतो मुखपाठे कर्यां होय

ते अर्थ सहित होय तो बहु उपयोगी थई पडे; नहींतो पोपटवाळुं राम नाम. पोपटने कोई परिचये रामनाम कहेतां शीखडावे; परंतु पोपटनी बला जाणे के राम ते दाडम के द्राक्ष. सामान्यार्थ समज्या वगर एवुं थायछे. कच्छी वैश्योनुं दृष्टांत एक कहेवायछे ते कंईक हास्ययुक्तछे खरुं; परंतु एमांथी उत्तम शिक्षा मळी शके तेम छे; एटले अहीं कही जउं छउं. कच्छना कोई गाममां श्रावकधर्म पाळता रायशी, देवशी अने खेतशी एम त्रण नाम धारी ओशवाळ रहेता हता. नियमित रीते तेओ संध्याकाळे, अने परोढिये प्रतिक्रमण करता हता. परोढिये रायशी अने संध्याकाळे देवशी प्रतिक्रमण करावता हता. रात्रि संबंधी प्रतिक्रमण रायशी करावतां; अने संबंधे 'रायशी पडिक्कमणुंठायमि' एम तेने बोलावनुं पडतुं; तेमज 'देवशीने देवशी पडिक्कमणुंठायमि' एम संबंध होवाथी बोलावुं पडतुं. योगानुयोगे घणाना आग्रहथी एक दिवस संध्याकाळे खेतशीने बोलावा बेसार्यो. खेतशीए ज्यां 'देवशी पडिक्कमणुं ठायमि' एम आव्युं त्यां 'खेतशी पडिक्कमणुं ठायमि' ए वाक्यो लगावी दीधां! ए सांभळी सघळा हास्ययुक्त थया अने पूछ्युं आमकां? खेतशी बोल्यो वळी आम ते केम? त्यां उत्तर दश्यों के 'खेतशी पडिक्कमणुं ठायमि' एम तमे केम बोल्याछो? खेतशीए कह्युं हुं गरीब छउं एटले मारुं नाम आव्युं त्यां पाधरो नकार करो छो. पण रायशी अने देवशी माटे तो कोई दिवस कोई बोलता पण नथी. ए बन्ने केम 'रायशी पडिक्कमणुं ठायमि' अने 'देवशी पडिक्कमणुं ठायमि' एम कहे छे, तो पछी हुं मारुं

पडिक्कमणुं ठायमि' एम कां न कहुं? एनी भद्रिकताए तो बधाने विनोद उपजाव्यो; पछी अर्थनी कारणसहित समजण पाडी एटले खेनशी पोतानां मुखपाठी प्रतिक्रमणथी शरमायो.

आ तो एक सामान्य वात छे; परंतु अर्थनी खुबी न्यारी छे. तत्त्वज्ञ तेपर बहु विचार करी शके. बाकी तो गोळ गळ्योज लागे तेम निर्ग्रंथवचनामृतो पण सत्फळज आपे. अहो! पण मर्म पामवानी वातनी तो बलीहारीज छे!



शिक्षापाठ २७ यत्ना.

जेम विवेक ए धर्मनुं मूळतत्त्व छे; तेम यत्ना ए धर्मनुं उपतत्त्व छे. विवेकथी धर्म तत्त्व ग्रहण कराय छे; तथा यत्नाथी ते तत्त्व शुद्ध राखी शकाय छे अने ते प्रमाणे प्रवर्तन करी शकाय छे. पांच समितिरूप यत्ना तो बहु श्रेष्ठ छे; परंतु गृहस्थाश्रमीथी ते सर्व भावे पाळी शकाती नथी; छतां जेटला भावांशे पाळी शकाय तेटला भावांशे पण सावधानीथी पाळी शकता नथी. जिनेश्वर भगवंते बोधेली स्थूळ अने सूक्ष्म दया प्रत्ये ज्यां बेदरकारी छे, त्यां बहु दोषथी पाळी शकाय छे. ए यत्नानी न्यूनताने लीधे छे. उतावळी अने वेगभरी चाल, पाणी गळी तेनो संखारो राखवानी अपूर्ण विधि, काष्ठादिक इंधननो वगर खंखेर्ये, वगर जोये उपयोग; अनाजमां रहेला सूक्ष्म जंतुओनी अपूर्ण तपास, पुंज्या प्रमार्ज्या वगर रहेवा दीधेलां ठाम; अस्वच्छ राखेला ओरडा, आंगणामां पाणीनुं ढोळवुं, एठनुं राखी मूकवुं, पाटला वगर धखधखती थाळी नीचे मूकवी, एथी पोताने अस्वच्छता अ-

स्वरूपता, अगवड, अनारोग्यता इत्यादिक फळ रूप थाय छे; अने परलोकमां दुःखदायि महापापनां कारण पण थई पडे छे, ए माटे थईने कहेवानो बोध के चालवामां, बेसवामां, उठवामां, जमवामां अने बीजा हरेक प्रकारमां यत्नानो उपयोग करवो. एथी द्रव्ये अने भावे बन्ने प्रकारे लाभ छे. चाल धीमी अने गंभीर राखवी, घर स्वच्छ राखवां, पाणी विधि सहित गळाववुं. काष्ठादिक इंधन खंखेरीने नाखवां ए कंई आपणने अगवडकारक काम नथी; तेम तेमां विशेष वखत जतो नथी. एवा नियमो दाखल करी दीधा पछी पाळवा मुश्केल नथी. एथी बिचारा असंख्यात निरपराधी जंतुओ बचे छे.

प्रत्येक काम यत्नापूर्वक करवुं ए विवेकी श्रावकनुं कर्तव्य छे.

शिक्षापाठ २८ रात्रिभोजन.

अहिंसादिक पंचमहाव्रत जेवुं भगवाने रात्रिभोजन त्याग व्रत कह्युं छे. रात्रिमां जे चार प्रकारना आहार छे ते अभक्षरूप छे. जे जातिनो आहारनो रंग होय छे ते जातिनां तमस्काय नामना जीव ते आहारमां उत्पन्न थाय छे. रात्रिभोजनमां ए सिवाय पण अनेक दोष रह्या छे. रात्रे जमनारने रसोईने माटे अग्नि सळगाववो पडे छे, त्यारे समीपनी भींतपर रहेला निरपराधी सूक्ष्म जंतुओ नाश पामे छे. इंधन माटे आणेलां काष्ठादिकमां रहेला [illegible] जंतुओ [illegible] नाश पामे छे; [illegible]

अने मच्छरादिक सूक्ष्म जंतुनो पण भय रहेछे; वखते ए, कुटुंबादिकने भयंकर रोगनुं कारण पण थइ पडे छे.

रात्रिभोजननो पुराणादिक मतमां पण सामान्य आचारने खातर त्याग कर्यो छे छतां तेओमां परंपरानी रुढीए करीने रात्रिभोजन पेसी गयुं छे. पण ए निषेधकतोछेज.

शरीरनी अंदर बे प्रकारनां कमळ छे. ते सूर्यना अस्तथी संकोच पामी जायछे; एथी करीने रात्रिभोजनमां सूक्ष्म जीव भक्षणरुप अहित थायछे; जे महा रोगनुं कारणछे. एवो केटलेक स्थळे आयुर्वेदनो पण मतछे.

सत्पुरुषो तो दिवस बे घडी रहे त्यारे वाळु करे; अने बे घडी दीवस चड्यां पहेलां गमे ते जातनो आहार करे नहीं. रात्रिभोजनने माटे विशेष विचार मुनिसमागमथी के शास्त्रथी जाणवो. ए संबंधी बहु सूक्ष्म भेदो जाणवा अवश्यनाछे.

चारे प्रकारना अहार रात्रिने विषे त्यागवाथी महद्फळ छे. आ जिन वचन छे.



शिक्षापाठ २९ सर्व जीवनी रक्षा भाग १

दया जेवो एके धर्म नथी. दया एज धर्मनुं स्वरुपछे. ज्यां दया नथी त्यां धर्म नथी. जगतितळमां एवा अनर्थकारक धर्म मतो पड्याछे के जेओ एम कहेछे के जीवने हणतां लेश पाप थतुं नथी; बहु तो मनुष्य देहनी रक्षा करो. तेम ए धर्ममतवाळा झनुनी. मदांध छे अने दयानुं लेश स्वरुप पण जाणता नथी. एओ जो पोतानुं हृदयपट प्रकाशमां मूकीने विचारे तो

अवश्य तेमने जणाशे के एक सूक्ष्ममां सूक्ष्म जंतुने हणवामां पण महा पापछे. जेवो मने मारो आत्मा प्रियछे तेवो तेने पण तेनो आत्मा प्रियछे. हुं मारा लेश व्यसन खातर के लाभ खातर एवा असंख्याता जीवोने बेधडक हणुं छउं. ए मने केटलुं बधुं अनंत दुखनुं कारण थइ पडशे ? तेओमां बुद्धिनुंबीज पण नहीं होवाथी तेओ आवो सात्विक विचार करी शकता नथी. पापमां ने पापमां निशदिन मग्न छे. वेद, अने वैष्णवादि पंथोमां पण सूक्ष्म दया संबंधी कंइ विचार जोवामां आवतो नथी. तोपण एओ केवळ दयाने नहीं समजनार करतां घणा उत्तमछे. स्थूळ जीवोनी रक्षामां ए ठीक समज्याछे; परंतु ए सघळा करतां आपणे केवा भाग्यशाळी के ज्यां एक पूष्पपांखडी दूभाय त्यां पापछे ए खरुंतत्त्व समज्या अने यज्ञयागादिक हिंसाथी तो केवळ विरक्त रह्या छीए! बनता प्रयत्नथी जीव बचावीए छीए, वळी चाहिने जीव हणवानी आपणी लेश इच्छा नथी. अनंतकाय अभक्षथी बहु करी आपणे विरक्त्त छीए. आ काळे ए सघळो पून्यप्रताप सिद्धार्थ भूपाळना पुत्र महावीरनां कहेलां परमतत्वबोधना योगबळथी वध्यो छे. मनुष्यो रीद्धि पामेछे, सुंदर स्त्री पामेछे, आज्ञांकित पुत्र पामे छे, बहोळो कुटुंबपरिवार पामेछे; मानप्रतिष्टा तेमज अधिकार पामेछे. अने ते पामवां कंइ दुल्लभ नथी; परंतु खरुं धर्मतत्त्व के तेनी श्रद्धा के तेनो थोडो अंश पण पामवो महा दुल्लभ छे. ए रीद्धि इत्यादिक अविवेकथी पापनुं कारण थई अनंत दुःखमां लई जायछे; परंतु आ थोडी श्रद्धाभावना पण उत्तम

पहोंचाडेछे. आम दयानुं सत्परिणाम छे, आपणे धर्मतत्त्वयुक्त कुळमां जन्म पाम्या छीए तो हवे जेम बने तेम विमळ दयामय वर्तनमां आववुं. वारंवार लक्षमां राखवुं के सर्व जीवनी रक्षा करवी. बीजाने पण एवोज युक्तिप्रयुक्तिथी बोध आपवो. सर्व जीवनी रक्षा करवा माटे एक बोधदायक उत्तम युक्ति बुद्धिशाळी अभयकुमारे करी हती ते आवता पाठमां हुं कहुं छउं; एमज तत्त्वबोधने माटे यौक्तिकन्यायथी अनार्य जेवा धर्ममतवादीओने शिक्षा आपवानो वखत मळे तो आपणे केवा भाग्यशाळी !

शिक्षापाठ २९ सर्व जीवनी रक्षा भाग २.

मगध देशनी राजगृही नगरीनो अधिराजा श्रेणिक एक वखते सभा भरीने बेठो हतो. प्रसंगोपात वातचितना प्रसंगमां मांसलुब्ध सामंतो हता ते बोल्या के हमणां मांसनी विशेष सस्ताई छे. आ वात अभयकुमारे सांभळी. ए उपरथी ए हिंसक सामंतोने बोध देवानो तेणे निश्चय कर्यो. सांजे सभा विसर्जन थई अने राजा अंतःपुरमां गया. त्यार पछी कर्तव्य माटे जेणे जेणे मांसनी वात उच्चारी हती तेने तेने घेर अभयकुमार गया. जेने घेर जाय त्यां सत्कार कर्या पछी तेओ पूछवा लाग्या के आपनुं परिश्रम लई अमारे घेर केम पधारवुं थयुं छे ? अभयकुमारे कह्युं, महाराजा श्रेणिकने अकस्मात् महा रोग उत्पन्न थयो छे. वैद्य भेगा कर्या तेणे कह्युं के कोमळ मनुष्यना काळजानुं सवा टांक मांस होय तो आ रोग मटे.

तमे राजाना प्रियमान्य छो माटे तमारे त्यांए मांस लेवा आव्यो छउं. प्रत्येक सामंते विचार्यु के काळजानुं मांस हुं मुआविना, शी रीते आपी शकुं? एथी अभयकुमारने पूछ्युं महाराज, ए तो केम थई शके? एम कही पछी अभयकुमारने केटलुंक द्रव्य पोतानी वात राजा आगळ नहीं प्रसिद्ध करवा ते प्रत्येक सामंत आपता गया अने ते अभयकुमार लेता गया. एम सघळा सामंतोने घेर अभयकुमार फरी आव्या. सघळा मांस न आपी शक्या, अने आम तेमणे पोतानी वात छुपाववा द्रव्य आप्युं. पछी बीजे दिवसे ज्यारे सभा भेळी थइ त्यारे सघळा सामंतो पोताने आसने आवीने बेठा. राजा पण सिंहासनपर विराज्या हता. सामंतो आवी आवीने गइ कालनुं कुशळ पूछवा लाग्या. राजा ए वातथी विस्मित थया. अभयकुमार भणी जोयुं एटले अभयकुमार बोल्या. महाराज काले आपना सामंतो सभामां बोल्या हता के हमणां मांस सस्तुं मळेछे. जेथी हुं तेओने त्यां लेवा गयो हतो, त्यारे सघळाए मने बहु द्रव्य आप्युं; परंतु काळजानुं सवा पैसाभार मांस न आप्युं. त्यारे ए मांस सस्तु के मोंघुं? बधा सामंतो सांभळी शरमथी नीचुं जोइ रह्या. कोइथी कंइ बोली शकायुं नहीं. पछी अभयकुमारे कह्युं, आ कंइ में तमने दुःख आपवा कर्युं नथी; परंतु बोध आपवा कर्युं छे. आपणने आपणा शरीरनुं मांस आपवुं पडेतो अनंतभय थाय छे, कारण आपणा देहनी आपणने प्रियताछे, तेम जे जीवनुं ते मांस हशे तेनो पण जीव तेने वहालो हशे. जेम आपणे अमूल्य वस्तुओ आपीने पण पोतानो देह बचावीए छीए तेम ते विचारां पामर

प्राणीओने पण होवुं जोइए. आपणे समजणवाळां, बोलतां चालतां प्राणी छइए. ते बिचारां अवाचक अने निराधार प्राणी छे. तेमने मोतरूप दुःख आपीए ए केवुं पापनुं प्रबळ कारण छे. आपणे आ वचन निरंतर लक्षमां राखवुं के सर्व प्राणीने पोतानो जीव वहालो छे; अने सर्व जीवनी रक्षा करवी ए जेवो एके धर्म नथी. अभयकुमारना भाषणथी श्रेणिक महाराजा संतोषाया. सघळा सामंतो पण बोध पाम्या. तेओए ते दिवसथी मांस खावानी प्रतिज्ञा करी, कारण एक तो ते अभक्ष छे; अने कोइ जीव हणाया विना ते आवतुं नथी ए मोटो अधर्म छे; माटे अभय प्रधाननुं कथन सांभळीने तेओए अभयदानमां लक्ष आप्युं.

अभयदान आत्माना परम सुखनुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३१ प्रत्याख्यान.

पच्चखाण नामनो शब्द वारंवार तमारा सांभळवामां आव्यो छे. एनो मूळ शब्द प्रत्याख्यान छे; अने ते अमुक वस्तु भणी चित्त न करवुं एवो जे तत्त्व समजी हेतुपूर्वक नियम करवो तेने बदले वपराय छे. प्रत्याख्यान करवानो हेतु महा उत्तम अने सूक्ष्म छे. प्रत्याख्यान नहीं करवाथी गमे ते वस्तु न खाओ के न भोगवो तोपण तेथी संवरपणुं नथी, कारण के तत्त्वरूपे करीने इच्छानुं रुंधन थयुं नथी. रात्रे आपणे भोजन न करता होइए; परंतु तेनो जो प्रत्याख्यानरूपे नियम न कर्यो होय तो ते फळ न आपे; कारण आपणी इच्छा खुल्ली रही;

जेम घरनुं बारणुं उघाडुं होय अने श्वानादिक जनावर के मनुष्य चाल्युं आवे तेम इच्छानां द्वार खुल्लां होय तो तेमां कर्म प्रवेश करे छे. एटले के ए भणी आपणा विचार छूटथी जाय छे; ते कर्म बंधननुं कारण छे, अने जो प्रत्याख्यान होय तो पछी ए भणी दृष्टि करवानी इच्छा थती नथी. जेम आपणे जाणीए छीए के वांसानो मध्य भाग आपणाथी जोइ शकातो नथी, माटे ए भणी आपणे दृष्टि पण करता नथी; तेम प्रत्याख्यान करवाथी आपणे अमुक वस्तु खवाय के भोगवाय तेम नथी एटले ए भणी आपणुं लक्ष स्वाभाविक जतुं नथी, ए कर्म आववाने आडो कोट थइ पडे छे. प्रत्याख्यान कर्या पछी विस्मृति वगेरे कारणथी कोइ दोष आवी जाय तो तेनां प्रायश्चित निवारण पण महात्माओए कर्यां छे.

प्रत्याख्यानथी एक बीजो पण मोटो लाभछे; ते एके अमुक वस्तुओमांज आपणो लक्ष रहे छे, बाकी बधी वस्तुओनो त्याग थइ जायछे; जे जे वस्तु त्याग करी छे ते ते संबंधी पछी विशेष विचार, ग्रहवुं, मूकवुं के एवी कंइ उपाधि रहेती नथी. एवडे मन बहु बहोळताने पामी नियमरुपी सडकमां चाल्युं जायछे अश्व जो लगाममां आवी जायछे, तो पछी गमे तेवो प्रबळ छतां तेने धारेले रस्ते जेम लइ जवाय छे तेम मन ए नियमरुपी लगाममां आववाथी पछी गमे ते शुभ राहमां लइ जवाय छे; अने तेमां वारंवार पर्यटन कराववाथी ते एकाग्र, विचारशील अने विवेकी थायछे. मननो आनंद शरीरने पण निरोगी करे छे. वळी अभक्ष्य, अनंतकाय, परस्त्रियादिक नियम कर्याथी

पण शरीर निरोगी रही शके छे. मादक पदार्थो मनने अवळे रस्ते दोरेछे, पण प्रत्याख्यानथी मन त्यां जतां अटकेछे; एथी ते विमळ थाय छे.

प्रत्याख्यान ए केवी उत्तम नियम पाळवानी प्रतिज्ञा छे ते आ उपरथी तमे समज्या हशो. विशेष सद्गुरु मुखथी अने शास्त्रावलोकनथी समजवा हुं बोध करुं छउं.



शिक्षापाठ २२ विनयवडे तत्वनी सिद्धि छे.

राजगृही नगरीनां राज्यासनपर ज्यारे श्रेणिक राजा विराजमान हता, त्यारे ते नगरीमां एक चंडाळ रहेतो हतो. एक वखते ए चंडाळनी स्त्रीने गर्भ रह्यो, त्यारे तेने केरी खावानी इच्छा उत्पन्न थइ. तेणे ते लावी आपवा चंडाळने कह्युं. चंडाळे कह्युं, आ केरीनो वखत नथी, एटले मारो उपाय नथी. नहीं तो हुं गमे तेटले उंचे होय त्यांथी मारी विद्यानां बळवडे करीने लावी तारी इच्छा सिद्ध करुं. चंडाळणीए कह्युं, राजानी महाराणीना बागमां एक अकाळिक केरी देनार आंबोछे. तेपर अत्यारे केरीओ लची रही हशे, माटे त्यां जइने ए केरी लावो. पोतानी स्त्रीनी इच्छा पुरी पाडवा चंडाळ ते बागमां गयो. गुप्त रीते आंबा समीप जइ मंत्र भणीने तेने नमाव्यो; अने केरी लीधी. बीजा मंत्रवडे करीने तेने हतो एम करी दीधो. पछी ते घेर आव्यो अने तेनी स्त्रीनी इच्छा माटे निरंतर ते चंडाळ विद्यावडे त्यांथी केरी लाववा लाग्यो. एक दिवसे फरतां फरतां माळीनी दृष्टि आंबा भणी गइ. केरीओनी चोरी थयेली जोइने तेणे ज-

इने श्रेणिकराजा आगळ नम्रतापूर्वक कह्युं. श्रेणिकनी आज्ञाथी अभयकुमार नामना बुद्धिशाळी मधाने युक्तिवडे ते चंडाळने शोधी काढ्यो. तेने पोता आगळ तेडावी पूछ्युं, एटलां बधां माणसो बागमां रहेछे छतां तुं केवी रीते चढीने ए केरी लई गयो के ए वात कळवामां पण न आवी ? चंडाळे कह्युं, आप मारो अपराध क्षमा करजो. हुं साचुं बोली जउं छउं के मारी पासे एक विद्या छे; तेना योगथी हुं ए केरीओ लइ शक्यो. अभयकुमारे कह्युं, माराथी क्षमा न थइ शके; परंतु महाराजा श्रेणिकने ए विद्या तुं आप तो तेओने एवी विद्या लेवानो अभिलाष होवाथी तारा उपकारना बदलामां हुं अपराध क्षमा करावी शकुं. चंडाळे एम करवानी हा कही. पछी अभयकुमारे चंडाळने श्रेणिकराजा ज्यां सिंहासनपर बेठा हता त्यां लावीने सामो उभो राख्यो; अने सघळी वात राजाने कही बतावी. ए वातनी राजाए हा कही. चंडाळे पछी सामा उभा रही थरथरते पगे श्रेणिकने ते विद्यानो बोध आपवा मांडयो; पण ते बोध लाग्यो नहीं. झडपथी उभा थइ अभयकुमार बोल्या महाराजा ! आपने जो ए विद्या अवश्य शीखवी होय तो सामा आवी उभा रहो; अने एने सिंहासन आपो. राजाए विद्या लेवा खातर एम कर्युं तो तत्काळ विद्या साध्य थइ.

आ वात मात्र बोध लेवाने माटे छे. एक चंडाळनो पण विनय कर्या वगर श्रेणिक जेवा राजाने विद्या सिद्ध न थइ, तो तेमांथी तत्व ए ग्रहण करवानुं छे के सद्विद्याने साध्य करवा विनय करवो अवश्यनो छे. आत्मविद्या पामवा निर्ग्रंथगुरुनो जो विनय करीए तो केवुं मंगळदायक थाय !

विनय ए उत्तम वशीकरण छे. उत्तराध्ययनमां भगवाने विनयने धर्मनुं मूळ कही वर्णव्यो छे. गुरुनो, मुनिनो, विद्वाननो, मातापितानो अने पोताथी वडानो विनय करवो ए आपणी उत्तमतानुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३३ सुदर्शन शेठ.

प्राचीन काळमां शुद्ध एक पत्निव्रतने पाळनारा असंख्य पुरुषो थइ गया छे; एमांथी संकट सही नामांकित थयेलो सुदर्शन नामनो एक सत्पुरुष पण छे. ए धनाढ्य सुंदर मुखमुद्रावाळो कांतिमान अने मध्य वयमां हतो. जे नगरमां ते रहेतो हतो; ते नगरना राजदरबार आगळथी कंइ काम प्रसंगने लीधे तेने नीकळवुं पडयुं. ते वेळा राजानी अभया नामनी राणी पोताना आवासना गोखमां बेठी हती. त्यांथी सुदर्शन भणी तेनी दृष्टि गइ. तेनुं उत्तम रूप अने काया जोइने तेनुं मन ललचायुं. एक अनुचरी मोकलीने कपट भावथी निर्मळ कारण बतावीने सुदर्शनने उपर बोलाव्यो. केटलाक प्रकारनी वातचित कर्या पछी अभयाए सुदर्शनने भोग भोगववा संबंधीनुं आमंत्रण कर्युं. सुदर्शने केटलोक उपदेश आप्यो तोपण तेनुं मन शांत थयुं नहीं. छेवटे कंटाळीने सुदर्शने युक्तिथी कह्युं, बेन, हुं पुरुषत्वमां नथी! तोपण राणीए अनेक प्रकारना हावभाव कर्या. ए सघळी कामचेष्टाथी सुदर्शन चळ्यो नहीं; एथी कंटाळीने राणीए तेने जवा दीधो.

एक वार ए नगरमां उजाणी हती. तेथी नगर बहार

गरजनो आनंदथी आम तेम भमता हता. धामधुम मची रही हती. सुदर्शन शेठना छ देव कुमार जेवा पुत्रो पण त्यां आव्या हता. अभया राणी कपिला नामनी दासी साथे ठाठमाठथी त्यां आवी हती. सुदर्शनना देवपूतळां जेवा छ पुत्रो तेना जोवामां आव्या, कपिलाने तेणे पूछयुं आवा रम्य पुत्रो कोना छे ? कपिलाए सुदर्शन शेठनुं नाम आप्युं. नाम सांभळीने राणीनी छातीमां कटार भोकाइ; तेने कारी घा वाग्यो. सघळी धामधुम वीर्ती गया पछी माया कथन गोठवीने अभयाए अने तेनी दासीए मळी राजाने कह्युंः तमे मानता हशो के मारा राज्यमां न्याय अने नीति वर्ते छे; दुर्जनोथी मारी प्रजा दुःखी नथी; परंतु ते सघळुं मिथ्या छे. अंतःपुरमां पण दुर्जनो प्रवेश करे त्यां सुधी हजु अंधेर छे ! तो पछी बीजां स्थळ माटे पूछवुं पण शुं ? तमारा नगरना सुदर्शन नामना शेठे मारी कने भोगनुं आमंत्रण कर्युं. नहीं कहेवा योग्य कथनो मारे सांभळवां पडयां; पण में तेनो तिरस्कार कर्यो. आथी विशेषअंधारुं कयुं कहेवाय ? घणा राजा मूळ कानना काचा होयछे ए वात जाणे बहु मान्य छे, तेमां वळी स्त्रीनां मायाविमधुरां वचन शुं असर न करे ? ताता तेलमां टाढां जळ जेवां वचनथी राजा क्रोधायमान थया सुदर्शनने शूळीए चढावी देवानी तत्काळ तेणे आज्ञा करी दीधी, अने ते प्रमाणे सघळुं थई पण गयुं मात्र शूळीए सुदर्शन बेसे एटली वार हती.

गमे तेम हो, पण सृष्टिना दिव्य भंडारमां अजवाळुं छे, सत्यनो प्रभाव ढांक्यो रहेतो नथी. सुदर्शनने शूळीए बेसार्या,

के शूळी फीटीने तेनुं झळझळतुं सोनानुं सिंहासन थयुं; अने देव दुंदुभीना नाद थया; सर्वत्र आनंद व्यापी गयो. सुदर्शनतुं सत्यशील विश्वमंडळमां झळकी उठयुं. सत्य शीळनो सदा जय छे.

शीयळ अने सुदर्शननी उत्तम दृढता ए बन्ने आत्माने पवित्र श्रेणिए चढावे छे!

शिक्षापाठ ३४ ब्रह्मचर्यविषेसुभाषित.

दोहरा.

निरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान;
गणे काष्टनी पूतळी, ते भगवानसमान. १
आ सघळा संसारनी, रमणी नायकरुप;
ए त्यागी, त्याग्युं बधुं, केवळ शोकस्वरुप. २
एक विषयने जीततां, जीत्यो सौ संसार;
नृपति जीततां जीतिये, दळ, पुरने अधिकार. ३
विषयरुप अंकूरथी, टळे ज्ञानने ध्यान;
लेश मदीरापानथी, छाके ज्यम अज्ञान. ४
जे नववाड विशुद्धथी, धरे शियळ सुखदाइ;
भव तेनो लव पछि रहे, तत्ववचन ए भाइ. ५
सुंदर शीयळसुरतरु, मन वाणीने देह;
जे नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ले तेह. ६
पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिकज्ञान;
पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान. ७

शिक्षापाठ ३५ नमस्कारमंत्र.

नमो अरिहंताणं,
नमो सिद्धाणं;
नमो आयरियाणं;
नमो उवज्झायाणं;
नमो लोए सव्वसाहूणं.

आ पवित्र वाक्योने निर्ग्रंथप्रवचनमां नवकार (नमस्कार) मंत्र के पंचपरमेष्ठिमंत्र कहेछे.

अर्हंत भगवंतना बार गुण, सिद्ध भगवंतना आठ गुण, आचार्यना छत्रीश गुण, उपाध्यायना पंचवीश गुण, अने साधुना सत्तावीश गुण मळीने एकसो आठ गुण थया. अंगुठा विना बाकीनी चार आंगळीओनां बार टेरवां थाय छे; अने एथी ए गुणोनुं चिंतवन करवानी योजना होवाथी बारने नवे *गुणतां १०८ थाय छे. एटले नवकार एम कहेवा साथे एवुं* सूचवन रह्युं जणाय छे के हे भव्य! तारां ए आंगळीनां टेरवांथी (नवकार) मंत्र नववार गण.—कार एटले करनार एम पण थाय छे. बारने नवे गुणतां जेटला थाय एटला गुणनो भरेलो मंत्र एम नवकार मंत्र तरीके एनो अर्थ थइ शकेछे. पंच परमेष्ठि एटले आ सकळ जगतना पांच वस्तुओ परमोत्कृष्ट छे ते ते कयि कयि?–तो कही बतावी के अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु. एने नमस्कार करवानो जे मंत्र ते परमेष्ठि मंत्र; अने पांच परमेष्ठिने साथे नमस्कार होवाथी पंचपरमेष्ठिमंत्र एवो शब्द थयो. आ मंत्र अनादिसिद्ध मनाय छे;

કારણ પંચપરમેષ્ઠિ અનાદિ સિદ્ધ છે. એટલે એ પાંચે પાત્રો આદ્યરૂપ નથી; પ્રવાહથી અનાદિ છે, અને તેના જપનાર પણ અનાદિ સિદ્ધ છે. એથી એ જાપ પણ અનાદિસિદ્ધ ઠરે છે.

પ્ર—એ પંચપરમેષ્ઠિમંત્ર પરિપૂર્ણ જાણવાથી મનુષ્ય ઉત્તમ ગતિને પામે છે એમ સત્પુરુષો કહે છે એ માટે તમારું શું મત છે?

ઉ—એ કહેવું ન્યાયપૂર્વક છે, એમ હું માનું છઉં.

પ્ર—એને કયાં કારણથી ન્યાયપૂર્વક કહી શકાય?

ઉ—હા. એ તમને હું સમજાવું: મનની નિગ્રહતા અર્થે એક તો સર્વોત્તમ જગદ્ભૂષણના સત્ય ગુણનું એ ચિંતવન છે. તત્ત્વથી જોતાં વળી અર્હંતસ્વરૂપ, સિદ્ધસ્વરૂપ, આચાર્યસ્વરૂપ, ઉપાધ્યાયસ્વરૂપ અને સાધુસ્વરૂપ એનો વિવેકથી વિચાર કરવાનું પણ એ સૂચવન છે. કારણ કે તેઓ પૂજવા યોગ્ય શાથી છે? એમ વિચારતાં એઓનાં સ્વરૂપ, ગુણ ઇ૦ માટે વિચાર કરવાની સત્પુરુષને તો ખરી અગત્ય છે. હવે કહો કે એ મંત્ર કેટલો કલ્યાણકારક છે!

પ્રશ્નકાર—સત્પુરુષો નવકારમંત્રને મોક્ષનું કારણ કહે છે. એ આ વ્યાખ્યાનથી હું પણ માન્ય રાખું છઉં.

અર્હત ભગવંત, સિદ્ધ ભગવંત, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય અને સાધુ એઓનો પહેલો અક્ષર લેતાં "અસિઆઉસા" એવું મહદ્ભુત વાક્ય નીકળે છે. જેનું 'ૐ' એવું યોગબિંદુનું સ્વરૂપ થાય છે; માટે આપણે એ મંત્રનો અવશ્ય કરી વિમળ ભાવથી જાપ કરવો.

— —

शिक्षापाठ ३६ अनानुपूर्वि.

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

पिता—आवी जातनां कोष्टकथी भरेलुं एक नानुं पुस्तक छे ते तें जोयुं छे?

पुत्र—हा पिताजी.

पिता—एमां आडा अवळा अंक मूक्या छे, तेनुं कांइ पण कारण तारा समजवामां छे?

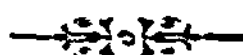
पुत्र—नहीं पिताजी.—मारा समजवामां नथी माटे आप ते कारण कहो.

पिता—पुत्र! प्रत्यक्ष छे के मन ए एक बहु चंचळ चीज छे; जेने एकाग्र करवुं बहु बहु विकट छे; ते ज्यां सुधी एकाग्र थतुं नथी त्यां सुधी आत्ममलिनता जती नथी. पापना विचारो घटता नथी. ए एकाग्रता माटे बार प्रतिज्ञादिक अनेक महान साधनो भगवाने कह्या छे. मननी एकाग्रताथी महा योगनी श्रेणिये चडवा माटे अने तेने केटलाक प्रकारथी निर्मळ

करवा माटे सत्पुरुषोए आ एक साधनरूप कोष्टकावलि करीछे.पंच परमेष्ठि मंत्रना पांच अंक एमां पहेला मूक्याछे; अने पछी लोमविलोमस्वरुपमां लक्षवंध एना ए पांच अंक मूकीने भिन्न भिन्न प्रकारे कोष्टको कर्या छे. एम करवानुं कारण पण मननी एकाग्रता थईने निर्जरा करी शकाय, ए छे.

पुत्र—पिताजी! अनुक्रमे लेवाथी एम शा माटे न थइ शके?

पिता—लोमविलोम होयतो ते गोठवतां जवुं पडे अने नाम संभारतां जवुं पडे. पांचनो अंक मूक्या पछी बेनो आंकडो आवे के 'नमो लोए सव्वसाहुणं' पछी-'नमोअरिहंताणं' ए वाक्य मूकीने 'नमो सिद्धाणं' ए वाक्य संभारवुं पडे. एम पुनःपुनः लक्षनी द्रढता राखतां मन एकाग्रताए पहोंचे छे. अनुक्रमबंध होयतो तेम थइ शकतुं नथी; कारणके विचार करवो पडतो नथीः ए सूक्ष्म वखतमां मन परमेष्टिमंत्रमांथी नीकळीने संसारतंत्रनी खटपटमां जइ पडे छे; अने वखते धर्म करतां धाड पण करी नाखे छे, जेथी सत्पुरुषोए अनानुपूर्वीनी योजना करी छे. ते बहु सुंदर छे अने आत्मशांतिने आपनारी छे.



शिक्षापाठ ३७ सामायिकविचार भाग १.

आत्मशक्तिनो प्रकाश करनार, सम्यग्ज्ञानदर्शननो उदय करनार, शुद्ध समाधिभावमां प्रवेश करावनार, निर्जरानो अमूल्य लाभ आपनार, रागद्वेषथी मध्यस्थ बुद्धि करनार एवुं सामायिक नामनुं शिक्षाव्रत छे. सामायिक शब्दनी व्युत्पत्ति सम आय इक ए शब्दोथी थायछे. सम एटले रागद्वेषरहित मध्यस्थ

परिणाम, आय एटले ते समभावनाथी उत्पन्न थतो ज्ञानदर्शन चारित्ररुप मोक्षमार्गनो लाभ; अने इक कहेतां भाव एम अर्थ थायछे. एटले जेवडे करीने मोक्षना मार्गनो लाभदायक भाव उपजे ते सामायिक. आर्त्त, अने रौद्र ए बे प्रकारनां ध्याननो त्याग करीने; मन, वचन कायाना पापभावने रोकीने विवेकी मनुष्यो सामायिक करेछे.

मनना पुद्गळ तरंगी छे. सामायिकमां ज्यारे विशुद्ध परिणामथी रहेवुं योग्यछे त्यारे पण ए मन आकाश पातालना घाट घड्या करेछे. तेमज भूल, विस्मृति, उन्माद इत्यादिथी वचनकायामां पण दूषण आववाथी सामायिकमां दोष लागेछे. मन, वचन अने कायाना थईने बत्रीश दोष उत्पन्न थायछे. दश मनना, दश वचनना अने बार कायाना एम बत्रीश दोष जाणवा अवश्यना छे. जे जाणवाथी मन सविचारे रासी शकाय.

मनना दश दोष कहुं छउं.

१ अविवेकदोष—सामायिकनुं स्वरुप नहीं जाणवाथी मनमां एवो विचार करे के आथी शुं फळ थवानुं हतुं ? आथीते कोण तर्युं हशे ? एवा विकल्पनुं नाम अविवेकदोष.

२ यशोवांछादोष—पोते सामायिक करे छे एम बीजा मनुष्यो जाणे तो प्रशंसा करे एवी इच्छाए सामायिक करवुं ते यशोवांछा दोष.

३ धनवांछादोष—धननी इच्छाए सामायिक करवुं ते धनवांछा दोष.

४ गर्वदोष—मने लोको धर्मि कहेछे अने हुं सामायिक पण तेवुं करुं छउं ! एवो अध्यवसाय ते गर्वदोष.

५ भयदोष हुं श्रावककुलमां जन्म्यो छउं; मने लोको मोटा तरीके मान दे छे. अने जो सामायिक नहीं करुं तो कहेशे के आटली क्रिया पण नथी करतो; एम निंदाना भयथी सामायिक करे ते भयदोष.

६ निदानदोष—सामायिक करीने तेनां फळथी धन, स्त्री, पुत्रादिक मळवानुं इच्छे ते निदानदोष.

७ संशयदोष—सामायिकनुं फळ हशे के नहीं होय? एवो विकल्प करे ते संशयदोष.

८ कषायदोष—सामायिक क्रोधादिकथी करवा बेसी जाय किंवा पछी क्रोध, मान, माया, लोभमां वृत्ति धरे ते कषायदोष.

९ अविनयदोष—विनय वगर सामायिक करे ते अविनयदोष.

१० अबहुमानदोष—भक्तिभाव अने उमंगपूर्वक सामायिक न करे ते अबहुमानदोष.

शिक्षापाठ ३८ सामायिकविचार भाग २.

मनना दश दोष कह्या हवे वचनना दश दोष कहुं छुं.

१ कुबोलदोष. सामायिकमां कुवचन बोलवुं ते कुबोलदोष

२ सहसात्कारदोष साहसथी अविचारपूर्वक वाक्य बोलवुं ते सहसात्कारदोष

३ [illegible]

४ निरपेक्षदोष. सामायिकमां शास्त्रनी दरकार विना वाक्य बोले ते निरपेक्षदोष.

५ संक्षेपदोष. सूत्रनापाठ इत्यादिक टुंकामां बोली नाखे; यथार्थ उच्चार करे नहीं ते संक्षेपदोष.

६ क्लेशदोष. कोइथी कंकाश करे ते क्लेशदोष.

७ विकथादोष. स्त्रियादि चार के सात प्रकारनी विकथा मांडी बेसे ते विकथादोष.

८ हास्यदोष. सामायिकमां कोइनी हांसी मश्करी करे ते हास्यदोष.

९ अशुद्धदोष. सामायिकमां सूत्रपाठ न्यूनाधिक अने अशुद्ध बोले ते अशुद्धदोष.

१० मुणमुणदोष. गडबडगोटाथी सामायिकमां सूत्रपाठ बोले जे पोते पण पूरुं मांड समजी शके ते मुणमुणदोष.

ए वचनना दश दोष कह्या; हवे कायाना बार दोष कहुं छउं.

१ सामायिकमां पगपर पग चडावी बेसे, ते श्री गुरु आदि प्रत्ये अविनयरूपआसन ते पहेलो अयोग्य आसनदोष.

२ चलासन दोष. डगडगते आसने बेसी सामायिक करे, कांवा वारंवार ज्यांथी उठवुं पडे तेवे आसने बेसे ते चलासनदोष.

३ चलदृष्टिदोष. कार्योत्सर्गमां आंखो चंचळ राखे ए चलदृष्टिदोष.

४ सावद्यक्रिया दोष. सामायिकमां कंइ पाप क्रिया के तेनी संज्ञा करे ते सावद्यक्रियादोष.

५ आलंबनदोष. भींतादिके ओठींगण दइ बेसे एथी त्यां बेठेला जंतुनो नाश थाय के तेने पीडा थाय तेमज पोताने प्रमादनी प्रवृत्ति थाय, ते आलंबन दोष.

६ आकुंचनप्रसारणदोष. हाथ पग संकोचे, लांबा करे ए आदि ते आकुंचनप्रसारणदोष.

७ आलसदोष अंग मरडे; टचाका वगाडे ए आदि ते आलस दोष.

८ मोटनदोष. आंगळी वगरे वांकी करे टचाका वगाडे ते मोटनदोष.

९ मलदोष. घरडा घरड करी सामायिकमां चल करी मेल खंखेरे ते मलदोष.

१० विमासणदोष. गळामां हाथ नाखी बेसे १० ते विमासण दोष.

११ निद्रादोष. सामायिकमां उंघ आवे ते निद्रादोष.

१२ वस्त्रसंकोचन. सामायिकमां टाढ प्रमुखनी भीतिथी वस्त्रथी शरीर संकोचे ते.

ए बत्रिश दूषणरहित सामायिक करवुं. पांच अतिचार टाळवा.

—:::—

शिक्षापाठ ३९ सामायिकविचार भाग ३.

एकाग्रता अने सावधानी विना ए बत्रीश दोषमांना अमुक दोष पण आवी जाय छे. विज्ञानवेत्ताओए सामायिकनुं जघन्य प्रमाण बे घडीनुं बांध्युं छे. ए व्रत सावधानी पूर्वक करवार्थी

परमशांति आपे छे. केटलाकनो ए बे घडीनो काळ, ज्यारे ज-तो नथी त्यारे तेओ बहु कंटाळे छे. सामायिकमां नवराश लइने बेसवाथी काळ जाय पण क्यांथी? आधुनिक काळमां सावधानीथी सामायिक करनारा बहुज थोडा छे. प्रतिक्रमण सामायिकनी साथे करवानुं होय छे त्यारे तो वखत जवो सुगम पडे छे. जो के एवा पामरो प्रतिक्रमण लक्ष पूर्वक करी शकता नथी तोपण केवळ नवराश करतां एमां जरूर कंइक फेर पडे छे. सामायिक पण पुरुं जेओने आवडतुं नथी तेओ बिचारा सामायिकमां पछी बहु मुंझाय छे. केटलाक भारे कर्मियो ए अवसरमां व्यवहारना प्रपंचो पण घडी राखे छे. आथी सामायिक बहु दोषित थाय छे.

विधिपूर्वक सामायिक न थाय ए बहु खेदकारक अने कर्मनी बाहुल्यता छे. साठ घडीना अहोरात्र व्यर्थ चाल्या जाय छे असंख्याता दिवसथी भरेलां अनंता काळचक्र व्यतित करतां पण जे सार्थक न थयुं ते बेघडीना विशुद्ध सामायिकथी थाय छे. लक्षपूर्वक सामायिक थवा माटे तेमां प्रवेश कर्या पछी चार लोगस्सथी वधारे लोगस्सनो कायोत्सर्ग करी चित्तनी कंइक स्वस्थता आणवी पछी सूत्रपाठ के उत्तम ग्रंथनुं मनन करवुं, वैराग्यनां उत्तम काव्यो बोलवां, पाछळनुं अध्ययन करेलुं स्मरण करी जवुं, नूतन अभ्यास थाय तो करवो कोइने शास्त्राधारथी बोध आपवो; एम सामायिकी काळ व्यतित करवो. मुनिराजनो जो समागम होय तो आगमवाणी सांभळवी अने ते मनन करवी; तेम न होय अने शास्त्र परिचय न होय तो विचक्षण

अभ्यासी पासेथी वैराग्यबोधक कथन श्रवण करवुं; किंवा कंइ अभ्यास करवो. ए सघळी योगवाइ न होय तो केटलोक भाग लक्षपूर्वक कायोत्सर्गमां रोकवो; अने केटलोक भाग महापुरुषोनां चरित्रकथामां उपयोगपूर्वक रोकवो; परंतु जेम बने तेम विवेकथी अने उत्साहथी सामायिकीकाळ व्यतित करवो. कंइ साहित्य न होय तो पंच परमेष्टिमंत्रनो जाप उत्साहपूर्वक करवो. पण व्यर्थ काळ काढी नाखवो नहीं. धीरजथी, शांतिथी अने यत्नाथी सामायिक करवुं. जेम बने तेम सामायिकमां शास्त्रपरिचय वधारवो.

साटघडीना अहोरात्रिमांथी बेघडी अवश्य बचावी सामायिकतो सद्भावथी करवुं.



शिक्षापाठ ४० प्रतिक्रमणविचार.

प्रतिक्रमण एटले पाछुं फरवुं—फरीथी जोइ जवुं एम एनो अर्थ थइ शकेछे. भावनी अपेक्षाए जे दिवसे जे वखते प्रतिक्रमण करवानुं थाय; ते वखतनी अगाउ अथवा ते दिवसे जे जे दोष थया होय ते एक पछी एक अंतरात्मथी जोइ जवा अने तेनो पश्चाताप करी ते दोषथी पाछुं वळवुं तेनुं नाम प्रतिक्रमण कहेवाय.

उत्तम मुनियो अने भाविक श्रावको संध्याकाळे अने रात्रिना पाछला भागमां दिवसे अने रात्रे एम अनुक्रमे थयेला दोषना पश्चाताप करे छे के तेनी क्षमापना इच्छेछे; एनुं नाम अहीं आगळ प्रतिक्रमण छे. ए प्रतिक्रमण आपणे पण अवश्य करवुं. कारण के आ आत्मा मन, वचन अने कायाना योगथी

अनेक प्रकारनां कर्म बांधे छे. प्रतिक्रमण सूत्रमां एनुं दोहन करेलुं छे; जेथी दिवस रात्रमां थयेलां पापनो पश्चात्ताप ते वडे थई शकेछे. शुद्धभाव वडे करी पश्चात्ताप करवाथी लेश पाप थतां परलोकभय अने अनुकंपा छूटेछे; आत्मा कोमळ थायछे. त्यागवा योग्य वस्तुनो विवेक आवतो जायछे. भगवत्साक्षीए अज्ञान आदि जे जे दोष विस्मरण थया होय तेनो पश्चात्ताप पण थई शकेछे. आम ए निर्जरा करवानुं उत्तम साधन छे.

एनुं आवश्यक एवुं पण नाम छे. आवश्यक एटले अवश्य करीने करवा योग्य; ए सत्य छे. ते वडे आत्मानी मलिनता क्षयथायछे, माटे अवश्य करवा योग्यजछे.

सायंकाळे जे प्रतिक्रमण करवामां आवेछे तेनुं नाम 'देवसीयपडिक्कमणुं' एटले दिवससंबंधी पापनो पश्चात्ताप; अने रात्रिना पाछला भागमां प्रतिक्रमण करवामां आवेछे ते 'राइयपडिक्कमणुं' कहेवाय छे. देवसीय अने राइय ए मागध भाषाना शब्दो छे. पखवाडीए करवानुं प्रतिक्रमण ते पाक्षिक अने संवत्सरे करवानुं ते संवत्सरिक कहेवाय छे. सत्पुरुषोए योजनाथी बांधेलो ए सुंदर नियम छे.

केटलाक सामान्य बुद्धिमानो एम कहेछे के दिवस अने रात्रिनुं सवारे प्रायश्चित्तरूप प्रतिक्रमण कर्युं होय तो कंई खोटुं नथी, परंतु ए कहेवुं प्रमाणिक नथी. रात्रिए अकस्मात् अमुक कारण आवी पडे के काळधर्म पामे तो दिवस संबंधी पण रही जाय.

प्रतिक्रमणसूत्रनी योजना बहु सुंदर छे. एनां मूळतत्त्व बहु

उत्तम छे. जेम बने तेम प्रतिक्रमण धीरजथी, समजाय एवी भाषाथी, शांतिथी, मननी एकाग्रताथी अने यत्नापूर्वक करवुं.



शिक्षापाठ ४१ भीखारीनो खेद भाग १.

एक पामर भीखारी जंगलमां भटकतो हतो. त्यां तेने भूख लागी. एटले ते विचारो लडथडीआं खातो खातो एक नगरमां एक सामान्य मनुष्यने घेर पहोंच्यो; त्यां जइने तेणे अनेक प्रकारनी आजीजी करी; तेना कालावालाथी करुणा पामीने ते गृहस्थनी स्त्रीए तेने घरमांथी जमतां वधेलुं मिष्टान्न आणी आप्युं. भोजन मळवाथी भीखारी बहु आनंद पामतो पामतो नगरनी बहार आव्यो, आवीने एक झाड तळे बेठो; त्यां जरा स्वच्छ करीने एक बाजुए अति जूनो थयेलो पोतानो जळनो घडो मूक्यो. एक बाजुए पोतानी फाटीतुटी मलिन गोदडी मूकी अने एक बाजुए पोते ते भोजन लइने बेठो. राजी राजी थतां एणे ते भोजन खाइने पुरुं कर्युं. पछी ओशिके एक पथ्थर मूकीने ते सुतो. भोजनना मदथी जरावारमां तेनी आंखो मिचाइ गइ. निद्रावश थयो एटले तेने एक स्वप्न आव्युं. पोते जाणे महा राजरीद्धिने पाम्योछे; सुंदर वस्त्राभूषण धारण कर्याछे; देश आखामां पोतानो विजयनो डंको वागी गयोछे; समीपमां तेनी आज्ञा अवलंबन करवा अनुचरो उभा थइ रह्या छे; आजुबाजु छडीदारो खमा खमा पोकारेछे; एक रमणिय महेलमां सुंदर पलंगपर तेणे शयन कर्युं छे; देवांगना जेवी स्त्रीओ तेना पग चांपेछे; पंखाथी एकबाजु-

एथी पंखानो मंद मंद पवन ढोळाय छे; एवा स्वप्नामां तेनो आत्मा चढी गयो. ते स्वप्नना भोग लेतां तेनां रोम उल्लसी गयां. एवामां मेघ महाराजा चढी आव्यो; वीजळीना झबकारा थवा लाग्या. सूर्य वादळांथी ढंकाइ गयो; सर्वत्र अंधकार पथराइ गयो; मुशलधार वर्षाद थशे एवुं जणायुं अने एटलामां गाजवीजथी एक प्रबळ कडाको थयो. कडाकाना अवाजथी भय पामीने ते पामर भीखारी विचारो जागी गयो.



शिक्षापाठ ४२ भीखारीनो खेद भाग २.

जुए छे तो जे स्थळे पाणीनो खोखरो घडो पड्यो हतो ते स्थळे ते घडो पड्यो छे ज्यां फाटी तुटी गोदडी पडी हती; त्यांज ते पडी छे. पोते जेवां मलिन अने फाटेलां कपडां धारण कर्यां हतां तेवां ने तेवां ते वस्त्रो शरीर उपर छे. नथी तलभार वध्युं के नथी जवभार घटयुं. नथी ते देश के नथी ते नगरी, नथी ते महेल के नथी ते पलंग; नथी ते चामरछत्र धरनारा के नथी ते छडीदारो; नथी ते स्त्रियो के नथी ते वस्त्रालंकारो; नथी ते पंखा के नथी ते पवन; नथी ते अनुचरो के नथी ते आज्ञा; नथी ते सुख विलास के नथी ते मदोन्मत्तता; भाइ तो पोते जेवा हता तेवाने तेवा देखाया. एथी ते देखाव जोइने ते खेद पाम्यो. स्वप्नामां में मिथ्या आडंबर दीठो तेथी आनंद मान्यो एमांनुं तो अहीं कशुं ए नथी स्वप्नाना भोग भोगव्या नहीं अने तेनु परिणाम जे खेद ते हुं भोगवुं छउं. एम ए पामर जीव पश्चात्तापमां पडी गयो.

अहो भव्यो ! भीखारीनां स्वप्नां जेवां संसारनां सुख अनित्य छे. स्वप्नामां जेम ते भीखारीए सुख समुदाय दीठो अने आनंद मान्यो तेम पामर प्राणीओ संसार स्वप्नाना सुखसमुदायमां आनंद माने छे. जेम ते सुख समुदाय जागृतिमां मिथ्या जणाया तेम ज्ञान प्राप्त थतां संसारनां सुख तेवां जणाय छे. स्वप्नाना भोग न भोगव्या छतां जेम भीखारीने खेदनी प्राप्ति थइ, तेम मोहांध प्राणीओ संसारनां सुख मानी बेसे छे; अने भोगव्या सम गणे छे. परंतु परिणामे खेद, दुर्गति अने पश्चात्ताप ले छे; ते चपळ अने विनाशी छतां स्वप्नाना खेद जेवुं तेनुं परिणाम रह्युं छे. ए उपरथी बुद्धिमान पुरुषो आत्महितने शोधे छे. संसारनी अनित्यतापर एक काव्य छे केः—

उपजाति.

विद्युतलक्ष्मी प्रभुता पतंग;
आयुष्य तेतो जळना तरंग;
पुरंदरी चाप अनंगरंग;
शुं राचिये त्यां क्षणनो प्रसंग !

विशेषार्थः—लक्ष्मी वीजळी जेवी छे. वीजळीनो चमकार जेम थइने ओलवाइ जाय छे. तेम लक्ष्मी आवीने चाली जाय छे. अधिकार पतंगना रंग जेवो छे. पतंगनो रंग जेम चार दिवसनी चटकी छे; तेम अधिकार मात्र थोडो काळ रही हाथमांथी जतो रहे छे. आयुष्य पाणीना मोजा जेवुं छे पाणीनो हिलोळो आव्यो के गयो तेम जन्म पाम्या अने एक देहमां

रह्या के न रह्या त्यां बीजा देहमां पडवुं पडे छे. कामभोग आकाशमां उत्पन्न थतां इंद्रना धनुष्य वर्षाकाळमां थइने क्षणवारमां लय थई जाय छे; तेम यौवनमां कामना विकार फळीभूत थई जरा वयमां जता रहे छे; टुंकामां हे जीव ! ए सघळी वस्तुओनो संबंध क्षणभर छे; एमां प्रेमबंधननी सांकळे बंधाईने शुं राचवुं ! तात्पर्य ए सघळां चपळ अने विनाशी छे, तुं अखंड अने अविनाशी छे; माटे तारा जेवी नित्य वस्तुने प्राप्त कर ! ए बोध यथार्थ छे.

—:०:—

शिक्षापाठ ४३ अनुपम क्षमा.

क्षमा ए अंतर्शत्रु जीतवामां खड्गछे. पवित्र आचारनी रक्षा करवामां बख्तर छे. शुद्धभावे असह्य दुःखमां, समपरिणामथी क्षमा राखनार मनुष्य भवसागर तरी जाय छे.

कृष्ण वसुदेवना गजसुकुमार नामना नाना भाइ महास्वरूपवान, सुकुमार मात्र बारवर्षनी वये भगवान् नेमिनाथनी पासेथी संसारत्यागी थइ स्मशानमां उग्र ध्यानमां रह्या हता. त्यारे तेओ एक अद्भुत क्षमामय चारित्रथी महासिद्धिने पामी गया ते अहीं कहुंछुं.

सोमल नामना ब्राह्मणनी सुरूपवर्णसंपन्न पुत्री जोडे गजसुकुमारनुं सगपण कर्युं हतुं पण्तुं लग्न थया पहेलां गजसुकुमार तो संसार त्यागी गया. आथी, ए वातनो पुत्रीनुं सुख जवाना द्वेषथी ते सोमल ब्राह्मणने भयंकर क्रोध व्याप्यो गजसुकुमारनो शोध करतो करतो ए स्मशानमां ज्यां महामुनि गजसुकुमार एकाग्र

विशुद्ध भावथी कायोत्सर्गमां छे, त्यां आवी पहोंच्यो. कोमळ गजसुकुमारना मायापर चीकणी माटीनी वाड करी; अने अंदर धगधगता अंगारा भर्या, इंधन पूर्युं एटले महा ताप थयो. एथी गजसुकुमारनो कोमळदेह बळवा मंड्यो एटले ते सोमल जतो रह्यो. ते वखतना गजसुकुमारना असह्य दुःखनुं वर्णन केम थई शके? त्यारे पण तेओ समभावपरिणाममां रह्या. किंचित् क्रोध के द्वेष एना हृदयमां जन्म पाम्यो नहीं. पोताना आत्माने स्थितिस्थापक करीने बोध दीधो के जो! तुं एनी पुत्रीने परण्यो होत तो ए कन्यादानमां तने पाघडी आपत. ए पाघडी थोडा वखतमां फाटी जाय तेवी अने परिणामे दुःखदायक थात. आ एनो बहु उपकार थयो के ए पाघडी बदल एणे मोक्षनी पाघडी बंधावी. एवां विशुद्ध परिणामथी अडग रही समभावथी असह्य वेदना सहीने तेओ सर्वज्ञ सर्वदर्शी थई अनंत जीवन सुखने पाम्या. केवी अनुपम क्षमा अने केवुं तेनुं सुंदर परिणाम! तत्त्वज्ञानीओनां वचन छे के आत्मा मात्र स्वसद्भावमां आववो जोइए; अने ते आव्यो तो मोक्ष हथेळीमांज छे. गजसुकुमारनी नामांकित क्षमा केवो शुद्ध बोध करेछे!

शिक्षापाठ ४८ राग.

श्रमण भगवान् महावीरना अग्रेसर गणधर गौतमनुं नाम तमे बहुवार सांभळ्युंछे. गौतमस्वामीना बोधेला केटलाक शिष्यो, केवळज्ञान पाम्या छतां गौतम पोते केवळज्ञान पाम्या नहोता, कारण के भगवान महावीरनां अंगोपांग, वर्ण, वाणीरूप इत्यादिपर

हतु गौतमने मोह हतो. निर्ग्रंथप्रवचननो निष्पक्षपाती न्याय एवो छे के गमे ते वस्तुपरनो राग दुःखदायक छे. राग ए मोह अने मोह ए संसारज छे. गौतमना हृदयथी ए राग ज्यां सुधी खस्यो नहीं त्यां सुधी तेओ केवळज्ञान पाम्या नहीं. श्रमण भगवान ज्ञातपुत्र ज्यारे अनुपमयसिद्धिने पाम्या, त्यारे गौतम नगरमांथी आवता हता. भगवानना निर्वाण समाचार सांभळी तेओ खेद पाम्या. विरहथी तेओ अनुराग वचनथी बोल्या. हे महावीर! तमे मने साथे तो न लइगया परंतु संभार्योय नहीं. मारी प्रीति सामी तमे दृष्टि पण करी नहीं! आम तमने छाजतुं नहोतुं. एवा विकल्पो थतां थतां तेनो लक्ष फर्यो ने ते निरागश्रेणिए चड्या; हुं बहु मूर्खता करु छउं. ए वीतराग—निर्विकारी अने निरागी ते मारामां केम मोह राखे? एनी शत्रु अने मित्रपर केवळ समान दृष्टि हती! हुं ए निरागीनो मिथ्या मोह राखुं छउं! मोह संसारनुं प्रबळ कारण छे; एम विचारतां विचारता तेओ शोक तजीने निरागी थया. एटले अनंतज्ञान प्रकाशित थयुं; अने प्रांते निर्वाण पधार्या.

गौतममुनिनो राग आपणने बहु सूक्ष्म बोध आपे छे. भगवानपरनो मोह गौतम जेवा गणधरने दुःखदायक थयो तो पछी संसारनो, ते वळी पामर आत्माओनो मोह केवुं अनंत दुःख आपतो हशे! संसार[illegible] राग अने द्वेष ए बे रूपी बळद छे. ए न [illegible] ज्यां राग नथी त्यां द्वेष नथी, आ [illegible] कर्मबंधनुं कारण छे; एना [illegible]

शिक्षापाठ ४५ सामान्य मनोर्थ.

सवैया.

मोहिनिभावविचार आधीन थइ,
ना निरखुं नयने परनारी;
पत्थरतुल्य गणुं परवैभव,
निर्मळ तात्विक लोभ समारी!
द्वादश व्रत्त अने दिनता धरि,
सात्विक थाउं स्वरुप विचारी;
ए मुजनेम सदा शुभ क्षेमक,
नित्य अखंड रहो भवहारी. १
ते त्रिशलातनये मन चिंतवि,
ज्ञान विवेक विचार वधारुं;
नित्य विशोध करी नव तत्वनो,
उत्तम बोध अनेक उचारुं;
संशय बीज उगे नहिं अंदर,
जे जिननां कथनो अवधारुं.
राज्य, सदा मुज एज मनोरथ,
धार, थशे अपवर्ग, उतारु. २

शिक्षापाठ ४६ कपिलमुनि भाग १.

कौशांबी नामनी एक नगरी हती; त्यांना राजदरबारमां राज्यनां आभूषणरूप काश्यप नामनो एक शास्त्री रहेतो हतो.

एनी स्त्रीनुं नाम श्रीदेवी हतुं; तेना उदरथी कपिल नामनो एक पुत्र जन्म्यो हतो; ते पंदर वर्षनो थयो त्यारे तेना पिता परधाम गया. कपिल लाडपाडमां उछरेलो होवाथी कंइ विशेष विद्वत्ता पाम्यो नहोतो; तेथी एना पितानी जगो कोइ बीजा विद्वानने मळी; काश्यपशास्त्री जे पुंजी कमाइ गया हता ते कमावामां अशक्त एवा कपिले खाइने पूरी करी. श्रीदेवी एक दिवस घरना बारणामां ऊभी हती त्यां बे चार नोकरो सहित पोताना पतिनी शास्त्रीयपदवी पामेलो विद्वान जतो तेना जोवामां आव्यो. घणा मानथी जता आ शास्त्रीने जोइने श्रीदेवीने पोतानी पूर्व स्थितिनुं स्मरण थइ आव्युं. ज्यारे मारा पति आ पदवीपर हता त्यारे हुं केवुं सुख भोगवती हती! ए मारुं सुख तो गयुं परंतु मारो पुत्र पण पुरुं भण्यो नहीं. एम विचारमां डोलतां डोलतां तेनी आंखमांथी दड दड आंसु खरवा मंड्यां. एवामां फरतो फरतो कपिल त्यां आवी पहोंच्यो; श्रीदेवीने रडती जोइ तेनुं कारण पूछ्युं; कपिलना बहु आग्रहथी श्रीदेवीए जे हतुं ते कही बताव्युं. पछी कपिल बोल्यो जो मा! हुं बुद्धिशाळि छउं, परंतु मारी बुद्धिनो उपयोग जेवो जोइए तेवो थइ शक्यो नथी. एटले विद्या वगर हुं ए पदवी पाम्यो नहीं. तुं कहे त्यां जइने हवे हुं मारायी बनती विद्या साध्य करुं; श्रीदेवीए खेद साथे कह्युं, ए तारायी बनी शके नहीं. नहीं तो आर्यावर्तनी मर्यादापर आवेली श्रावस्ति नगरीमां इंद्रदत्त नामनो तारा पितानो मित्र रहे छे, ते अनेक विद्यार्थियोने विद्यादान दे छे; जो तारायी त्यां जवाय तो धारेली सिद्धि थाय खरी. एक बे दिवस रोकाइ सज थइ अस्तु कही कपिलजी पंथे पड्या.

अवध वीततां कपिल श्रावस्तिए शास्त्रीजीने घेर आवी प-होंच्या. प्रणाम करीने पोतानो इतिहास कही बताव्यो. शास्त्री-जीए मित्रपुत्रने विद्यादान देवाने माटे बहु आनंद देखाड्यो; पण कपिल आगळ कंइ पुंजी नहोती के ते तेमांथी खाय अने अभ्यास करी शके; एथी करीने तेने नगरमां याचवा जवुं पडतुं हतुं. याचतां याचतां बपोर थइ जता हता, पछी रसोइ करे अने जमे त्यां सांजनो थोडो भाग रहेतो हतो. एटले कंइ अभ्यास करी शकतो नहोतो. पंडिते तेनुं कारण पूछयुं त्यारे कपिले ते कही बताव्युं पंडित तेने एक गृहस्थ पासे तेडी गया. ते गृहस्थे कपिलनी अनुकंपा खातर एने हमेशां भोजन मळे एवी गोठवण एक विधवा ब्राह्मणीने त्यां करी दीधी. जेथी कपिलने ए एक चिंता ओछी थइ.



शिक्षापाठ ४७ कपिलमुनि भाग २.

ए नानी चिंता ओछी थइ त्यां बीजी मोटी जंजाळ ऊभी थइ. भद्रिक कपिल हवे युवान् थयो हतो; अने जेने त्यां ते ज-मवा जतो ते विधवा बाइ पण युवान् हती. तेनी साथे तेना घ-रमां बीजुं कोइ माणस नहोतुं. हमेशनो परस्परनो वातचितनो संबंध वध्यो. वधीने हास्यविनोदरूपे थयो; एम करतां करतां बन्नेने प्रीति बंधाइ. कपिल तेनाथी लुब्धायो! एकांत बहु अ-निष्ट चीज छे!!

विद्या प्राप्त करवानुं ते भूली गयो. गृहस्थ तरफथी मळतां सीधांथी बन्नेनुं मांड पुरुं थतुं हतुं; पण लुगडांलत्तांना वांधा

थया. कपिले गृहस्थाश्रम मांडी बेठां जेवुं करी मूक्युं. गमे तेवो छतां हळु-कर्मी जीव होवाथी संसारनी विशेष लोताळनी तेने माहिती पण नहोती. पैसा केम पेदा करवा ते विचारो ते जाणतो पण नहोतो. चंचळ स्त्रीए तेने रस्तो बताव्यो के मुंझावामां कंइ वळवानुं नथी; परंतु उपायथी सिद्धि छे. आ गामना राजानो एवो नियम छे के सवारमां पहेलो जइ जे ब्राह्मण आशिर्वाद आपे तेने ते बे मासा सोनुं आपेछे. तां जो जइ शको अने प्रथम आशिर्वाद आपी शको तो ते बे मासा सोनुं मळे. कपिले ए वातनी हा कही. आठ दिवस सुधी आंटा खाधा पण वखत वीत्या पछी जाय एटले कंइ वळे नहीं. एथी तेणे एक दिवस एवो निश्चय कर्यो के जो हुं चोकमां सुउंतो चीवट राखीने उठाशे. पछी ते चोकमां सुतो; अधरात भागतां चंद्रनो उदय थयो. कपिले प्रभात समीप जाणीने मुठीओ वाळीने आशिर्वाद देवा माटे दोडतां जवा मांडयुं. रक्षपाळे चोर जाणीने तेने पकडी राख्यो. एक करतां बीजुं थइ पडयुं. प्रभात थयो एटले रक्षपाळे तेने लइ जइने राजानी समक्ष उभो राख्यो. कपिल बेभान जेवो उभो रह्यो; राजाने तेनां चोरनां लक्षण भास्यां नहीं. एथी तेने सघळुं वृत्तांत पूछयुं. चंद्रना प्रकाशने सूर्यसमान गणनारनी भद्रिकतापर राजाने दया आवी. तेनी दरिद्रता टाळवा राजानी इच्छा थइ एथी कपिलने कह्युं; आशिर्वादने माटे थइ ताहरे जो एटली तरखड थइ पडी हो तो हवे ताहरी इच्छा पूरतुं तुं मागी ले. हुं तने आपीश. कपिल थोडीवार मूढ जेवो रह्यो. एथी राजाए कह्युं, केम विप्र, कंइ मागता नथी! कपिले उत्तर

आव्यो; मारुं मन हजु स्थिर थयुं नथी; एटले शुं मागवुं ते सूझतुं नथी. राजाए सामेना बागमां जइ त्यां बेसीने स्वस्थता पूर्वक विचार करी कपिलने मागवानुं कह्युं. एटले कपिल ते बागमां जइने विचार करवा बेठो.



शिक्षापाठ ४८ कपिलमुनि भाग ३.

बे मासा सोनुं लेवानी जेनी इच्छा हती ते कपिल हवे तृष्णातरंगमां घसडायो. पांच महोर मागवानी इच्छा करी तो त्यां विचार आव्यो के पांचथी कंइ पुरुं थनार नथी. माटे पंचवीश महोर मागवी. ए विचार पण फर्यो. पंचवीश महोरथी कंइ आखुं वर्ष उतराय नहीं माटे सो महोर मागवी; त्यां वळी विचार फर्यो. सो महोरे बे वर्ष उतरी, वैभव भोगवीए; पाछो दुःखनो दुःख. माटे एक हजार महोरनी याचना करवी ठीक छे; पण एक हजार महोर छोकरां छैयांनां बेचार खर्च आवे के एवुं थाय तो पुरुं पण शुं थाय! माटे दश हजार महोर मागवी के जेथी जींदगी पर्यंत पण चिंता नहीं. त्यां वळी इच्छा फरी. दश हजार महोर खवाई जाय एटले पछी मुडी वगरना थई रहेवुं पडे. माटे एक लाख महोरनी मागणी करुं के जेना व्याजमां बधा वैभव भोगवुं; पण जीव! लक्षाधिपति तो घणाय छे. एमां आपणे नामांकित क्यांथी थवाना! माटे करोड महोर मागवी के जेथी महान् श्रीमंतता कहेवाय. वळी पाछो रंग फर्यो. महान् श्रीमंतताथी पण घेर अमल कहेवाय नहि. माटे राजानुं अर्धुं राज्य मागवुं; पण जो अर्धु

राज्य मागीश तोय राजा मारा तुल्य गणाशे. अने वळी हुं पनो याचक पण गणाइश. माटे मागवुं तो आखुं राज्य मागवुं एम ए तृष्णामां डूब्यो; परंतु तुच्छ संसारी एटले पाछो वळ्यो; भला जीव! आपणे एवी कृतघ्नता शा माटे करवी पडे के जे आपणने इच्छा प्रमाणे आपवा तत्पर थयो तेनुंज राज्य लई लेवुं; अने तेनेज भ्रष्ट करवो! खरुं जोतां तो एमां आपणीज भ्रष्टता छे. माटे अर्धुं राज्य मागवुं; परंतु ए उपाधि मारे नथी जोइती! त्यारे नाणांनी उपाधि पण क्यां ओछी छे! माटे करोड लाख मूकीने सो बसें महोरज मागी लेवी. जीव, सो बसें महोर हमणां आवशे तो पछी विषयवैभवमांज वखत चाल्यो जशे; अने विद्याभ्यास पण धर्यो रहेशे; माटे पांच महोर हमणां तो लई जवी पछीनी वात पछी. अरे! पांच महोरनीए हमणां कंइ जरुर नथी; मात्र बे मासा सोनुं लेवा आव्यो हतो तेज मागी लेवुं. आ तो जीव बहु थइ. तृष्णासमुद्रमां तें बहु गोथां खाधां. आखुं राज्य मागतां पण तृष्णा छीपती नहोती. मात्र संतोष अने विवेकथी ते घटाडी तो घटी. ए राजा जो चक्रवर्ति होत तो पछी हुं एथी विशेषुं मागी शकत! अने विशेष ज्यां सुधी न मळत त्यां सुधी मारी तृष्णा समात पण नहीं; ज्यां सुधी तृष्णा समात नहीं त्यां सुधी हुं सुखी पण नहोत. एटलेथी पण मारी तृष्णा टळे नहीं तो पछी बे मासाथी करीने केम टळे! एनो आत्मा सवळीए आव्यो अने ते बोल्यो: हवे मारे बे मासानुं पण कंइ काम नथी; बे मासाथी वधीने हुं केटले सुधी पहोंच्यो!

सुख तो संतोषमांज छे. तृष्णा ए संसार वृक्षनुं बीज छे. एनो हे जीव, तारे शुं खपछे! विद्या लेतां तुं विषयमां पडी गयो; विषयमां पडवाथी आ उपाधिमां पड्यो; उपाधि वडे करीने अनंत तृष्णा समुद्रना तरंगमां तुं पड्यो. एक उपाधिमांथी आ संसारमां एम अनंत उपाधि वेठवी पडेछे. एथी एनो त्याग करवो उचितछे. सत्य संतोष जेवुं निरुपाधि सुख एके नथी. एम विचारतां विचारतां—तृष्णा समाववाथी ते कपिलनां अनेक आवरण क्षय थयां. तेनुं अंतःकरण प्रफुल्लित अने बहु विवेकशील थयुं. विवेकमां ने विवेकमां उत्तम ज्ञानवडे ते स्वात्मनो विचार करी शक्यो. अपूर्वश्रेणिए चढी ते केवलज्ञानने पाम्यो.

तृष्णा केवी कनिष्ट वस्तु छे! ज्ञानीओ एम कहेछे के तृष्णा आकाशना जेवी अनंत छे; निरंतर ते नवयौवन रहेछे. कंइक चाहना जेटलुं मळ्युं एटले चाहना छे. संतोष एज कल्पवृक्ष छे; अने एज मात्र मनोवांछना पूर्ण करे छे.

शिक्षापाठ ४९ तृष्णानी विचित्रता.

मनहर छंद.

(एक गरीबनी वधती गयेली तृष्णा)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

. ३

मळी नृपताइ ज्यारे ताकी देवताइअने,
दीठी देवताइ त्यारे ताकी शंकराइने;
अहो राज्यचंद्रमानो मानो शंकराइ मळी (!)
वधे तृशनाइ तोय जाय न मराइने. १

(२)

करोचली पडी दाढी डाचांतणो दाट वाळ्यो,
काळी केशपटी विषे, श्वेतता छवाइ गइ;
सूंघवुं सांभळवुंने देखवुं ते मांडी वळ्युं,
तेम दांत आवली ते, खरी, के खवाइ गइ;
वळी केड वांकी हाड गयां अंगरंग गयो,
उठवानी आय जता लाकडी लेवाइ गइ;
अरे! राज्यचंद्र एम, युवानी हराइ पण,
मनथी न तोय रांड, ममता मराइ गइ. २

(३)

करोडोना करजना, शीरपर डंका वागे,
रोगथी रुंधाइ गयुं, शरीर सूकाइने;
पुरपति पण माथे, पीडवाने ताकी रह्यो,
पेट तणी वेठ पण, शके न पुराइने;
पितृ अने परणी ते, मचावे अनेक धंध,
पुत्र, पुत्री भाखे खाउं खाउं दुःखदाइने,
अरे राज्यचंद्र तोय जीव झावा दावा करे,
जंजाळ छडाय नहीं तजी तृशनाइने. ३

(४)

पड़ी ईण माटी अचानक जेवो थयो पछी,
जीवन दीपक पाम्यो केवळ पुण्याथी,
छेल्ली इसे धरयो भारी भाळ्यु त्यां एम भाख्युं,
हवे हाथे मारी पाप तो नो दीठ माइने;
हाथने हलावी त्यां तो खीजी बुढे सूचव्युं ए,
बोल्या विना बेस बाळ तारी चतुराईने!
अरे राजचंद्र देखो देखो आशापाश केवो!
जतां गई नहीं डोशे ममता मराईने! ५

शिक्षापाठ ५० प्रमाद.

धर्मनुं अनादरपणुं, उन्माद, आळस, कषाय ए सघळां प्रमादनां लक्षण छे.

भगवाने उत्तराध्ययन सूत्रमां गौतमने कह्युं के, हे गौतम, मनुष्यनुं आयुष्य डाभनी अणीपर पडेला जळना बिंदु जेवुं छे. जेम ते बिंदुने पडतां वार लागती नथी तेम आ मनुष्यायु जतां वार लागती नथी. ए बोधना काव्यमां चोथी कडी स्मरणमां अवश्य राखवा जेवी छे. 'समयं गोयम मा पमायए' - ए पवित्र वाक्यना बे अर्थ थाय छे. एक तो ए के हे गौतम! समय एटले अवसर पामीने प्रमाद न करवो. अने बीजो ए के निमेषोन्मेषमां चाल्यो जतो असंख्यातमो भाग ते समय कहेवाय छे तेटलो वखत पण प्रमाद न करवो. कारण देह क्षणभंगुर छे; काळशिकारी माथे धनुष्यबाण लईने ऊ

लीधो के लेशे एम जंजाळ थइ रही छे; त्यां प्रमादथी धर्म कर्त्तव्य कराुं रही जशे.

अति विचिक्षण पुरुषो संसारनी सर्वोपाधि त्यागीने अहो रात्र धर्ममां सावधान थायछे; पळनो पण प्रमाद करता नथी. विचक्षण पुरुषो अहो रात्रना थोडा भागने पण निरंतर धर्मकर्त्तव्यमां गाळेछे; अने अवसरे अवसरे धर्मकर्त्तव्य करता रहे छे. पण मूढ पुरुषो निद्रा, आहार, मोजशोख अने विकथा तेमज रंगरागमां आयु व्यतित करी नाखेछे. एनुं परिणाम तेओ अधोगति रुप पामेछे.

जेम बने तेम यत्न अने उपयोगथी धर्मने साध्य करवो योग्य छे. साठघडीना अहोरात्रमां वीशघडी तो निद्रामां गाळीए छीए. बाकीनी चाळीश घडी उपाधि, टेलटप्पा अने रझळवामां गाळीए छीए. ए करतां ए साठघडीना वखतमांथी बे चारघडी विशुद्ध धर्मकर्त्तव्यने माटे उपयोगमां लइए तो बनी शके एवुं छे; एनुं परिणाम पण केवुं सुंदर थाय !

पळ ए अमूल्य चीज छे; चक्रवर्त्ती पण एकपळ पामवा आखी रिद्धि आपे तो पण ते पामनार नथी. एक पळ व्यर्थ खोवाथी एक भव हारी जवा जेवुंछे. एम तत्त्वनी दृष्टिए सिद्ध छे !

—:०:—

शिक्षापाठ ५१ विवेक एटले शुं ?

लघु शिष्योः—भगवन् ! आप अमने स्थळे स्थळे कहेता आवो छो के विवेक ए महान् श्रेयस्कर छे. विवेक ए अंधारामां पडेला आत्माने ओळखवानो दीवो छे. विवेक वडे

करीने धर्म टकेछे. विवेक नथी त्यां धर्म नथी तो विवेक एटले शुं ? ते अमने कहो.

गुरुः—आयुष्यमन्तो ! सत्यासत्यने तेने स्वरूपे करीने समजवां तेनुं नाम विवेक.

लघु शिष्योः—सत्यने सत्य अने असत्यने असत्य कहेवानुंतो बधाय समजे छे. त्यारे महाराज ! एओ धर्मनुं मूळ पाम्या कहेवाय ?

गुरुः—तमे जे वात कहोछो तेनुं एक दृष्टांत आपो जोइए.

लघुशिष्योः—अमे पोते कडवाने कडवुंज कहीए छीए मधुरांने मधुर कहीए छीए. झेरने झेर ने अमृतने अमृत कहीए छीए.

गुरुः—आयुष्यमन्तो ! ए बधां द्रव्य पदार्थ छे; परंतु आत्माने कयि कडवाश, कयि मधुराश कयुं झेर अने कयुं अमृत छे ? ए भावपदार्थोनी एथी कंइ परीक्षा थइ शके ?

लघुशिष्यः—भगवन् ! ए संबंधी तो अमारुं लक्ष पण नथी.

गुरुः—त्यारे एज समजवानुं छे के ज्ञान-दर्शनरुप आत्माना सत्य भाव पदार्थने अज्ञान अने अदर्शन रुप असत वस्तुए घेरी लीधा छे, एमां एटली बधी मिश्रता थइ गइ छे के परीक्षा करवी अति अति दुर्लभ छे; संसारनां सुखो अनंतिवार आत्माए भोगव्यां छतां, तेमांथी हजु पण मोह टळ्यो नहीं, अने तेने अमृत जेवो गण्यो ए अविवेक छे कारण संसार कडवो छे. कडवा पिवाकने आपेछे. तेमज वैराग्य ने ए कडवा पिवाकनुं औषध छे, तेने कडवो गण्यो; आ पण अवि

वेक छे. ज्ञान दर्शनादिगुणो अज्ञानदर्शने घेरी लइ जे मिश्रता करी नांखी छे ते ओळखी भावअमृतमां आववुं; एनुं नाम विवेक छे. कहो त्यारे हवे विवेक ए केवी वस्तु ठरी!

लघु शिष्यो:—अहो! विवेक एज धर्मनुं मुळ अने धर्म रक्षक कहेवाय छे ते सत्यछे. आत्म स्वरुपने विवेक विना ओळखी शकाय नहीं ए पण सत्यछे. ज्ञान, शील, धर्म तत्व अने तप ए सघळां विवेक विना उदय पामे नहीं ए आपनुं कहेवुं यथार्थ छे. जे विवेकी नथी ते अज्ञानी अने मंद छे. तेज पुरुष मतभेद अने मिथ्या दर्शनमां लपटाइ रहे छे. आपनी विवेक संबंधीनी शिक्षा अमे निरंतर मनन करीशुं.

शिक्षापाठ ५२ ज्ञानीओए वैराग्य शा माटे बोध्यो ?

संसारनां स्वरुप संबंधी आगळ केटलुंक कहेवामां आव्युं छे. ते तमने लक्षमां हशे.

ज्ञानीओए एने अनंत खेदमय, अनंत दुःखमय, अव्यवस्थित, चळविचळ, अने अनित्य कह्यांछे आ विशेषणो लगाडवा पहेलां एमणे संसारसंबंधी संपूर्ण विचार करेलो जणायछे. अनंत भवनुं पर्यटन, अनंतकाळनुं अज्ञान, अनंतजीवननो व्याघात, अनंत मरण, अनंतशोक ए वडे करीने संसारचक्रमां आत्मा भम्या करेछे. संसारनी देखाती इंद्रवारणा जेवी सुंदर मोहिनीए आत्माने तद्रूप लीन करी नांख्यो छे. ए जेवुं सुख आत्माने क्यांय भासतुं नथी. मोहिनीथी सत्यसुख अने एनुं

स्वरुप जोवानी एणे आकांक्षा पण करी नथी. पतंगनी जेम दीपक प्रत्ये मोहिनी छे तेम आत्मानी संसारसंबंधे मोहिनी छे. ज्ञानीओ ए संसारने क्षणभर पण सुखरुप कहेता नथी. ए संसारनी तल जेटली जग्यो पण झेर विना रही नथी. एक भूंडथी करीने एक चक्रवर्त्ति सुधी भावे करीने सरखापणुं रह्युं छे. एटले चक्रवर्त्तीनी संसार संबंधमां जेटली मोहिनी छे; तेटलीज बल्के तेथी विशेष भूंडने छे. चक्रवर्त्ति जेम समग्र प्रजापर अधिकार भोगवे छे तेम तेनी उपाधि पण भोगवेछे. भूंडने एमांनुं कशुंए भोगववुं पडतुं नथी. अधिकार करतां उलटी उपाधि विशेष छे. चक्रवर्त्तिनो पोतानी पत्नि प्रत्येनो जेटलो प्रेम छे; तेटलोज अथवा तेथी विशेष भुंडनो पोतानी भूंडणी प्रत्ये प्रेम रहो छे. चक्रवर्त्ति भोगथी जेटलो रस लेछे. तेटलोज रस भूंड पण मानी बेठुं छे. चक्रवर्त्तिनी जेटली वैभवनी बहोळता छे; तेटलीज उपाधि छे. भुंडने एना वैभवना प्रमाणमां छे. बन्ने जन्म्यां छे अने बन्ने मरवानां छे. आम सूक्ष्म विचारे जोतां क्षणिकताथी. रोगथी. जरा वगेरेथी बन्ने ग्राहित छे. द्रव्ये चक्रवर्त्ति समर्थ छे. महा पुन्यशाळी छे. मुख्यत्वे शातावेदनीय भोगवे छे. अने भुंड बिचारुं अशाता-वेदनीय भोगवि रह्युं छे. बन्नेने अशाता—शातापण छे; परंतु चक्रवर्त्ति महा समर्थ छे. पण जो ए जीवन पर्यंत मोहांध रह्यो तो सघळी बाजी हारी जवा जेवुं करेछे. भुंडने पण तेमज छे. चक्रवर्त्ती शलाकापुरुष होवाथी भुंडथी ए रूए एनी तुल्यता ज नथी; परंतु आ स्वरूपे छे. भोग भोगववामां बन्ने तुच्छ छे; बन्नेनां शरीर पर

मांसादिकनां छे. असाताथिथी पराधिन छे संसारनी आ उत्तमोत्तम पद्वी आवी रही तेमां आवुं दुःख, आवी क्षणिकता, आवी तुच्छता, आवुं अंधपणुं ए रह्युं छे तो पछी बीजे सुख शा माटे गणवुं जोइए? ए सुख नथी छतां सुख गणो तो जे सुख भयवाळां अने क्षणिक छे ते दुःखज छे. अनंत ताप, अनंत शोक, अनंत दुःख जोइने ज्ञानीओए ए संसारने पुंठ दीधीछे; ते सत्य छे. ए भणी पाछुं वाळी जोवा जेवुं नथी. त्यां दुःख दुःखने दुःखज छे. दुःखनो ए समुद्र छे.

वैराग्य एज अनंतसुखमां लइ जनार उत्कृष्ट भोमियोछे.

शिक्षापाठ ५३ महावीरशासन.

हमणां जे जिन शासन प्रवर्त्तमान छे ते भगवान महावीरनुं प्रणीत करेलुं छे. भगवान महावीरने निर्वाण पधार्यां २४०० वर्ष थइ गयां; मगध देशना क्षत्रियकुंड नगरमां सिद्धार्थ राजानी राणी त्रिशलादेवी क्षत्रियाणीनी कुखे भगवान महावीर जन्म्या. महावीर भगवानना मोटा भाइनुं नाम नंदीवर्द्धमान हतुं. तेमनी स्त्रीनुं नाम यशोदा हतुं. त्रीश वर्ष तेओ गृहस्थाश्रममां रह्या. एकांतिक विहारे साडाबार वर्ष एक पक्ष तपादिक सम्यकाचारे, एमणे अशेष घनघाती कर्मने बाळीने भस्मिभूत कर्यां; अनुपमेय केवळज्ञान अने केवळदर्शन ऋजुवालिका नदीने किनारे पाम्या एकंदर बहोतेर वर्षनी लगभग आयु भोगवी सर्व कर्म भस्मिभूत करी सिद्धस्वरूपने पाम्या. वर्त्तमान चोवीशीना ए छेल्ला जिनेश्वर हता.

एओनुं आ धर्मतीर्थ प्रवर्त्ते छे ते २१००० हजार वर्ष एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी प्रवर्त्तशे; एम भगवतीसूत्रमां कह्युं छे.

आ काळ दश आश्चर्यथी युक्त होवाथी ए श्री धर्मतीर्थ प्रत्ये अनेक विपत्तिओ आवी गइ छे. आवे छे; अने आवशे.

जैनसमुदायमां परस्पर मतभेद बहु पडी गया छे. परस्पर निंदाग्रंथोथी जंजाळ मांडी बेठा छे. मध्यस्थ पुरुषो मतमतांतरमां नहीं पडतां विवेक विचारे जिनशिक्षानां मूळ तत्वपर आवे छे; उत्तम शीलवान मुनियोपर भाविक रहे छे. अने सत्य एकाग्रताथी पोताना आत्माने दमेछे.

काळप्रभावने लीधे वखते वखते शासन कंइ न्यूनाधिक प्रकाशमां आवे छे.

'वंक जडाय पछिमा' एवुं उत्तराध्ययन सूत्रमां वचन छे, एनो भावार्थ ए छे के छेल्ला तीर्थंकर (महावीरस्वामी) ना शिष्यो वांका अने जड थशे. अने तेनी सत्यता विषे कोइने बोलवुं रहे तेम नथी. आपणे क्यां तत्वनो विचार करीए छीए ! क्यां उत्तम शीलनो विचार करीए छीए ! नियमित वखत धर्ममां क्यां व्यतित करीए छीए ! धर्मतीर्थना उदयने माटे क्यां लक्ष राखीए छीए ! क्यां दाझवडे धर्मतत्वने शोधीए छीए ! श्रावक कुळमां जन्म्या एथी करीने श्रावक, ए वात आपणे भावे करीने मान्य करवी जोइती नथी; एने माटे जोइता आचार–ज्ञान–शोध के एमाना कंइ विशेष लक्षणो होय

तेने श्रावक मानिये तो ते यथायोग्य छे. द्रव्यादिक केटलाक प्रकारनी सामान्य दया श्रावकने घेर जन्मे छे अने ते पाळेछे, ए वात वखाणवा लायक छे; पण तत्वने कोइकज जाणेछे; जाण्या करतां शाशी शंका करनारा अर्धदग्धो पण छे; जाणीने अहंपद करनार पण छे. परंतु जाणीने तत्वना कांटामां तोळनारा कोइक विरलाज छे. परंपर आम्नायथी केवळ, मनःपर्यव अने परम-अवधिज्ञान विच्छेद गयां. दृष्टिवाद विच्छेद गयुं, सिद्धांतनो घणो भाग पण विच्छेद गयो; मात्र थोडा रहेला भागपर सामान्य समजणथी शंका करवी योग्य नथी. जे शंका थाय ते विशेष जाणनारने पूछवी, त्यांथी मनमानतो उत्तर न मळे तो-. पण जिनवचननी श्रद्धा चळविचळ करवी योग्य नथी, केमके अनेकांत शैलीना स्वरुपने विरला जाणे छे.

उत्तम अने शांत मुनिओनो समागम, विमळआचार, विवेक, तेमज दया, क्षमा आदिनुं सेवन करवुं. तुच्छ बुद्धिथी शंकित थवुं नहीं, एमां आपणुं परम मंगळ छे ए विसर्जन करवुं नहीं.

—:०:—

शिक्षापाठ ५४ अशुचि कोने कहेवी ?

जिज्ञासुः—मने जैन मुनियोना आचारनी वात बहु रुची छे. एओना जेवो कोइ दर्शनना संतोमां आचार नथी. गमे तेवा शीयाळानी टाढमां अमुक वस्त्रवडे तेओने रेडववुं पडे छे; उनाळामां गमे तेवा ताप तपता छतां पगमां तेओने पगरखां के माथापर छत्री लेवाती नथी. उनी रेतीमां आतापना लेवी

छे. यावज्जीवन ऊनुं पाणी पीए छे, गृहस्थने घेर तेओ
ी शकता नथी. शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळे छे. फूटी बदाम पण
े राखी शकता नथी. अयोग्य वचन तेथी बोली शकातुं नथी.
न तेओ लई शकता नथी. आवा पवित्र आचारो, खरे!
दायक छे. परंतु नववाडमां भगवाने स्नान करवानी ना
ी छे ए वात तो मने यथार्थ बेसती नथी.

सत्य—शा माटे बेसती नथी?

जिज्ञासु—कारण एथी अशुचि वधे छे.

सत्य—कई अशुचि वधे छे?

जिज्ञासु—शरीर मलिन रहे छे ए.

सत्य—भाई, शरीरनी मलिनताने अशुचि कहेवी ए वात
विचारपूर्वक नथी. शरीर पोते शानुं बन्युं छे एनो विचार
. रक्त, पित्त, मळ, मूत्र श्लेष्मनो ए भंडार छे. तेना पर मात्र
चा छे; छतां ए पवित्र केम थाय? वळी साधुए एवुं कंई
ारी कर्तव्य कर्युं न होय के जेथी तेओने स्नान करवानी
श्यकता रहे.

जिज्ञासु—पण स्नान करवाथी तेओने हानि शुं छे?

सत्य—ए तो स्थूळबुद्धिनो प्रश्न छे. नाहवाथी काम-
नी प्रदीप्तता, व्रतनो भंग, परिणामनुं बदलवुं, असंख्याता
ुनो विनाश, ए सघळी अशुचि उत्पन्न थाय छे अने एथी
त्मा महामलिन थाय छे. प्रथम एनो विचार करवो जोईए.
िंसायुक्त शरीरनी जे मलिनता छे ते अशुचि छे. अन्य
िचारथी तो आत्मानी उज्ज्वळता थाय छे ए तत्त्वविचारे

समजवानुं छे; तेनाथी वृत्तभंग थइ आत्मा मलीन थाय छे; अने आत्मानी मलीनता एज अशुचि छे.

जिज्ञासुः—मने तमे बहु सुंदर कारण बताव्युं. सूक्ष्म विचार करतां जिनेश्वरनां कथनथी बोध अने अत्यानंद प्राप्त थाय छे. वारु, गृहस्थाश्रमीओए सांसारिक प्रवर्त्तनथी थयेली अनीच्छितजीवहिंसादियुक्त एवी शरीर संबंधी अशुचि टाळवी जोइए के नहीं?

सत्यः—समजणपूर्वक अशुचि टाळवीज जोइए. जैन जेवुं एके पवित्र दर्शन नथी; यथार्थ पवित्रतानो बोधक ते छे. परंतु शौचाशौचनुं स्वरूप समजवुं जोइए.

—:०:—

शिक्षापाठ ५५ सामान्य नित्यनियम.

प्रभात पहेलां जागृत थइ नमस्कारमंत्रनुं स्मरण करी मनविशुद्ध करवुं. पापव्यापारनीवृत्ति रोकी रात्रिसंबंधी थयेला दोषनुं उपयोगपूर्वक प्रतिक्रमण करवुं.

प्रतिक्रमण कर्या पछी यथावसर भगवाननी उपासना-स्तुति तथा स्वाध्यायथी करी मनने उज्वळ करवुं.

मात पितानो विनय करी संसारीकाममां आत्महितनो लक्ष भूलाय नहीं तेम व्यवहारिक कामां प्रवर्त्तन करवुं.

पोते भोजन करवा पहेलां सत्पात्रे दान देवानी परम आतुरता राखी तेवो योग मळतां यथोचित प्रवृत्ति करवी.

आहारविहारादिमां नियम सहित प्रवर्त्तवुं.

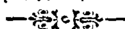
सत्शास्त्रना अभ्यासनो नियमित वखत राखवो.

सायंकाळे उपयोगपूर्वक संध्यावश्यक करवुं.

निद्रा नियमितपणे लेवी.

सुता पेहेलां अढार पापस्थानक, द्वादशव्रतदोष, अने सर्व जीव प्रत्ये क्षमावी पंच परमेष्ठि मंत्रनुं स्मरण करी समाधि पूर्वक शयन करवुं.

आ सामान्य नियमो बहु मंगळकारी छे. जे अहीं संक्षेपमां कह्या छे. विशेष विचारवाथी अने तेम प्रवर्त्तवाथी ते विशेष मंगळदायक अने आनंदकारक थशे.



शिक्षापाठ ५६ क्षमापना.

हे भगवान! हुं बहु भूली गयो, में तमारां अमूल्य वचनने लक्षमां लीधां नहीं. में तमारां केहेलां अनुपम तत्वनों विचार कर्यो नहीं. तमारां प्रणीत करेलां उत्तम शीलने सेव्युं नहीं. तमारां कहेलां दया, शांति, क्षमा अने पवित्रता में ओळख्यां नहीं. हे भगवान! हुं भूल्यो, आथड्यो—रझळ्यो—अने अनंत संसारनी विटम्बनामां पड्यो छउं. हुं पापी छउं. हुं बहु मदोन्मत्त अने कर्म रजथी करीने मलिन छउं. हे परमात्मा! तमारां कहेलां तत्वविना मारो मोक्ष नथी. हुं निरंतर प्रपंचमां पड्यो छउं; अज्ञानथी अंध थयो छउं; मारामां विवेकशक्ति नथी अने हुं मुंढ छउं, हु निराश्रित छउं, अनाथ छउं. निरागी परमात्मा! हवे हुं तमारुं, तमारा धर्मनुं अने तमारा मुनिनुं शरण ग्रहुं छउं. मारा अपराध क्षय थइ हुं ते

सर्वे पापथी मुक्त थउं ए मारी अभिलाषा छे. आगळ करेलां पापोनो हुं हवे पश्चात्ताप करुं छउं. जेम जेम हुं सूक्ष्म विचारथी ऊंडो उतरुं छउं तेम तेम तमारा तत्त्वना चमत्कारो मारा स्वरूपनो प्रकाश करे छे. तमे निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंदस्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी, अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो. हुं मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षीए क्षमा चाहुं छउं. एक पळ पण तमारा कहेला तत्त्वनी शंका न थाय, तमारा कहेला रस्तामां अहोरात्र हुं रहुं एज मारी आकांक्षा अने वृत्ति थाओ! हे सर्वज्ञ भगवान! तमने हुं विशेष शुं कहूं! तमाराथी कंइ अजाण्युं नथी. मात्र पश्चात्तापथी हुं कर्मजन्य पापनी क्षमा इच्छुं छउं.—ॐ शांतिः शांतिः शांतिः



शिक्षापाठ ५७ वैराग्य ए धर्मनुं स्वरूप छे.

एक वस्त्र लोहीनी मलिनताथी रंगायुं तेने जो लोहीथी धोइए तो ते उजळुं थइ शके नहीं; पण वधारे रंगाय छे. जो पाणीथी ए वस्त्रने धोइए तो ते मलिनता जवानो संभव छे. आ दृष्टांतपरथी आत्मापर विचार करीए. अनादिकाळथी आत्मा संसाररूपी लोहीथी मलिन थयो छे. मलिनता रोमेरोमे व्यापी रही छे. ए मलिनता आपणे विषयशृंगारथी टाळवा धारीए तो टळी शके नहीं. जेम लोहीथी लोही धोवातुं नथी; तेम शृंगारथी करीने विषयजन्य आत्ममलिनता टळनार नथी ए जाणे निश्चयरूप छे. आ जगतमां अनेक धर्ममत चाले छे ते संबंधी अपक्षपाते विचार करतां आगळथी आटलुं विचारवुं अवश्यनुं

छे के ज्यां स्त्रिओ भोगववानो उपदेश कर्यो होय, लक्ष्मीलीलानी शिक्षा आपी होय, रंग, राग, गुलतान अने एशाराम करवानुं तत्व बताव्युं होय त्यां आपणा आत्मानी सत् शांति नथी, कारण ए धर्ममत गणीए तो आखो संसार धर्ममतयुक्तज छे. प्रत्येक गृहस्थनुं घर एज योजनाथी भरपूर होय छे. छोकरांछैयां, स्त्री, रंग राग तान त्यां जाम्युं पड्युं होय छे अने ते घर धर्ममंदिर कहेवुं, तो पछी अधर्मस्थानक कयुं? अने जेम वर्त्तिए छीए तेम वर्त्तवाथी खोटुं पण शुं? कोइ एम कहे के पेलां धर्ममंदिरमां तो प्रभूनी भक्ति थइ शके छे तो तेओने माटे खेदपूर्वक आटलोज उत्तर देवानो छे के ते परमात्मतत्व अने तेनी वैराग्यमय भक्तिने जाणता नथी. गमे तेम हो पण आपणे आपणा मूळ विचारपर आववुं जोइए. तत्वज्ञानीनी द्रष्टिए आत्मा संसारमां विषयादिक मलिनताथी पर्यटन करे छे. ते मलिनतानो क्षय विशुद्ध भाव जळथी होवो जोइए. अर्हतनां तत्वरुप साबु अने वैराग्यरुपी जळ वडे, उत्तम आचाररुप पथ्थरपर, आत्मवस्त्रने धोनार निर्ग्रंथ गुरु छे.

आमां जो वैराग्यजळ न होयतो बीजा बधां साहित्यो कंइ करी शकतां नथी; माटे वैराग्यने धर्मनुं स्वरुप कही शकीये. अर्हतप्रणीत तत्व वैराग्यज बोध छे, तो तेज धर्मनुं स्वरुप एम गणवुं.



शिक्षापाठ ५८ धर्मना मतभेद भाग १.

आ जगतमां अनेक प्रकारथी धर्मना मत पडेला छे. तेवा मतभेद अनादिकाळथी छे, ए न्यायसिद्ध छे. पण ए मत भेदो देश काळादि योगे कंइ कंइ रूपांतर पामे छे.ए संबंधी केटलोक विचार करीए.

केटलाक परस्पर मळता अने केटलाक परस्पर विरुद्ध छे; केटलाक केवळ नास्तिकना पाथरेला पण छे. केटलाक सामान्य नीतिने धर्म कहे छे. केटलाक ज्ञानने ज धर्म कहे छे. केटलाक अज्ञान एज धर्ममत कहे छे केटलाक भक्तिने कहे छे; केटलाक क्रियाने कहे छे; केटलाक विनयने कहे छे अने केटलाक शरीरने साचववुं एनेज धर्ममत कहे छे.

ए धर्ममत स्थापकोए एम बोध कर्यो जणाय छे के अमे जे कहीए छीए ते सर्वज्ञवाणीरूप छे; के सत्य छे. बाकीना सघळा मतो असत्य अने कुतर्कवादी छे; तथा परस्पर ते मतवादीओए योग्य के अयोग्य खंडन कर्युं छे. वेदांतना उपदेशक एज बोधे छे; सांख्यनो पण एज बोध छे. बौद्धनो पण एज बोध छे. न्यायमतवाळानो पण एज बोध छे; वैशेषिकनो एज बोध छे; शक्तिपंथीनो एज बोध छे; वैष्णवादिकनो एज बोध छे. इस्लामीनो एज बोध छे अने एज रीते क्राइस्टनो एम बोध छे के आ अमारुं कथन तमने सर्व सिद्धि आपशे. त्यारे आपणे हवे शुं विचार करवो!

वादी प्रतिवादी बन्ने साचा होता नथी, तेम बन्ने खोटा होता नथी. बहु तो वादी कंइक वधारे साचो; अने प्रतिवादी

कंईक ओछो खोटो होय. अथवा प्रतिवादी कंईक वधारे साचो, अने वादी कंईक ओछो खोटो होय. केवळ बन्नेनी वात खोटी होवी न जोइए. आम विचारकरतां तो एक धर्मभत साचो ठरे; अने बाकीना खोटा ठरे.

जिज्ञासु—ए एक आश्चर्यकारक वात छे. सर्वने असत्य के सर्वने सत्य केम कही शकाय? जो सर्वने असत्य एम कहीए तो आपणे नास्तिक ठरीए; अने धर्मनी सच्चाइ जाय. आ तो निश्चय छे के धर्मनी सच्चाइ छे तेम जगत्पर तेनी अवश्य छे.एक धर्ममत सत्य अने बाकीना सर्व असत्य एम कहीए तो ते वात सिद्ध करी बताववी जोइए. सर्व सत्य कहीए तो तो ए रेतीनी जेवी वात भींत करी; कारण के तो आटला बधा मतभेद केम पडे? जो कंइ पण मतभेद न होय तो पछी जुदा जुदा पोतपोताना मतो स्थापवा शा माटे यत्न करे! एम अन्योन्यना विरोधथी थोडीवार अटकवुं पडे छे.

तो पण ते संबंधी अत्रे कंइ समाधान करीशुं. ए समाधान सत्य अने मध्यस्थभावनानी द्रष्टिथी कर्युं छे. एकांतिक के मतांतिक द्रष्टिथी कर्युं नथी. पक्षपाती के अविवेकी नथी. उत्तम अने विचारवा जेवुं छे. देखावे ए सामान्य लागशे; परंतु सूक्ष्म विचारथी बहु भेदवाळुं लागशे.

—✻—

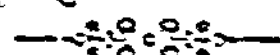
शिक्षापाठ ६०. धर्मना मतभेद भाग २.

आटलुं तो तमारे स्पष्ट मानवुं के तेमां एक धर्म आ लोकमां संपूर्ण सत्यता धरावे छे. हवे एक दर्शनने सत्य कहेतां

बाकीना धर्ममतने केवळ असत्य कहेवा पडे; पण हुं एम कही न शकुं. शुद्ध आत्मज्ञानदाता निश्चयनयवडे तो ते असत्यरूप ठरे; परंतु व्यवहारनये ते असत्य कही शकाय नहीं. एक सत्य अने बाकीना अपूर्ण अने सदोष छे एम कहुं छउं. तेमज केटलाक कुतर्कवादी अने नास्तिक छे ते केवळ असत्य छे; परंतु जेओ परलोक संबंधी के पाप संबंधी कंइपण बोध के भय बतावे छे ते जातना धर्ममतने अपूर्ण अने सदोष कही शकाय छे. एक दर्शन जे निर्दोष अने पूर्ण कहेवानुं छे ते विषेनी वात हमणा एक बाजु राखीए.

हवे तमने शंका थशे के सदोष अने अपूर्ण एवुं कथन एना प्रवर्तके शा माटे बोध्युं हशे? तेनुं समाधान थवुं जोइए. एनुं समाधान एम छे के ते धर्ममतवाळाओनी ज्यांसुधी बुद्धिनी गति पहोंची त्यांसुधी तेमणे विचारो कर्या. अनुमान, तर्क अने उपमादिक आधारवडे तेओने जे कथन सिद्ध जणायुं ते प्रत्यक्षरूपे जाणे सिद्ध छे एवुं तेमणे दर्शाव्युं; जे पक्ष लीधो तेमां मुख्य एकांतिक वाद लीधो; भक्ति, विश्वास, नीति, ज्ञान, क्रियाआदि एक पक्षने विशेष लीधो, एथी बीजा मानवा योग्य विषयो तेमणे दूषित करी दीधा. वळी जे विषयो तेमणे वर्णव्या ते सर्व भावभेदे तेओए कंइ जाण्या नहोता, पण पोतानी बुद्धि अनुसारे बहु वर्णव्या. तार्किक सिद्धांत दृष्टांतादिकथी सामान्य बुद्धिवाळा आगळ के जडभरत आगळ तेओए सिद्ध करी बताव्या. कीर्ति, लोकहित के भगवान मनावानी आ-कांक्षा एओनी [illegible] मतना भ्रमना [illegible]

अत्युग्रदयमादिथी तेओ जय पाम्या. केटलाके शृंगार अने लोके
च्छित साधनोथी मनुष्यनां मन हरण कर्यां. दुनियां मोहमां
तो मूके डुबी पडी छे; एटले ए ईच्छित दर्शनथी गाडररूपे थ-
इने तेओए राजी थइ तेनुं कहेवुं मान्य राख्युं. केटलाके नीति,
तथा कंइ वैराग्यादि गुण देखी इत्यादिकथी ते कथन मान्य
राख्युं. प्रवर्त्तकनी बुद्धि तेओ करतां विशेष होवाथी तेने पछी
भगवानरूपज मानी लीधा. केटलाके वैराग्यथी धर्ममत फेलावी
पाछळथी केटलांक सुखशीलियां साधननो बोध खोशी पो-
ताना मतनी वृद्धि करी पोतानो मत स्थापन करवानी महान
भ्रमनाए अने पोतानी अपूर्णता इत्यादिक गमे ते कारणथी
बीजानुं कहेलुं पोताने न रुच्युं एटले तेणे जूदोज राह काढ्यो.
आम अनेक मतमतांतरनी जाळ थती गइ. चार पांच पेढी
एकनो एक धर्म मत रह्यो एटले पछी ते कुळधर्म थइ पड्यो.
एम स्थळे स्थळे थतुं गयुं.



शिक्षापाठ ६० धर्मना मतभेद भाग ३.

जो एक दर्शन पूर्ण अने सत्य न होय तो बीजा धर्म म-
तने अपूर्ण अने असत्य कोइ प्रमाणथी कही शकाय नहीं; ए
माटे थइने जे एक दर्शन पूर्ण अने सत्य छे तेनां तत्त्वप्रमा-
णथी बीजा मतोनी अपूर्णता अने एकांतिकता जोइए.

ए बीजा धर्ममतोमां तत्त्वज्ञान संबंधी यथार्थ सूक्ष्म वि-
चारो नथी. केटलाक जगत्कर्त्तानो बोध करेछे; पण जगत्-
कर्त्ता प्रमाणवडे सिद्ध थइ शकतो नथी. केटलाक ज्ञानथी

मोक्षछे एम कहेछे ते एकांतिक छे; तेमज क्रियाथी मोक्ष एम कहेनारा पण एकांतिक छे. ज्ञान, क्रिया ए बन्नेथी मो कहेनारा तेना यथार्थ स्वरूपने जाणता नथी; अने ए बन्ने भेद श्रेणिबंध नथी कही शक्या एज एमनी सर्वज्ञतानी खा जणाइ आवेछे. ए धर्ममतस्थापको सत्‌देवतत्त्वमां कहेलां अष्टाद दूषणोथी रहित नहोता एम एओए उपदेशेलां शास्त्रो प थका तेमना चरित्रोपरथी पण तत्त्वनी द्रष्टिए जोतां देखाय केटलाक मतोमां हिंसा, अब्रह्मचर्य ई. अपवित्र आचरण बोध छे ते तो सहजमां अपूर्ण अने सरागीना स्थापेलां जो मां आवेछे. कोइए एमां सर्वव्यापक मोक्ष, कोइए कंइ न ए रूप मोक्ष, कोइए साकारमोक्ष अने कोइए अमुक का सुधी रही पतित थवुं ए रूप मोक्ष मान्योछे; पण एमांथी को वात तेओनी सप्रमाण थइ शकती नथी. एओना विचार अपूर्णपणुं निस्पृह तत्त्ववेत्ताओए दर्शाव्युंछे ते यथास्थित जाण योग्य छे

वेद शिवायना बीजा मतोना प्रवर्तकोनां चरित्रो अने वि चारे इत्यादिक जाणवाथी ते मतो अपूर्ण छे एम जणाई आ छे. वर्तमानमां जे वेदो छे ते घणा प्राचीन ग्रंथो छे तेथी मतनुं प्राचीनपणुं छे, परंतु ते पण हिंसाए करीने दूषित होवाथी अपूर्ण छे. तेमज सरागीना वाक्य छे एम स्पष्ट जणायछे.

जे पूर्ण दर्शनविषे अहीं कहेवानुंछे ते जैन एटले निरागीनां स्थापन करेल दर्शनविषेछे. एना बोधदाता सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी हता; काळभेदे तेओ अनेक थइ गया छे. दया, ब्रह्मचर्य, शील, विवेक, वैराग्य ज्ञान, क्रियादि एनां एवां पूर्ण

एकेए वर्णव्यां नथी. तेनी साथे शुद्ध आत्मज्ञान, तेनी कोटिओ, जीवनां च्यवन, जन्म, गति, विगति, योनिद्वार, प्रदेश, काळ, तेनां स्वरुप ए विषे एवो सूक्ष्म बोधछे के जेवडे तेनी सर्वज्ञतानी निःशंकता थाय. काळभेदे परंपराम्नायथी केवळज्ञानादि ज्ञानो जोवामां नथी आवतां, छतां जे जे जिनेश्वरना रहेलां सिद्धांतिक वचनोछे ते अखंडछे. तेओना केटलाक सिद्धांतो एवा सूक्ष्म छे के जे अकेक विचारतां आखी जींदगी वही जाय.

जिनेश्वरनां कहेलां धर्मतत्वथी कोइ पण प्राणीने लेश खेद उत्पन्न थतो नथी. सर्व आत्मानी रक्षा अने सर्वात्मशक्तिनो प्रकाश एमां रह्यो छे. ए भेदो वांचवाथी, समजवाथी, अने ते पर अति अति सूक्ष्म विचार करवाथी आत्मशक्ति प्रकाश पामी जैनदर्शननी सर्वोत्कृष्टपणानी हा कहेवरावे छे. बहु मनथी सर्व धर्ममत जाणी पछी तुलना करनारने आ कथन अवश्य सिद्ध थशे.

निर्दोषदर्शननां मूळतत्वो अने सदोष दर्शननां मूळतत्वोविषे वीजे प्रसंगे विस्तारथी कहीशुं.



शिक्षापाठ ६१ सुखविषेविचार भाग १.

एक ब्राह्मण दरिद्रावस्थाथी बहु पीडातो हतो. तेणे कंटाळीने छेवटे देवनुं उपासन करी लक्ष्मी मेळववानो निश्चय कर्यो. पोते विद्वान होवाथी उपासन करतां पहेलां विचार कर्यो के कदापि देव तो कोइ तुष्ट थशे; पण पछी वे आगळ सुख

क्युं मागवुं ? तप करी पछी मागवानुं कंइ सूझे नहीं, अथवा न्यूनाधिक सूझे तो करेल तप पण निरर्थक जाय; माटे एक वखत आखा देशमां प्रवास करवो. संसारना महत्पुरुषोनां धाम, वैभव अने सुख जोवां. एम निश्चय करी ते प्रवासमां नीकळी पड्यो. भारतनां जे जे रमणिय अने रीद्धिमान शहेरो हतां ते जोयां. युक्तिप्रयुक्तिए राजाधिराजनां अंतःपुर, सुख अने वैभव जोयां. श्रीमंतोना आवास, वहिवट, बागबगीचा अने कुटुंब परिवार जोया; पण एथी तेनुं कोइ रीते मन मान्युं नहीं. कोइने स्त्रीनुं दुःख, कोइने पतिनुं दुःख, कोइने अज्ञानथी दुःख, कोइने वहालांना वियोगनुं दुःख, कोइने निर्धनतानुं दुःख, कोइने लक्ष्मीनी उपाधिनुं दुःख, कोइने शरीर संबंधी दुःख, कोइने पुत्रनुं दुःख, कोइने शत्रुनुं दुःख, कोइने जडतानुं दुःख, कोइने माबापनुं दुःख, कोइने वैधव्य दुःख, कोइने कुटुंबनुं दुःख, कोइने पोताना नीचकुळनुं दुःख, कोइने प्रीतिनुं दुःख, कोइने इर्ष्यानुं दुःख, कोइने हानिनुं दुःख, एम एक, बे विशेष के बधां दुःख स्थळे स्थळे ते विप्रना जोवामां आव्यां. एथी करीने एनुं मन कोई स्थळे मान्युं नहीं; ज्यां जुए त्यां दुःख तो खरुं ज. कोई स्थळे संपूर्ण सुख तेना जोवामां आव्युं नहीं. हवे त्यारे शुं मागवुं ? एम विचारतां विचारतां एक महाधनाढ्यनी प्रशंसा सांभळीने ते द्वारिकामां आव्यो. द्वारिका महारीद्धिमान, वैभवयुक्त, बागबगीचाथी करीने सुशोभित अने वस्तीथी भरपूर शहेर तेने लाग्युं. सुंदर अने भव्य आवासो जोतो, अने पूछतो पूछतो ते पेला महाधनाढ्यने

घेर गयो. श्रीमंत सुखग्रहमां बेठा हता. तेणे अतिथि जाणीने ब्राह्मणने सन्मान आप्युं; कुशळता पूछी. अने तेओने माटे भोजननी योजना करावी.जरा वार जवा दई धीरजथी शेठे ब्राह्मणने पूछ्युं: आपनुं आगमनकारण जो मने कहेवा जेवुं होय तो कहो. ब्राह्मणे कह्युं, हमणा आप क्षमा राखो; आपनो सघळी जातनो वैभव, धाम, बागबगीचा इत्यादि मने देखाडवुं पडशे; ए जोया पछी आगमनकारण कहीश. शेठे एनुं कंई मर्मरुप कारण जाणीने कह्युं: भले, आनंदपूर्वक आपनी इच्छा प्रमाणे करो. जम्या पछी ब्राह्मणे शेठे पोते साथे आवीने धामादिक बताववा विनंति करी. धनाढ्ये ते मान्य राखी; अने पोते साथे जई बागबगीचा, धाम, वैभव ए सघळुं देखाड्युं. शेठनी स्त्रि अने पुत्रो पण त्यां ब्राह्मणना जोवामां आव्या. तेओए योग्यतापूर्वक ते ब्राह्मणनो सत्कार कर्यो. एओनां रुप, विनय अने स्वच्छता जोइने तेमज तेओनी मधुरवाणी सांभळीने ब्राह्मण राजी थयो; पछी तेनी दुकाननो वहिवट जोयो. तेमां सोएक वहिवटिया त्यां बेठेला जोया. तेओ पण मायाळु, विनयि अने नम्र ते ब्राह्मणना जोवामां आव्या. एथी ते बहु संतुष्ट थयो. एनुं मन अहीं कंइक संतोषायुं. सुखी तो जगत्मां आज जणायछे एम तेने लाग्युं.

शिक्षापाठ ६२ सुखविषेविचार भाग २.

केवां एनां सुंदर घर छे! केवी सुंदर तेनी स्वच्छता अने जाळवणी छे! केवी शाणी अने मनोज्ञ तेनी सुशीळ स्त्री छे!

केवा तेना कांतिमान अने कयागरा पुत्रोछे ! केवुं संपीलुं तेनुं कुटुंब छे ! लक्ष्मीनी महेरपण एने त्यां केवीछे ! आखा भारतमां एना जेवो बीजो कोइ सुखी नथी. हवे तप करीने जो हुं मागुं तो आ महाधनाढ्य जेवुंज सघळुं मागुं, बीजी चाहना करुं नहीं.

दीवस वीती गयो अने रात्रि थइ. सुवानो वखत थयो. धनाढ्य अने ब्राह्मण एकांतमां बेठा हता; पछी धनाढ्ये विप्रने आगमन कारण कहेवा विनंति करी.

विप्रः—हुं घेरथी एवो विचार करी नीकळ्यो हतो के वधारों वधारे सुखी कोण छे ते जोवुं; अने तप करीने पछी एना जेवुं सुख संपादन करवुं आखा भारत ने तेनां सघळां रमणीय स्थळो जोयां; परंतु कोइ राजाधिराजने त्यां पण मने संपूर्ण सुख जोवामां आव्युं नहीं. ज्यां जोयु त्यां आधि, व्याधि अने उपाधि जोवामां आवी. आप भणी आवतां आपनी प्रशंसा सांभळी एटले हुं अहीं आव्यो; अने संतोष पण पाम्यो. आपना जेवी रीद्धि, सत्पुत्र, कमाइ, स्त्री, कुटुंब, घर वगेरे मारा जोवामां क्यांय आव्यु नथी. आप पोते पण धर्मशील, सद्गुणी अने जिनेश्वरना उत्तम उपास्यकछो. एथी हुं एम मानुं छउं के आपना जेवुं सुख बीजे नथी. भारतमां आप विशेष सुखीछो उपासना करीने कदापि देवकने पानुं तो आपना जेवी सुखस्थिति यानुं

धनाढ्य—पंडितजी, आप एक बहु मर्मभरेला विचारथी नीकळ्या छो; एटले अवश्य आपने जेम छे तेम स्वानुभवी

मान कहुं छउं; पछी जेम तमारी इच्छा थाय तेम करजो. मारे त्यां आपे जेजे सुख जोयां ते ते सुख भारतखंडमां क्यांय नथी एम आप कहो तो तेम हशे; पण एवुं ए मने संभवतुं नथी; मारो सिद्धांत एवो छे के जगत्मां कोई स्थळे वास्तविक सुख नथी. जगत् दुःखथी करीने दाझतुं छे. तमे मने सुखी जुओ छो परंतु वास्तविक रीते हुं सुखी नथी.

विप्र—आपनुं आ कहेवुं कोई अनुभवसिद्ध अने मार्मिक हशे. मैं अनेक शास्त्रो जोयां छे; छतां मर्मपूर्वक विचारो आवा लक्ष्यमां लेवा परिश्रम लीधो नथी. तेम मने एवो अनुभव सर्वने माटे थईने थयो नथी. हवे आपने शुं दुःख छे ! ते मने कहो.

धनाढ्य—पंडितजी आपनी इच्छा छे तो हुं कहुं छउं. ते लक्ष्यपूर्वक मनन करवा जेवुं छे; अने ए उपरथी कंई रस्तो पामवा जेवुं छे.

शिक्षापाठ ६६ सुखविषेविचार भाग २.

जे स्थिति हमणां मारी आप जुओ छो तेवी स्थिति लक्ष्मी, कुटुंब अने स्त्री संबंधमां आगळ पण हती. जे वखतनी हुं वात करुं छउं, ते वखतने लगभग वीश वर्ष थयां. व्यापार अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] —

स्त्री पण गुजरी गइ. ते वखतमां मने कंइ संतान नहोतुं. नवरी पोतेने लीधे मारे अहींथी नीकळी जवुं पडयुं. मारां कुटुंबीओए घणी रक्षा करी; परंतु ते आभ फाट्यानुं थीगडुं हतुं. अमने अने शांतने वेर थवानी स्थितिए, हुं बहु आगळ नीकळी पडयो. ज्यारे हुं त्यांथी नीकळ्यो त्यारे मारां कुटुंबीओ मने रोकी राखवा मंड्यां के तें गामनो दरवाजो पण दीठो नथी माटे तने जवा दइ शकाय नहीं. तारुं कोमळ शरीर कंइ पण करी शके नहीं; अने तुं त्यां जा अने सुखी था तो पछी आव पण नहीं; माटे ए विचार तारे मांडी वाळवो. घणा प्रकारथी तेओने समजावी, मारी स्थितिमां आवीश त्यारे अवश्य अहीं आवीश. एम वचन दइ जावाबंदर हुं पर्यटने नीकळी पडयो.

मारुं पाछुं वळवानी तैयारी थइ. देवयोगे मारी हने एक दमडी पण रही नहोती. एक के बे महीना उदरपोषण चाले तेवुं साधन रह्यु नहोतुं. छतां जावामां हुं गयो; त्यां मारी बुद्धिए वारंवार फेळव्या. जे वहाणमां हुं बेठो हतो ते वहाणना नाविके मारी चंचळता अने नम्रता जोइने पोताना शेठ आगळ मारी दुःखनी वात करी. ते शेठे मने बोलावी अमुक काममां गोठव्यो; जेमां हुं मारा पोषणथी चोगणुं पेदा करतो हतो. ए वेपारमां मारुं चित्त ज्यारे स्थिर थयुं त्यारे भारतमांथी ए वेपार वधारवा में प्रयत्न कर्यो; अने फाव्यो. बे वर्षमां पांच लाख जेटली कमाइ थइ गइ. [illegible] थी [illegible] राजी थइ रजा लइ केटलोक माल खरीद [illegible] वारा हुं वळ्यो. थोडे काळे त्यां मारी [illegible] संतान [illegible]

सामा आव्या हता. हुं मारां कुटुंबीओने आनंदभावथी जइ मळ्यो. तेओ मारा भाग्यनी प्रशंसा करवा लाग्यां. जावेथी लीधेला माले मने एकना पांच कराव्या. पंडितजी ! त्यां केटलाक प्रकारथी मारे पाप करवां पड्यां हतां; पुरे खावा पण हुं पाम्यो नहोतो; परंतु एकवार लक्ष्मी साध्य करवानो जे प्रतिज्ञाभाव कर्यो हतो ते प्रारब्ध योगथी पळ्यो. जे दुःखदायक स्थितिमां हुं हतो ते दुःखमां शुं खामी हती ? स्त्री, पुत्र एतो जाणे नहोतांज, मावाप आगळथी परलोक पाम्यां हतां. कुटुंबीओना वियोगवडे अने विना दमडीए जावे जे वखते हुं गयो ते वखतनी स्थिति अज्ञानदृष्टिथी आंखमां आंसु आणी दे तेवी छे; आ वखते पण धर्मनां लक्ष राख्युं हतुं. दीवसनो अमुक भाग तेमां रोकतो हतो; ते लक्ष्मी के एवी लालचे नहीं; परंतु संसारदुःखथी ए तारनार साधन छे एम गणीने. मोतनो भय क्षण पण दूर नथी, माटे ए कर्त्तव्य जेम बने तेम त्वराथी करी लेवुं, ए मारी मुख्य नीति हती. दुराचारथी कंइ सुख नथी; मननी तृप्ति नथी; अने आत्मानी मलिनता छे. ए तत्त्व भणी में मारूं लक्ष दोरेलुं हतुं.

शिक्षापाठ ६४ सुखविषेविचार भाग ४.

अहीं आव्या पछी हुं मारां टेकाणांनी कन्या पाम्यो. ते पण सुलक्षणी अने मर्यादाशील नीवडी; ए वडे करीने मारे

त्रण पुत्र थया. वहिवट सवळ होवाथी अने नाणुं नाणांने वधारतुं होवाथी दश वर्षमां हुं महाकोट्याधिपति थइ पड्यो. पुत्रनी नीति, विचार, अने बुद्धि उत्तम रहेवा में बहु सुंदर साधनो गोठव्यां. जेथी, तेओ आ स्थिति पाम्या छे. मारां कुटुंबीओने योग्य योग्य स्थळे गोठवी तेओनी स्थितिने सुधारती करी. दुकानना में अमुक नियमो बांध्या. उत्तम धामनो आरंभ पण करी लीधो. आ फक्त एक ममत्व खातर कर्युं. गयेलुं पाछुं मेळव्युं; अने कुळ परंपरानुं नामांकितपणुं जतुं अटकाव्युं, एम कहेवराववा माटे में आ सघळुं कर्युं; एने हुं सुख मानतो नथी. जोके हुं बीजा करतां सुखी छउं; तोपण ए शातावेदनी छे. सत्सुख नथी. जगतमां बहुधा करीने अशातावेदनी छे. में धर्ममां मारो काळ गाळवानो नियम राख्यो छे; शास्त्रनां मनन, सत्पुरुषोनो समागम, यमनियम, एक महीनामां बार दीवस ब्रह्मचर्य, बनतुं गुप्तदान, सर्व व्यवहार संबंधी उपाधिमांथी केटलोक भाग बहु अंशे में त्याग्यो छे. पुत्रोने व्यवहारमां यथायोग्य करीने हुं निर्ग्रंथ थवानी इच्छा राखुं छउं. हमणां निर्ग्रंथ थइ शकुं तेम नथी; एमां संसारमोहिनी के एवुं कारण नथी; परंतु ते पण धर्मसंबंधी कारण छे. गृहस्थधर्मनां आचरण बहु कनिष्ठ थइ गयां छे; अने मुनिओ ते सुधारी शकता नथी. गृहस्थ गृहस्थने विशेष बोध करी शके; आचरणथी पण असर करी शके. एटला माटे थइने धर्मसंबंधे गृहस्थवर्गने हुं घणे भागे बोधी यमनियममां आणुं छउं. दर अठवाडिये अमारे त्यां पांचसें जेटला सद्गृहस्थोनी सभा भराय छे. आठ

दीवसनो नवो अनुभव अने बाकीनो आगलनो धर्मानुभव एमने बे त्रण मुहुर्त बोधुं छउं. मारी स्त्री धर्मशास्त्रनो केटलोक बोध पामेली होवाथी ते पण स्त्रीवर्गने उत्तम यमनियमनो बोध करी सप्ताहिक सभा भरेछे. पुत्रो पण शास्त्रनो बनतो परिचय राखेछे. विद्वानोनुं सन्मान, अतिथिनो विनय, अने सामान्य सत्यता—एकज भाव—एवा नियमो बहुधा मारा अनुचरो पण सेवेछे. एओ बधा एथी शाता भोगवी शकेछे. लक्ष्मीनी साथे मारा नीतिधर्म, सद्गुण, विनय एणे जनसमुदायने बहु मारी असर करी छे. राजासहित पण मारी नीतिवात अंगीकार करे तेवुं थयुंछे. आ सघळुं आत्मप्रशंसा माटे हुं कहेतो नथी, ए आपे स्मृतिमां राखवुं; मात्र आपना पूछेला खुलासा दाखल आ सघळुं संक्षेपमां कहेतो गउं छउं.



शिक्षापाठ ६९ सुखविषेविचार भाग ५.

आ सघळां उपरथी हुं सुखी छउं एम आपने लागी शकशे, अने सामान्यविचारे मने बहुसुखी मानो तो मानी शकाय तेम छे. धर्म, शील अने नीतिथी तेमज शास्त्रावधानथी मने जे आनंद उपजेछे ते अवर्णनिय छे. पण तत्व दृष्टिथी हुं सुखी न मनाउं. ज्यांसुधी सर्व प्रकारे बाह्य अने अभ्यंतर परिग्रह में त्याग्यो नथी, त्यांसुधी राग द्वेषनो भावछे. जो के ते बहु अंशे छे. नथी पण छे; तो त्यां उपाधि पणछे. सर्वसंग परित्याग करवानी मारी संपूर्ण आकांक्षा छे; पण ज्यां-

सुखी तेम थयुं नथी त्यां सुखी गणातां हजु कोइ प्रियजननो वियोग, व्यवहारमां हानि, कुटुंबीनुं दुःख ए थोडे अंशे पण उपाधि आपी शके. पोताना देहपर मोत शिवाय पण नाना प्रकारना रोगनो संभवछे. माटे केवळ निर्ग्रंथ, बाह्याभ्यंतर परिग्रहनो त्याग, अल्पारंभनो त्याग ए सघळुं नथी थयुं त्यां सुधी, हुं मने केवळ सुखी मानतो नथी. हवे आपने तत्त्वनी दृष्टिए विचारतां मालम पडशे के लक्ष्मी, स्त्री, पुत्र के कुटुंब एवडे सुख नथी. अने एने सुख गणुं तो ज्यारे मारी स्थिति पतित थइ हती त्यारे ए सुख क्यां गयुं हतुं ? जेनो वियोगछे, जे क्षणभंगुर छे अने ज्यां अव्या बाध पणुं नथी ते संपूर्ण के वास्तविक सुख नथी. एटला माटे थइने हुं मने सुखी कही शकतो नथी. हुं बहु विचारी विचारी व्यापार वहिवट करतो हतो तोपण मारे आरंभोपाधि, अनीति अने लेश पण कपट सेववुं पडयुं नथी, एम तो नथीज. अनेक प्रकारना आरंभ, अने कपट मारे सेववां पड्यां हतां. आप जो धारता होके देवोपासनथी लक्ष्मी प्राप्त करवी, तो ते जो पुण्य नहोय तो कोइ काळे मळनार नथी. पुण्यथी पामेली लक्ष्मी महारंभ कपट अने मानमुख वधारतां ते महापापनां कारण छे; पाप नरकमां नाखेछे. पापथी, आत्मा महान् मनुष्यदेह एळे गुमावी दे छे. एकतो जाणे पुण्यने खाइ जवां; बाकी वळी पापनुं बंधन करवु; लक्ष्मीनी अने ते वडे आखा संसारनी उपाधि भोगवबी ते हुं धारुं छउं के विवेकी आत्माने मान्य न होय. में जे कारणथी लक्ष्मी उपार्जन करी हती,

ते कारण में आगळ आपने जणाव्युं हतुं. जेम आपनी इच्छा होय तेम करो. आप विद्वान छो. हुं विद्वानने चाहुं छउं. आपनी अभिलाषा होयतो धर्मध्यानमां मनन थइ शकशे अहीं भले रहो. आपनी उपजीविकानी सघळ योजना जेम करो तेम हुं भक्तिपूर्वक करावी आपुं. अहीं शास्त्राध्ययन अने मनुष्यनो उपदेश करो मिथ्यारंभोपाधिनी लोलुपतामां हुं धारं छउं के न पडो, पछी आपनी जेवी इच्छा.

पंडित—आपे आपना अनुभवनी घणु मनन करवा जेवी आख्यायिका कही. आप अवश्य कोइ महात्मा छो. पूर्वानुबंधीपुण्यवान जीव छो; विवेकी छो; आपनी विचारशक्ति अद्भुत छे; हुं दरिद्रताथी वैभवने जे इच्छा मानतो हतो ते एकांतिक हती. आवा सर्व प्रकारना विवेकी विचार में कर्या नहोता. आवो अनुभव—आवी विवेकशक्ति हुं गमे तेवो विद्वान छउं छतां मारामां नथी, ए वात हुं सत्य कहुं छउं. आप मारे माटे जे योजना दर्शावी ते माटे आपनो बहु उपकार मानुं छउं; अने नम्रतापूर्वक ए हुं अंगीकार करवा हर्ष दर्शावुं छउं. हुं उपाधिने चाहतो नथी. लक्ष्मीनो फंद उपाधिरूप थाय छे. आपनुं अनुभवसिद्ध वचन मने बहु गम्युं छे. संसार बळतोज छे. एमां सुख नथी. आपे निरुपाधि मुनित्वनी प्रशंसा करी ते सत्य छे. ते सन्मार्ग परिणामे सदोषित्व. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

शिक्षापाठ ६६ सुखविषेविचार भाग ६.

धनाढ्यः—आपने मारी वात रुची एथी हुं निराभिमानपूर्वक आनंद पामुं छउं. आपने माटे हुं योग्य योजना करीश. मारा सामान्य विचारो कथानुरूप अहीं कहेवानी हुं आज्ञा लउं छउंः

जेओ मात्र लक्ष्मीने उपार्जन करवामां कपट, लोभ अने मायामां मुंझाया पड्या छे ते बहु दुःखीछे. तेनो ते पुरो उपयोग के अधुरो उपयोग करी शकता नथी. मात्र उपाधिज भोगवे छे. ते असंख्यात पाप करेछे. काळ अचानक लइने उपाडी जाय छे. अधोगति पामी ते जीव अनंतसंसार वधारे छे. मळेलो मनुष्य देह निर्माल्य करी नाखे छे जेथी ते निरंतर दुःखीज छे.

जेओए पोतानां उपजीविका जेटलां साधनमात्र अल्पारंभथी राख्यां छे, शुद्ध एक पत्निव्रत, संतोष, परात्मानी रक्षा, यम, नियम, परोपकार, अल्पराग, अल्पद्रव्यमाया अने सत्य तेमज शास्त्राध्ययन राखेल छे, सत्पुरुषोने सेवेछे, निर्ग्रंथतानो मनोर्थ राख्यो छे, बहु प्रकारे करीने संसारथी जे त्यागी जेवा छे, जेनां वैराग्य अने विवेक उत्कृष्ट छे तेवा पुरुषो पवित्रतामां सुखपूर्वक काळ निर्गमन करे छे.

सर्व प्रकारना आरंभ अने परिग्रहथी जेओ रहित थयाछे, द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी जेओ अप्रतिबंधपणे विचरे छे, शत्रु, मित्र प्रत्ये समान दृष्टिवाळा अने शुद्ध आत्मध्यानमां

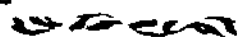
जेमनो काळ निर्गमन थाय छे, अथवा स्वाध्याय ध्यानमां लीन छे. जितेंद्रिय अने जित कषाय एवा ते निर्ग्रंथो परम सुखीछे.

सर्व घनघाती कर्मनो क्षय जेमणे कर्यो छे; चार कर्म पातळां जेनां पड्यां छे; जे मुक्त छे; जे अनंतज्ञानी अने अनंतदर्शी छे ते तो संपूर्ण सुखीज छे. मोक्षमां तेओ अनंत जीवनना अनंतसुखमां सर्व कर्मविरक्ततायी विराजे छे.

आम सत्पुरुषोए कहेलो मत मने मान्य छे. पहेलो तो मने त्याज्य छे. बीजो हमणां मान्य छे; अने घणे भागे ए ग्रहण करवानो मारो बोध छे. त्रीजो बहु मान्य छे. अने चोथो तो सर्वमान्य अने सच्चिदानंद स्वरुप छे.

एम पंडितजी आपनी अने मारी सुखसंबंधी वातचित थइ. प्रसंगोपात ते वात चर्चता जइशुं. तेपर विचार करीशुं. आ विचारो आपने कह्यायी मने बहु आनंद थयो छे. आप तेवा विचारने अनुकूळ थया एथी वळी आनंदमां वृद्धि थइ छे. एम परस्पर वातचित करतां करतां हर्षभेर पछी तेओ समाधिभावथी शयन करी गया.

जे विवेकीओ आ सुखसंबंधी विचार करशे तेओ बहु तत्व अने आत्मश्रेणिनी उत्कृष्टताने पामशे. एमां कहेला अल्पारंभी, निरारंभी अने सर्वमुक्त लक्षणो लक्षपूर्वक मनन करवां जेवां छे. जेम बने तेम अल्पारंभी थइ समभावथी जनसमुदायनां हित भणी वळवुं, परोपकार, दया, शांति क्षमा अने पवित्रतानुं सेवन करवुं ए बहु सुखदायक छे. निर्ग्रंथताविषे तो विशेष कहेवानुं नथी. मुक्तात्मा अनंत सुखमयज छे.



शिक्षापाठ ६७ अमूल्य तत्वविचार.

हरिगीत छंद.

बहु पुण्यकेरा पुंजथी शुभ देह मानवनो मळ्यो;
तोये अरे! भवचक्रनो आंटो नहिं एके टळ्यो;
सुख प्राप्त करतां सुख टळेछे लेश ए लक्षे लहो;
क्षण क्षण भयंकर भावमरणे कां अहो राची रहो? .

—:o:—

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, शुं वध्युं ते तो कहो,
शुं कुटुंब के परिवारथी वधवापणुं, ए नय ग्रहो;
वधवापणुं संसारनुं नर देहने हारी जवो,
एनो विचार नहीं अहोहो! एक पळ तमने हवो!!! २

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, ल्यो गमे त्यांथी भले;
ए दिव्यशक्तिमान जेथी जंजिरेथी नीकळे!!
परवस्तुमां नहिं मुंझवो, एनी दया मुजने रही;
ए त्यागवा सिद्धांत के पश्चातदुख ते सुख नहीं. ३

हुं कोण छुं? क्यांथी थयो? शुं स्वरूप छे मारुं खरुं?
कोना संबंधे वळगणा छे? राखुं के ए परहरुं?
एना विचार विवेक पूर्वक शांत भावे जो कर्या;
तो सर्व आत्मिकज्ञानना सिद्धांततत्व अनुभव्यां. ४

ते—प्राप्त करवा वचन कोनुं सत्य केवळ मानवुं?
निर्दोष नरनुं कथन मानो "तेह" जेणे अनुभव्युं;

रे ! आत्म तारो ! आत्म तारो ! शीघ्र एने ओळखो;
सर्वात्ममां समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो. ५

शिक्षापाठ ६८ जितेंद्रियता.

ज्यांसुधी जीभ स्वादिष्ट भोजन चाहेछे; ज्यांसुधी नासिका सुगंधी चाहेछे; ज्यांसुधी कान वारांगनाआदिनां गायन अने वाजित्र चाहेछे; ज्यांसुधी आंख वनोपवन जोवानुं लक्ष राखेछे; ज्यांसुधी त्वचा सुगंधीलेपन चाहेछे, त्यांसुधी, ते मनुष्य निरागी निर्ग्रंथ, निःपरिग्रही, निरारंभी अने ब्रह्मचारी थइ शकतो नथी. मनने वश करवुं ए सर्वोत्तम छे. एना वडे सघळी इंद्रियो वश करी शकाय छे. मन जीतवुं बहु दुर्घट छे. एक समयमां असंख्याता योजन चालनार अश्व ते मन छे. एने थकाववुं बहु दुर्लभ छे. एनी गति चपळ अने न झाली शकाय तेवी छे.महा ज्ञानीओए ज्ञानरुपी लगामवडे करीने एने स्तंभित राखी सर्व जय कर्योछे.

उत्तराध्ययन सूत्रमां नमिराज महर्षिए शक्रेंद्रप्रत्ये एम कह्युं के दश लाख सुभटने जीतनार कइक पड्या छे; परंतु स्वात्माने जीतनारा बहु दुर्लभ छे; अने ते दश लाख सुभटने जीतनार करतां अत्युत्तम छे.

मनज सर्वोपाधिनी जन्मदाता भूमिका छे. मनज बंध अने मोक्षनुं कारण छे. मनज सर्व संसारनी मोहिनी रुपछे. ए वश थतां आत्मस्वरुपने पामवुं लेश मात्र दुर्लभ नथी.

मनवडे इंद्रियोनी लोलुपता छे. भोजन, वाजित्र, सुगंधी, स्त्रिनुं निरीक्षण, सुंदर विलेपन ए सघळुं मनज मागे छे. ए मोहिनी आडे ते धर्मने संभारवा पण देतुं नथी. संभार्या पछी सावधान थवा देतुं नथी. सावधान थया पछी पतितता करवामां मह्त थाय छे. एमां नथी फावतुं त्यारे साधवानीमां कंइ न्यूनता पहोंचाडे छे जेओ ए न्यूनता पण न पामतां अडग रहीने ते मनने जीते छे तेओ सर्वथा सिद्धिने पामे छे.

मन कोइथीज अकस्मात जीती शकायछे, नहींतो गृहस्थाश्रमे अभ्यास करीने जीतायछे; ए अभ्यास निर्ग्रंथतामां वहु थइ शकेछे छतां सामान्य परिचय मागीए तो तेनो मुख्य मार्ग आ छे के ते जे दुरेच्छा करे तेने भूली जवी तेम करवुं नहीं. ते ज्यारे शब्दस्पर्शादि विलास इच्छे त्यारे आपवां नहीं. टुंकामां आपणे एथी दोरावुं नहीं पण आपणे एने दोरवुं; मोक्षमार्ग चिंतव्यामां रोकवुं. जितेंद्रियता विना सर्व प्रकारनी उपाधि उभीज रही छे. त्यागे न त्याग्या जेवो थाय छे, लोक लज्जाए तेने सेववो पडे छे. माटे अभ्यासे करीने पण मनने स्वाधीनतामां लइ अवश्य आत्महित करवुं.



शिक्षापाठ ६९ ब्रह्मचर्यनी नववाड.

ज्ञानीओए थोडा शब्दोमां केवा भेद अने केवुं स्वरु

बतावेल छे ! ए वडे केटली बधी आत्मोन्नति थायछे! ब्रह्मचर्य जेवा गंभिर विषयनुं स्वरूप संक्षेपमां अति चमत्कारिक रीते आप्युं छे. ब्रह्मचर्यरूपी एक सुंदर झाड अने तेने रक्षा करनारी जे नव विधियो तेने वाडनुं रूप आपी आचार पाळवामां विशेष स्मृति रही शके एवी सरळता करी छे. ए नव वाड जेम छे तेम अहीं कही जउं छउं.

१ वसति. ब्रह्मचारी साधुए स्त्री, पशु के पढंग एथी संयुक्त वसतिमां रहेवुं नहीं. स्त्री बे प्रकारनी छे;—मनुष्यिणी अने देवांगना. ए प्रत्येकना पाछा बे बे भेद छे. एकतो मूळ अने बीजी स्त्रीनी मूर्ति के चित्र. एमांथी गमे ते प्रकारनी स्त्री ज्यां होय त्यां ब्रह्मचारी साधुए न रहेवुं. केमके ए विकारहेतु छे. पशु एटले तिर्यचणी. गाय भेंस इत्यादिक जे स्थळे होय ते स्थळे न रहेवुं; अने पढंग एटले नपुंसक एनो वास होय त्यां पण न रहेवुं. एवा प्रकारनो वास ब्रह्मचर्यनी हानि करे छे. तेओना कामचेष्टा हाव भाव इत्यादिक विकारो मनने भ्रष्ट करे छे.

२ कथा. मात्र एकली स्त्रियोनेज के एकज स्त्रीने धर्मोपदेश ब्रह्मचारीए न करवो. कथा ए मोहनी उत्पत्ति रूप छे. ब्रह्मचारीए स्त्रीना रूप कामविलास संबंधी ग्रंथो वांचवा नहीं, तेमज जेथी चित्त चळे एवा प्रकारनी गमे ते शृंगार संबंधी कथा ब्रह्मचारीए करवी नहीं.

३ आसन—स्त्रियोनी साथे एक आसने न बेसवुं, तेमज

ज्यां स्त्री बेठी होय त्यां बे घडी सुधीमां ब्रह्मचारीए न बेसवुं. ए स्त्रियोनी स्मृतिनुं कारण छे, एथी विकारनी उत्पत्ति थाय छे. एम भगवाने कह्युं छे.

४ इंद्रियनिरीक्षण–स्त्रीओनां अंगोपांग ब्रह्मचारी साधुए न जोवां; न निरखवां. एनां अमुक अंगपर दृष्टि एकाग्र थवाथी विकारनी उत्पत्ति थायछे.

५ कुड्यांतर–भींत, कनात के त्राटानो अंतरपट राखी स्त्री–पुरुष ज्यां मैथुन सेवे त्यां ब्रह्मचारीए रहेवुं नहीं. कारण शब्द, चेष्टादिक विकारनां कारणछे.

६ पूर्वक्रिडा–पोते गृहस्थावासमां गमे तेवी जातना शृंगारथी विषयक्रिडा करी होय तेनी स्मृति करवी नहीं; तेम करवाथी ब्रह्मचर्य भंग थायछे.

७ प्रणीत–दूध, दहीं, घृतादिमधुरा अने चीकाशवाळा पदार्थोनो बहुधा आहार न करवो. एथी विर्यनी वृद्धि अने उन्माद थायछे अने तेथी कामनी उत्पत्ति थायछे. माटे ब्रह्मचारीए तेम करवुं नहीं.

८ अतिमात्राहार—पेट भरीने अतिमात्रआहार करवो नहीं; तेम अति मात्रानी उत्पत्ति थाय तेम करवुं नहीं. एथी पण विकार वधेछे.

९ विभूषण—स्नान, विलेपन करवां नहीं, तेमज पुष्पादिक ब्रह्मचारीए ग्रहण करवुं नहीं. एथी ब्रह्मचर्यने हानि उत्पन्न थायछे.

[illegible] : कहींछे. घट्ट-

था ए तमारा सांभळवामां आवी हशे; परंतु गृहस्थावासमां अमुक अमुक दिवस ब्रह्मचर्य धारण करवामां अभ्यासीओने लक्षमां रहेवा अहीं आगळ कंइक समजणपूर्वक कही छे.

—:०:—

शिक्षापाठ ७० सनत्कुमार भाग १.

चक्रवर्तीना वैभवमां शी खामी होय! सनत्कुमार ए चक्रवर्ती हतो. तेनां वर्ण अने रूप अत्युत्तम हतां. एक वेळा सुधर्मसभामां ते रूपनी स्तुति थइ; कोइ बे देवोने ते वात रुची नहीं; पछी तेओ ते शंका टाळवाने विप्ररूपे सनत्कुमारनां अंतःपुरमां गया. सनत्कुमारनो देह ते वेळा खेळथी भर्यो हतो. तेने अंग मर्दनादिक पदार्थोनुं मात्र विलेपन हतुं. तेणे एक नानुं पंचीयुं पहेर्युं हतुं. अने ते स्नान मज्जन करवा माटे बेठा हता. विप्ररूपे आवेला देवता तेनुं मनोहर मुख, कंचनवर्णि काया, अने चंद्र जेवी कांति जोइने बहु आनंद पाम्या, अने माथुं धुणाव्युं. आ जोइने चक्रवर्तीए पूछ्युं: तमे माथुं शा माटे धुणाव्युं! देवोए कह्युं, अमे तमारुं रूप अने वर्ण निरखवा माटे बहु अभिलाषी हता. स्थळे स्थळे तमारा वर्ण रूपनी स्तुति सांभळी हती; आजे अमे ते नजरोनजर जोयुं, जेथी अमने पूर्ण आनंद उपज्यो. माथुं धुणाव्युं एनुं कारण ए के जेवुं लोकोमां कहेवायछे तेवुं रूपछे पण विशेषछे पण ओछुं नथी.

सनत्कुमार स्वरूपवर्णनी स्तुतिथी प्रभुत्व लावीने बोल्या, तमे आ वेळा मारुं रूप जोयुं ते भले, परंतु हुं राजसभामां वस्त्रालंकार धारण करी, केवळ सज्ज थइने सिंहासनपर बेसुं

छउं त्यारे, मारुं रुप अने मारो वर्ण जोवा योग्य छे. अत्यारे तो हुं खेळभरी कायाए बेठो छउं. जो ते वेळा तमे मारां रुपवर्ण जुओ तो अद्भुत चमत्कारने पामो अने चकित थइ जाओ. देवोए कह्युं, त्यारे पछी अमे राजसभामां आवीशुं; एम कहीने त्यांथी चाल्या गया. सनत्कुमारे त्यार पछी उत्तम वस्त्रालंकारो धारण कर्या. अनेक उपचारथी जेम पोतानी काया विशेष आश्चर्यता उपजावे तेम करीने ते राजसभामां आवी सिंहासनपर बेठो. आजुबाजु समर्थ मंत्रियो, सुभटो, विद्वानो अने अन्य सभासदो योग्य आसने बेसी गया हता. राजेश्वर चामर छत्रथी विंझाता अने खमा खमाथी वधावातां विशेष शोभी रह्या छे, त्यां पेला देवताओ पाछा विप्ररुपे आव्या. अद्भुत रुपवर्णथी आनंद पामवाने बदले जाणे खेद पाम्या छे एवा स्वरुपमां तेओए माथुं धुणाव्युं चक्रवर्तीए पूछ्युं, अहो ब्राह्मणो ! गइ वेळा करता आ वेळा तमे जूदा रुपमां माथुं धुणाव्युं एनुं शुं कारणछे ? ते मने कहो अवधज्ञानानुसारे विप्रे कह्यु के हे, महाराजा ! ते रुपमां अने आ रुपमां भूमी आकाशनो फेर पडी गयो छे. चक्रवर्त्तीए ते स्पष्ट समजाववाने कह्युं. ब्राह्मणोए कह्युं, अधिराज ! तमारी काया प्रथम अमृततुल्य हती. आ वेळा झेर तुल्यछे. ज्यारे अमृततुल्य अंग हतुं त्यारे आनंद पाम्या, अने आ वेळा झेरतुल्य छे त्यारे खेद पाम्या. अमे कहीए छीए ते वातनी सिद्धता करवी होय तो तमे तांबुल थूंको, तत्काळ ते पर माखी बेसशे अने ते परलोक पहोंची जशे.

शिक्षापाठ ७१ सनत्कुमार भाग २.

सनत्कुमारे ए परीक्षा करी तो सत्य ठरी. पूर्वित कर्मनां पापनो जे भाग तेमां आ कायाना मद संबंधीनुं मेळवण थवाथी ए चक्रवर्तिकाया झेरमय थइ गइ हती. विनाशी अने अशुचिमय कायानो आवो प्रपंच जोइने सनत्कुमारने अंतःकरणमां वैराग्य उत्पन्न थयो. आ संसार केवळ तजवा योग्य छे. आवीने आवी अशुचि स्त्री, पुत्र, मित्रादिकनां शरीरमां रही छे. ए सघळुं मोहमान करवा योग्य नथी, एम विचारीने ते छ खंडनी प्रभुता त्यागी चाली नीकळ्या. साधुरूपे ज्यारे विचरता हता त्यारे तेओने महारोग उत्पन्न थयो. तेनां सत्यत्वनी परीक्षा लेवाने कोइ देव त्यां वैदरूपे आव्यो. साधुने कह्युं, हुं बहु कुशळ राजवैद छउं. तमारी काया रोगनो भोग थयेली छे. जो इच्छा होय तो तत्काळ हुं ते रोगने टाळी आपुं. साधु बोल्या, हे वैद ! कर्मरूपी रोग महोन्मत्त छे; ए रोग टाळवानी तमारी जो समर्थता होय तो भले मारो ए रोग टाळो, ए समर्थता न होयतो आ रोग भले रह्यो. देवता बोल्यो, ए रोग टाळवानी समर्थता नथी, साधुए पोतानी लब्धिनां परिपूर्ण बळवडे थुंकवाळी अंगुलि करी ते रोगने खरडी के तत्काळ ते रोग नाश थयो; अने काया पाछी हती तेवी बनी गइ. पछी ते वेळा देवे पोतानुं स्वरूप प्रकाश्युं; धन्यवाद गाइ वंदन करी पोताने स्थानक गयो.

रक्तपीत जेवा सदैव लोही परुथी गद्गदता महारोगनी

उत्पत्ति जे कायामां छे; पळमां वणसी जवानो जेनो स्वभाव छे; जे प्रत्येक रोमे पोणा बब्बे रोगवाळी होइ रोगनो भंडार छे, अन्न वगेरेनी न्यूनाधिकताथी जे प्रत्येक कायामां देखाव देछे, मळमुत्र, नर्क, हाड, मांस, परु अने श्लेष्मथी जेनुं बंधारण टक्युं छे, त्वचाथी मात्र जेनी मनोहरता छे ते कायानो मोह खरे विभ्रमज छे. सनत्कुमारे जेनुं लेशमात्र मान कर्युं ते पण जेथी मंखायुं नहीं ते कायामां अहो पामर ! तुं शुं मोहे छे ? ए मोह मंगळदायक नथी.



शिक्षापाठ ७२ बत्रिस योग.

सत्पुरुषो नीचेना बत्रिस योगनो संग्रह करी आत्माने उज्वळ करवानुं कहेछे.

१. मोक्षसाधकयोग माटे शिष्ये आचार्य प्रत्ये आलोचना करवी.

२. आलोचना बीजा पासे प्रकाशवी नहीं.

३. आपत्तिकाळे पण धर्मनुं दृढपणु त्यागवुं नहीं.

४. लोक, परलोकनां सुखनां फळनी वांछनाविना तप करवुं.

५. शिक्षा मळी ते प्रमाणे यत्नाथी वर्त्तवुं; अने नवी शिक्षा विवेकथी ग्रहण करवी.

६. ममत्वनो त्याग करवो.

७. गुप्त तप करवुं

८. निर्लोभता राखवी

९. परिषह उपसर्गने जीतवा.

१०. सरळ चित्त राखवुं.

११. आत्मसंयम शुद्ध पाळवो.

१२. समकित शुद्ध राखवुं.

१३. चित्तनी एकाग्र समाधि राखवी.

१४. कपटरहित आचार पाळवो.

१५. विनय करवा योग्य पुरुषोनो यथायोग्य विनय करवो.

१६. संतोषथी करीने तृष्णानी मर्यादा टुंकी करी नांखवी.

१७. वैराग्यभावनामां निमग्न रहेवुं.

१८. मायारहित वर्त्तवुं.

१९. शुद्ध करणीमां सावधान थवुं.

२०. सम्वरने आदरवो अने पापने रोकवां.

२१. पोताना दोष सम्भावपूर्वक टाळवा.

२२. सर्व प्रकारना विषयथी विरक्त रहेवुं.

२३. मूळ गुणे पंचमहाव्रत विशुद्ध पाळवां.

२४. उत्तर गुणे पंचमहाव्रतने विशुद्ध पाळवां.

२५. उत्साहपूर्वक कायोत्सर्ग करवो.

२६. प्रमादरहित ज्ञान ध्यानमां प्रवर्त्तन करवुं.

२७. हमेशां आत्मचारित्रमा सूक्ष्म उपयोगथी वर्त्तवुं.

२८. ध्यान, जीतेंद्रियता अर्थे एकाग्रतापूर्वक करवुं.

२९. मरणांत दुःखथी पण भय पामवो नहीं.

३०. स्त्रियादिकना संगने त्यागवो.

३१. प्रायश्चित विशुद्धि करवी.

१२. मरणकाले आराधना करवी.

ए अकेका योग अमूल्य छे. सघळा संग्रह करनार परिणामे अनंत सुखने पामे छे.



शिक्षापाठ ७३ मोक्ष सुख.

आ जगत् मंडळपर पण केटलीक एवी वस्तुओ अने मनेच्छा रही छे के जे केटलाक अंशे जाणता छतां कही शकाती नथी. छतां ए वस्तुओ कंइ संपूर्ण शाश्वत के अनंत भेदवाळी नथी. एवी वस्तुनुं ज्यारे वर्णन न थइ शके त्यारे अनंत सुखमय मोक्ष सबंधीतो उपमा क्यांथीज मळे! भगवानने गौतमस्वामीए मोक्षना अनंत सुखविषे प्रश्न कर्युं त्यारे भगवाने उत्तरमां कह्युं, गौतम! ए अनंतसुख हुं जाणुं छउं; पण ते कही शकाय एवी अहीं आगळ कंइ उपमा नथी. जगतमां ए सुखना तुल्य कोइपण वस्तु के सुख नथी, एम कही एक भील्लनुं दृष्टांत नीचेना भावमां आप्युं हतुं.

एक जंगलमां एक भद्रिकभील तेनां बाळबच्चां सहीत रहेतो हतो. शेहर वगेरेनी समृद्धिनी उपाधिनुं तेने लेश भान पण नहोतुं. एक दिवस कोइ राजा अश्वक्रीडा माटे फरतो फरतो त्यां नीकळी आव्यो; तेने बहु तृषा लागी हती; जेथी करीने सानवडे भील आगळ पाणी माग्युं. भीले पाणी आप्युं. शीतळ जळथी राजा संतोषायो. पोताने भील तरफथी मळेला अमूल्य जळदाननो प्रत्युपकार करवा माटे भीलने समजावीने

साथे लीधो. नगरमां आव्या पछी तेणे भीलने तेनी जींदगीमां नहीं जोयेली वस्तुमां राख्यो. सुंदर महेलमां, कने अनेक अनुचरो; मनोहर छत्रपलंग, अने स्वादिष्ट भोजनथी मंदमंद पवनमां, सुगंधी विलेपनमां तेने आनंद आनंद करी आप्यो. विविध जातिना हीरामाणेक, मौक्तिक, मणिरत्न अने रंग बेरंगी अमूल्य चीजो निरंतर ते भीलने जोवा माटे मोकल्यां करे बागबगीचामां फरवा हरवा मोकले. एम राजा तेने सुख आप्यां करतो हतो. कोइ रात्रे बधां नूइ रह्यां हतां, त्यारे ते भीलने बाळबच्चां सांभरी आव्यां एटले ते त्यांथी कंइ लीधा कर्याविगर एकाएक नीकळी पड्यो. जइने पोतानां कुटुंबीने मळ्यो. ते बधांये मळीने पूछ्युं के तुं क्यां हतो ? भीले कह्युं, बहु सुखमां; त्यां में बहु वखाणवा लायक वस्तुओ जोइ.

कुटुंबीओ—पण ते केवी ! ते तो अमने कहे.

भील—शुं कहुं, अहीं एवी एके वस्तुज नथी.

कुटुंबीओ—एम होय के ! आ शंखलां, छीप, कोडां केवां मजानां पड्यांछे; त्यां कोइ एवी जोवालायक वस्तु हती !

भील—नहीं,भाइ,एवी चीज तो अहीं एके नथी.एना सोमा भागनी के हजारमा भागनी पण मनोहर चीज अहीं नथी.

कुटुंबीओ—त्यारे तो तुं बोल्याविना बेठो रहे. तने भ्रमना पडीछे; आथी ते पछी सारुं शुं हशे !

हे गौतम! जेम ए भील राजवैभवसुख भोगवी आव्यो हतो; तेमज जाणतो हतो; छतां उपमा योग्य वस्तु नहीं दखावाथी ते कंइ कही शकतो नहोतो. तेम अनुपमेय मोक्षने स-

च्चिदानंद स्वरुपमय निर्विकारी मोक्षनां सुखना असंख्यातमा भागने पण योग्य उपमेय नहीं मळवाथी हुं तने कही शकतो नथी.

मोक्षनां स्वरुपविषे शंका करनारा तो कुतर्कवादीछे; एओने क्षणिक सुखसंबंधी विचार आडे सत्सुखनो विचार क्यांथी आवे? कोइ आस्मिकज्ञानहीन एम पण कहेछे के आथी कोइ विशेष सुखनुं साधन त्यां रह्युं नहि एटले अनंत अव्याबाध सुख कही देछे, आ एनुं कथन विवेकी नथी. निद्रा प्रत्येक मानवीने प्रिय छे; पण तेमां तेओ कंइ जाणी के देखी शकता नथी; अने जाणवामां आवे तो मात्र स्वप्नोपाधिनुं मिथ्यापणुं आवे; जेनी कंइ असरपण थाय ए स्वप्ना वगरनी निद्रा जेमां सूक्ष्मस्थूळ सर्व जाणी अने देखी शकाय; अने निरुपाधिथी शांत ऊंघ लइ शकाय तो तेनुं ते वर्णन शुं करी शके? एने उपमा पण शी आपे? आ तो स्थूळ दृष्टांत छे; पण बाळविवेकी ए परथी कंइ विचार करी शके ए माटे कह्युं छे.

भीलनुं दृष्टांत, समजाववा रूपे भाषाभेद फेरफारथी तमने कही बताव्युं.

शिक्षापाठ ७४ धर्मध्यान भाग १.

भगवाने चार प्रकारनां ध्यान कह्यां छे आर्त्त, रौद्र, धर्म अने शुक्ल. पहेलां बे ध्यान त्यागवा योग्यछे. पाछळनां बे ध्यान आत्मसार्थकरूपछे. श्रुतज्ञानना भेद जाणवा माटे, शास्त्र विचारमां कुशळ थवा माटे, निर्ग्रंथप्रवचननुं तत्त्व पामवा माटे, सत्पुरुषोए सेववा योग्य विचारवा योग्य अने ग्रहण करवा

योग्य धर्मध्यानना मुख्य सोळ भेद छे. पहेलां चार भेद कहुं छउं. १ आणाविजये (आज्ञाविचय). २ अवायविजय (अपायविचय). ३ विवागविजये (विपाकविचय). ४ सठाणविजय (संस्थानविचय). १ आज्ञाविचय. आज्ञा एटले सर्वज्ञ भगवाने धर्मतत्त्व संबंधी जे जे कह्युं छे ते ते सत्य छे; एमां शंका करवा जेवुं नथी; काळनी हीनताथी, उत्तम ज्ञानना विच्छेद जवाथी; बुद्धिनी मंदताथी के एवा अन्य कोइ कारणथी मारा समजवामां ते तत्त्व आवतुं नथी. परंतु अर्हत भगवंते अंश मात्र पण माया युक्त के असत्य कह्युं नथीज, कारण एओ निरागी, त्यागी, अने निस्पृही हता. मृषा कहेवानुं कंइ कारण एमने हतुं नहीं. तेम एओ सर्वदर्शी होवाथी अज्ञानथी पण मृषा कहे नहीं, ज्यां अज्ञानज नथी, त्यां ए संबंधी मृषा क्यांथी होय! एवुं जे चिंतन करवुं ते 'आज्ञाविचय' नामनो प्रथम भेद छे. २ अपायविचय. राग, द्वेष, काम, क्रोध ए वगेरेथीज जीवने जे दुःख उत्पन्न थाय छे तेथीज तेने भवमां भटकवुं पडे छे. तेनुं जे चिंतवन करवुं ते 'अपायविचय' नामे बीजो भेद छे. अपाय एटले दुःख. ३ विपाकविचय. हुं जे जे क्षणे जे जे दुःख सहन करुं छउं. भवाटविमां पर्यटन करुं छउं. अज्ञानादिक पामुं छउं, ते सघळुं कर्मना फळना उदय वडे छे. एम चिंतववुं ते धर्मध्याननो त्रीजो 'कर्मविपाक' चिंतन भेद छे. ४ संस्थानविचय. त्रणलोकनुं स्वरूप चिंतववुं ते. लोकस्वरूप सुप्रतिष्ठकने आकारे छे. जीव अजीवे करीने संपूर्ण भरपुर छे. असंख्यात योजननी कोडानुकोडीए त्रिच्छो लोक छे. ज्यां असं-

ज्यांना द्वीप—समुद्र छे. असंख्याता ज्योतिषि, वाणव्यंतरादिकना निवास छे. उत्पाद, व्यय अने ध्रुवतानी विचित्रता एमां लागी पडी छे. अढीद्वीपमां जघन्य तीर्थंकर २०, उत्कृष्ट एकसो सित्तेर होय. तेओ तथा केवळी भगवान अने निर्ग्रंथ मुनिराज विचरे छे, तेओने "वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामि" एम तेमज त्यां वसता श्रावक, श्राविकाना गुणग्राम करीए. ते तिर्छा लोकथी असंख्यात गुणो अधिक ऊर्ध्व लोक छे. त्यां अनेक प्रकारना देवताओना निवास छे. पछी इषत् प्राग्भारा छे. ते पछी मुक्तात्माओ विराजे छे. तेने "वंदामि, यावत् पज्जुवासामि" ते ऊर्ध्व लोकथी कंइक विशेष अधो लोक छे, त्यां अनंत दुःखथी भरेला नरकावास अने भुवनपतिनां भुवनादिक छे. ए त्रण लोकना सर्व स्थानक आ आत्माए समकित रहित करणीथी अनंती वार जन्म मरण करी स्पर्शी मूक्यां छे, एम जे चिंतन करवुं ते [illegible] नो चोथो भेद छे. ए चार भेद विचारी [illegible] अने चारित्र धर्मनी आराधना करवी [illegible] अनंत जन्म मरण टळे. ए धर्मध्यानना चार भेद स्मरणमां राखवा.

शिक्षापाठ ७५ धर्मध्यान भाग २.

धर्मध्यानना चार लक्षण कहुं छुं. १ आज्ञारुचि—एटले वीतराग भगवाननी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि ऊपजे ते. २ निसर्ग रुचि—आत्मा स्वाभाविक [illegible]

दिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म धरवानी रुचि पामे तेने निसर्ग रुचि कही छे. ३ सूत्र रुचि. श्रुतज्ञान, अने अनंत तत्त्वना भेदने माटे भाखेलां भगवानना पवित्र—वचनोनुं जेमां गुंथन थयुं छे, ते सूत्र श्रवण करवा, मनन करवा, अने भावथी पठन करवानी रुचि उपजे ते सूत्र रुचि. ४ उपदेशरुचि. अज्ञाने करीने उपार्जेलां कर्म ज्ञाने करीने खपावीए, तेमज ज्ञानवडे करीने नवां कर्म न बांधीए. मिथ्यात्वे करीने उपार्ज्यां कर्म ते सम्यग्भावथी खपावीए, सम्यग्भावथी नवां कर्म न बांधीए. अवैराग्ये करीने उपार्ज्यां कर्म ते वैराग्ये करीने खपावीए अने वैराग्यवडे करीने पाछां नवां कर्म न बांधीए. कषाये करी उपार्ज्यां कर्म ते कषाय टाळीने खपावीए, पछी नवां कर्म न बांधीए. अशुभ योगे करी उपार्ज्यां कर्म ते शुभ योगे करी खपावीए, शुभ योगेकरी नवां कर्म न बांधीए. पांच इंद्रियना स्वादरूप आश्रवे करी उपार्ज्यां कर्म ते संवरे करी खपावीए. तपरूप संवरे करी नवां कर्म न बांधीए. ते माटे अज्ञानादिक आश्रवमार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवरमार्ग ग्रहण करवा माटे तीर्थंकर भगवंतनो उपदेश सांभळवानी रुचि उपजे तेने उपदेश रुचि कहीए. ए धर्मध्यानना चार लक्षण कहेवायां.

धर्म ध्यानना चार आलंबन कहे छे. १ वांचना २ पृच्छना ३ परावर्तना ४ धर्मकथा. वांचना एटले विनय सहित निर्जरा तथा ज्ञान पामवाने माटे सूत्र सिद्धांतना मर्मना जाणनार गुरु के सत्पुरुष समीपे सूत्र तत्त्वनुं वांचन लइए तेनुं नाम वांचनाआलंबन. २ पृच्छना. अपूर्व ज्ञान पामवा माटे, जिनेश्वर भगवंतनो मार्ग दीपाववाने तथा शंकाशल्य निवारवाने

माटे तेमज अन्यना तत्त्वनी मध्यस्थ परीक्षाने माटे यथायोग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए तेने पृच्छना कहीए. ३ परावर्त्तना. पूर्वे जिनभाषित सूत्रार्थ जे भण्या होइए ते स्मरणमां रहेवा माटे, निर्जरा ने अर्थे शुद्ध उपयोग सहित शुद्ध सूत्रार्थनी वारंवार सज्झाय करीए तेनुं नाम परावर्त्तना आलंबन. ४ धर्मकथा. वीतराग भगवाने जे भाव जेवा प्रणीत कर्याछे ते भाव तेवा ग्रहीने, ग्रहीने विशेषे करीने, निश्चय करीने, शंका, कंखा अने वितिगिच्छारहितपणे, पोतानी निर्जराने अर्थे सभामध्ये ते भाव तेवा प्रणीत करीए के जेथी सांभळनार, सद्दहनार बन्ने भगवंतनी आज्ञाना आराधक थाय. ए धर्मकथालंबन कहिए. ए धर्मध्याननां चार आलंबन कहेवायां. धर्मध्याननी चार अनुप्रेक्षा कहुं छउं. १ एकत्वानुप्रेक्षा. २ अनित्यानुप्रेक्षा. ३ अशरणानुप्रेक्षा. ४ संसारानुप्रेक्षा ए चारेनो बोध बार भावनाना पाठमां कहेवाइ गयाछे. ते स्मरणमां हशे

शिक्षापाठ ७६ धर्मध्यान भाग ३.

धर्मध्यान [illegible] मुनीश्वरोए पण विस्तारपूर्वक [illegible] करीने आख्या मुनि- [illegible]

[illegible] आलंबन, [illegible] अनुप्रेक्षा [illegible] पूर्व, भांगा कहेवा [illegible] निर्जरा [illegible] भेद

पाम्या; अथवा कया भेदभणी भावना राखी छे ? ए सोळ भेदमांनो गमे ते भेद हितकारी अने उपयोगी छे;परंतु जेवा अनुक्रमथी लेवो जोइए ते अनुक्रमथी लेवायतो ते विशेष आत्मलाभनुं कारण थइ पडे.

सूत्रसिद्धांतनां अध्ययनो केटलाक मुखपाठ करे छे; तेना अर्थ, तेमां कहेलां मूळतत्त्वो भणी जो तेओ लक्ष पहोंचाडे तो कंइक सूक्ष्मभेद पामी शके. केळनां पत्रमां, पत्रमां पत्रनी जेम चमत्कृति छे तेम सूत्रार्थने माटे छे. ए उपर विचार करतां निर्मळ अने केवळ दयामय मार्गनो जे वीतरागप्रणीत तत्त्वबोध तेनुं बीज अंतःकरणमां उगी नीकळशे. ते अनेक प्रकारनां शास्त्रावलोकनथी, प्रश्नोत्तरथी, विचारथी अने सत्पुरुषना समागमथी पोषण पामीने वृद्धि थई वृक्षरूपे थशे. जे पछी निर्जरा अने आत्मप्रकाशरूप फळ आपशे.

श्रवण, मनन अने निदिध्यासनना प्रकारो वेदांतवादियोए बताव्या छे; पण जेवा आ धर्मध्यानना पृथक् पृथक् सोळ भेद कह्या छे तेवा तत्त्वपूर्वक भेद कोइ स्थळे नथी. ए अपूर्व छे. एमांथी शास्त्रने श्रवण करवानो, मनन करवानो, विचारवानो, अन्यने बोध करवानो, शंकाकंखा टाळवानो, धर्मकथा करवानो, एकत्व विचारवानो, अनित्यता विचारवानो, अशरणता विचारवानो, वैराग्य पामवानो संसारनां अनंत दुःख मनन करवानो, अने वीतराग भगवंतनी आज्ञावडे करीने आखा लोकालोकना विचार करवानो अपूर्व उत्साह मळे छे. भेदे भेदे करीने एना पाछा अनेक भाव समजाव्या छे.

एओना केटलाक भाव समजवाथी तप, शांति, क्षमा, दया वैराग्य अने ज्ञाननो बहु बहु उदय थशे.

तमे कदापि ए सोळ भेदनुं पठन करी गया हशो तो पण फरी फरी तेनुं पुनरावर्तन करजो.

शिक्षापाठ ७७ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग १.

जेवडे वस्तुनुं स्वरूप जाणीए ते ज्ञान. ज्ञान शब्दनो आ अर्थ छे. हवे यथामति विचारवानुं छे के ए ज्ञाननी कंई आवश्यकता छे? जो आवश्यकता छे तो ते प्राप्तिनां कंई साधन छे? जो साधन छे तो तेने अनुकूळ देशकाळ भाव छे? जो देशकाळादिक अनुकूळ छे तो क्यां सुधी अनुकूळ छे? विशेष विचारमां ए ज्ञानना भेद केटला छे? जाणवारूप छे शुं? एना वळी भेद केटला छे? जाणवानां साधन कयां कयां छे? कई कई वाटे ते साधनो प्राप्त कराय छे? ए ज्ञाननो उपयोग के परिणाम शुं छे? ए जाणवुं अवश्यनुं छे.

१. ज्ञाननी शी आवश्यकता छे? ते विषे प्रथम विचार करीए आ चौद राजलोकमां, चतुर्गतिमां अनादिकाळथी सकर्मस्थितिमां आ आत्मानुं पर्यटन छे. मेषोन्मेष पण सुखनो ज्यां भाव नथी एवां नरकादिक स्थानक आ आत्माए बहु बहु काळ वारंवार सेवन कर्यां छे; असह्य दुःखोने पुनःपुनः अने कहो तो अनंतवार सहन कर्यां छे. ए

एनाथी निरंतर बापडो आत्मा मात्र स्वकर्मविपाकथी पर्यटन करेछे. पर्यटननुं कारण अनंत दुःखद ज्ञानावरणादि कर्मो छे जेवडे करीने आत्मा स्वस्वरूपने पामी शकतो नथी; अने विषयादिक मोहबंधनने स्वस्वरूप मानी रह्यो छे. ए सघळांनुं परिणाम मात्र उपर कह्युं तेम छेके अनंत दुःख अनंत भावे करीने सहेवुं; गमे तेटलुं अप्रिय, गमे तेटलुं खेददायक अने गमे तेटलुं रौद्र छतां जे दुःख अनंतकाळथी अनंतिवार सहन करवुं पड्युं; ते दुःख मात्र थयुं ते अज्ञानादिक कर्मथी माटे ए अज्ञानादिक टाळवा माटे ज्ञाननी परिपूर्ण आवश्यकता छे.



शिक्षापाठ ७८ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग २.

२ हवे ज्ञाननां साधनो विषे कंइ विचार करीए. अपूर्ण पर्याप्तिवडे परिपूर्ण आत्मज्ञान साध्य थतुं नथी ए माटे छए पर्याप्तियुक्त जे देह ते आत्मज्ञान साध्य करी शके. एवो देह ते एक मानवदेह छे. आ स्थळे प्रश्न उठशे के मानव देह पामेला अनेक आत्माओ छे तो ते सघळा आत्मज्ञान कां पामता नथी! एनां उत्तरमां आपणे मानी शकीशुं के जेओ संपूर्ण आत्मज्ञानने पाम्या छे तेओनां पवित्र वचनामृतनी तेओने श्रुति नहीं होय. श्रुतिविना संस्कार नथी. जो संस्कार नथी तो पछी श्रद्धा क्यांथी होय! अने ज्यां ए एके नथी त्यां ज्ञानप्राप्ति शानी होय! ए माटे मानवदेहनी साथे सर्वज्ञवच-

नामृतनी प्राप्ति अने तेनी श्रद्धा ए पण साधनरूप छे. सर्वज्ञ-नाथ ए सकळ भूमि के केवळ अनार्य भूमिमां वसता नथी तो पछी मानवदेह ए उपयोगनो ए माटे थइने सकळ आर्यभूमि ए पण साधनरूप छे. तत्त्वनी श्रद्धा उपजवा अने बोध थवा माटे निर्ग्रंथ गुरुनी अवश्यता छे. द्रव्यं करीने जे कुळ मिथ्यात्वि छे, ते कुळमां थयेलो जन्म पण आत्मज्ञान प्राप्तिनी हानि रूप छे. कारण धर्ममत भेद ए अति दुःखदायक छे. परंपराथी पूर्वजोए ग्रहण करेलुं जे दर्शन तेमां ज सत्यभावना बंधाय छे; एथी करीने पण आत्मज्ञान अटके छे. ए माटे सारुं कुळ पण अवश्य छे. ए सघळां प्राप्त करवा माटे भाग्यशाळी थवुं तेमां सत्पुण्य एटले पुण्यानुबंधी पुण्य इत्यादिक उत्तम साधनो छे. ए द्वितीय साधन भेद कह्यो.

३ जो साधन छे तो तेने अनुकूळ देश काळ शी? ए त्रीजा भेदनो विचार करीए. भारतमां महाविदेह, इ० कर्म भूमि अने तेमां पण आर्यभूमि ए देश भावे अनुकूळ छे. जिज्ञासु भव्य! तमे सघळा आ काळमां आ; भरत भाग देश अनुकूळ छे. काळभाव [illegible] अनुकूळता छे. काळ आ दुःषमपंचम काळमां [illegible], सम्यक्त्व अने [illegible] छे. एटले काळनी परिपूर्ण अनुकूळता नथी.

४ देशकाळादि जो अनुकूळ छे तो भावो कया छे? भाव-[illegible] [illegible], सुज्ञान, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

गयां, बाकी साडा अढार हजार वर्ष रह्यां; एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी काळनी अनुकूळता छे. देशकाळ ते लेइने परिपूर्ण अनुकूळ छे.

शिक्षापाठ ७९ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ३.

हवे विशेष विचार करीए.

१ आवश्यकता शी छे ? ए महद् विचारनुं आवर्त्तन पुनः विशेषताथी करीए. मुख्य अवश्य स्वस्वरूपस्थितिनी श्रेणिए चढवुं ए छे. अनंत दुःखनो नाश, दुःखना नाशथी आत्मानुं श्रेयिक सुख ए हेतु छे केमके सुख निरंतर आत्माने प्रियज छे; पण जे स्वस्वरूपिक सुख छे ते. देशकाळ भावने लेइने श्रद्धा, ज्ञान इ० उत्पन्न करवानी आवश्यकता अने सम्यग् भाव सहित उच्चगति, त्यांथी महाविदेहमां मानवदेहे जन्म, त्यां सम्यग् भावनी पुनः उन्नति; तत्त्वज्ञाननी विशुद्धता अने वृद्धि; छेवटे परिपूर्ण आत्मसाधन ज्ञान अने तेनुं सत्य परिणाम केवळ सर्व दुःखनो अभाव एटले अखंड, अनुपम अनंत शाश्वत पवित्र मोक्षनी प्राप्ति ए सघळां माटे ज्ञाननी आवश्यकताछे !

२. ज्ञानना भेद केटला छे एनो विचार कहुं छउं. ए ज्ञानना भेद अनंत छे. पण सामान्य दृष्टि समजी शके एटला माटे सर्वज्ञ भगवाने मुख्य पांच भेद कह्या छे ते जेम छे तेम कहुं छउं. प्रथम मति द्वितीय श्रुत, तृतीय अवध, चतुर्थ मनःपर्यव अने पांचमुं संपूर्ण स्वरूप केवळ. एना पाछा प्रतिभेद छे तेनी वळी अतींद्रिय स्वरूपे अनंत भंगजाळ छे.

३. शुं जाणवारुप छे ? एनो हवे विचार करीए. वस्तुनुं स्वरुप जाणवुं तेनुं नाम ज्यारे ज्ञान; त्यारे वस्तुओ तो अनंत छे एने कयि पंक्तिथी जाणवी ? सर्वज्ञ थया पछी सर्वदर्शिताथी ते सत्पुरुष, ते अनंत वस्तुनुं स्वरुप सर्व भेदे करीने जाणे छे अने देखे छे; पण्तु तेओ ए सर्वज्ञ श्रेणिने पाम्या ते कयि कयि वस्तुने जाणवाथी ? अनंत श्रेणिओ ज्यांसुधी जाणी नथी त्यांसुधी कयि वस्तुने जाणता जाणता ते अनंत वस्तुओने अनंत रुपे जाणीए ? ए शंकानुं समाधान हवे करीए ! जे अनंतवस्तुओ मानी ते अनंत भंगे करीने छे. पण्तु मुख्य वस्तुत्व स्वरुपे तेनी बे श्रेणिओ छे. जीव अने अजीव. विशेष वस्तुत्व स्वरुपे नवतत्त्व किंवा षड्द्रव्यनी श्रेणिओ जाणवा रुप थइ पडे छे. जे पंक्तिए चढतां चढतां सर्व भावे जणाइ लोकालोक स्वरुप हस्तामलकवत् जाणी देखी शकाय छे. एटला माटे थइने जाणवारुप पदार्थ ते जीव अने अजीवछे ए जाणवा रुप मुख्य बे श्रेणिओ कहवाइ.



शिक्षापाठ ८० ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ४.

४ एना उत्तर भेद संक्षेपमां कहुं छउं. ए चैतन्य लक्षणे एक रुप छे. देहस्वरुपे अने द्रव्य स्वरुपे अनंतानु अनंतछे. देहस्वरुपे तेना इंद्रियादिक जाणवा रुपछे; तेनी गति, विगति इत्यादिक जाणवा रुपछे; तेनी संसर्ग ऋद्धि जाणवा रुपछे; तेमज अजीव

तेना रुपी अरुपी पुद्गल आकाशादिक विचित्र भाव कालचक्र इ. जाणवा रुपछे. जीवाजीव जाणवानी प्रकारांतरे सर्वज्ञ सर्वदर्शीए नव श्रेणि रुप नवतत्त्व कथांछे.

जीव, अजीव, पुण्य,
पाप, आश्रव, संवर,
निर्जरा, बंध, मोक्ष.

एमांना केटलांक ग्राह्यरुप, केटलांक जाणवारुप केटलांक त्यागवा रुप छे. सघलां ए तत्त्वो जाणवा रुप तो छेज.

५ जाणवानां साधन. सामान्य विचारमां ए साधनो जो के जाण्यां छे, तोपण विशेष कंइक जाणीए. भगवाननी आज्ञा अने तेनुं शुद्ध स्वरुप यथातथ जाणवुं. स्वयं कोइकज जाणे छे. नहीं तो निर्ग्रंथज्ञानी गुरु जणावी शके. निरागी ज्ञाता सर्वोत्तम छे. एटला माटे श्रद्धानुं बीज रोपनार के तेने पोषनार गुरु ए साधन रुप छे; ए साधनादिकने माटे संसारनी निवृत्ति एटले शम, दम ब्रह्मचर्यादिक अन्य साधनो छे. ए साधनो प्राप्त करवानी वाट कहीए तो पण चाले.

६ ए ज्ञाननो उपयोग के परिणामनो उत्तरनो आशय उपर आवी गयो छे; पण कालभेदे कंइ कहेवानुं छे. अने ते एटलुंज के दिवसमां बेघडीनो वखत पण नियमित राखीने जिनेश्वर भगवाननां कहेला तत्त्वबोधनी पर्यटना करो. वीतरागना एक सिद्धांतिक शब्दपरथी ज्ञाना वरणीनो बहु क्षयापशम थशे एम हुं विवेकथी कहुं छउं

—:o:—

शिक्षापाठ ८१ पंचमकाळ.

काळचक्रना विचारो अवश्य करीने जाणवा योग्य छे. जिनेश्वरे ए काळचक्रना बे मुख्य भेद कह्या छे;१ उत्सर्पिणी २ अवसर्पिणी. अकेका भेदना छ छ आरा छे. आधुनिक वर्त्तन करी रहेलो आरो पंचमकाळ कहेवाय छे; अने ते अवसर्पिणी काळनो पांचमो आरो छे. अवसर्पिणी एटले उतरतो काळ; ए उतरता काळना पांचमा आरामां केवुं वर्त्तन आ भरतक्षेत्रे थवुं जोइए तेने माटे सत्पुरुषोए केटलाक विचारो जणाव्या छे; ते अवश्य जाणवा जेवा छे.

एओ पंचमकाळनुं स्वरुप मुख्य आ भावमां कहे छे. निर्ग्रंथप्रवचनपरथी मनुष्योनी श्रद्धा क्षीण थती जशे. धर्मनां मूळतत्त्वोमां मतमतांर वधशे. पाखंडी अने प्रपंची मतोनुं मंडन थशे. जनसमूहनी रुचि अधर्म भणी वळशे. सत्यदया हळवे हळवे पराभव पामशे. मोहादिक दोषोनी वृद्धि थती जशे. दंभी अने पापिष्ट गुरुओ पूज्यरुप थशे. दुष्टवृत्तिनां मनुष्यो पोताना फंदमां फावी जशे. मीठा पण धूर्त्तवक्ता पवित्र मनाशे शुद्ध ब्रह्मचर्यादिक शीलयुक्त पुरुषो मलिन कहेवाशे. आत्मिकज्ञानना भेदो हणाता जशे; हेतु वगरनी क्रिया वधती जशे. अज्ञानक्रिया बहुधा सेवाशे;व्याकूळ करे एवा विषयोनां साधनो वधतां जशे. एकांतिक पक्षो सत्ताधिश थशे. शृंगारथी धर्म मनाशे.

खरा क्षत्रियोविना भूमि शोकग्रस्त थशे. निर्माल्य राजवंशीओ वेश्याना विलासमां मोह पामशे; धर्म, कर्म, अने खरी राज-

नीति भूली जशे; अन्यायने जन्म आपशे. जेम लूटाशे तेम प्रजाने लूटशे. पोते पापिष्ट आचरणो सेवी प्रजा आगळ ते पळावता जशे. राजवीजनने नामे शून्यता आवती जशे. नीच मंत्रियोनी महत्ता वधती जशे. एओ दीनप्रजाने चुसीने भंडार भरवानो राजाने उपदेश आपशे. शीयळभंग करवानो धर्म राजाने अंगीकार करावशे. शौर्यादिक सद्गुणोनो नाश करावशे. मृगयादिक पापमां अंध बनावशे. राज्याधिकारीओ पोताना अधिकारथी हजारगणी अहंपदता राखशे. विप्रो लालचु अने लोभी थइ जशे. सद्विद्याने दाटी देशे; संसारी साधनोने धर्म ठरावशे. वैश्यो मायावि, केवळ स्वार्थि अने कठोर हृदयना थता जशे. समग्र मनुष्यवर्गनी सद्वृत्तियो घटती जशे. अकृत्य अने भयंकर कृत्यो करतां तेओनी वृत्ति अटकशे नहीं. विवेक, विनय, सरळता इ० सद्गुणो घटता जशे. अनुकंपाने नामे हीनता थशे. माता करतां पत्निमां प्रेम वधशे; पिता करतां पुत्रमां प्रेम वधशे; पातिव्रत्य नियम पूर्वक पाळनारी सुंदरीओ घटी जशे. स्नानथी पवित्रता गणाशे; धनथी उत्तमकूळ गणाशे. गुरुथी शिष्यो अवळा चालशे. भूमिनो रस घटी जशे. संक्षेपमां कहेवानो भावार्थ के उत्तम वस्तुनी क्षीणता छे; अने कनिष्ट वस्तुनो उदय छे. पंचमकाळनुं स्वरुप आमांनुं प्रत्यक्ष सूचवन पण केटलुं बधुं करेछे!

मनुष्य सद्धर्मतत्त्वमां परिपूर्ण श्रद्धावान नहीं थइ शके; संपूर्ण तत्त्वज्ञान नहीं पामी शके; जंबुस्वामीना निर्वाण पछी दश निर्वाणी वस्तु आ भरतक्षेत्रथी व्यवछेद गइ.

पंचमकाळनुं आवुं स्वरूप जाणीने विवेकी पुरुषो तत्त्वने ग्रहण करशे; काळानुसार धर्मतत्त्वश्रद्धा पामीने उच्चगति साधी परिणामे मोक्ष साधशे. निर्ग्रंथप्रवचन, निर्ग्रंथ गुरु इ० धर्मतत्त्व पामवानां साधनो छे. एनी आराधनाथी कर्मनी विराधना छे.

शिक्षापाठ ८२ तत्त्वावबोध. भाग १.

दशवैकालिक सूत्रमां कथन छे के जेणे जीवाजीवना भाव नथी जाण्या ते अबुध संयममां स्थिर केम रही शकशे? ए वचनामृतनुं तात्पर्य एम छे के तमे आत्मा, अनात्मानां स्वरूपने जाणो, ए जाणवानी परिपूर्ण अवश्य छे.

आत्मा अनात्मानुं सत्य स्वरूप निर्ग्रंथप्रवचनमांथीज प्राप्त थई शके छे. अनेक अन्य मतोमां ए बे तत्त्वो विषे विचारो दर्शाव्या छे, पण ते यथार्थ नथी. महा प्रज्ञावंत आचार्योए करेला विवेचन सहित प्रकारांतरे कहेलां मुख्य नव तत्त्वने विवेकबुद्धिथी जे ज्ञेय करे छे, ते सत्पुरुष आत्मस्वरूपने ओळखी शके छे.

स्याद्वादशैली अनुपम, अने अनंत भावभेदथी भरेली छे; ए शैलीने परिपूर्ण तो सर्वज्ञ अने सर्वदर्शीज जाणी शके; छतां एओनां वचनामृतानुसार आगम उपयोगथी यथामति नव तत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं अवश्यनुं छे. ए नवतत्त्व प्रिय श्रद्धा भावे जाणवाथी परम विवेकबुद्धि, शुद्ध सम्यक्त्व अने प्रभाविक आत्मज्ञाननो उदय थाय छे. नव तत्त्वमां लोकालोकनुं संपूर्ण स्वरूप आवी जाय छे. जे प्रमाणे जेनी बुद्धिनी गति छे, ते

प्रमाणे तेओ तत्त्वज्ञान संबंधी दृष्टि पहोंचाडे छे; अने भावानुसार तेओना आत्मानी उज्ज्वलता थाय छे. ते वडे तेओ आत्मज्ञाननो निर्मळ रस अनुभवे छे. जेनुं तत्त्वज्ञान उत्तम अने सूक्ष्म छे, तेमज सुशीलयुक्त जे तत्त्वज्ञानने सेवे छे ते पुरुष महद्भागी छे.

ए नवतत्त्वनां नाम आगळना शिक्षापाठमां हुं कही गयो छउं; एनुं विशेष स्वरूप प्रज्ञावंत आचार्योना महान् ग्रंथोथी अवश्य मेळववुं; कारण सिद्धांतमां जे जे कह्युं छे, ते ते विशेष भेदथी समजवा माटे सहायभूत प्रज्ञावंत आचार्यविरचित ग्रंथो छे. ए गुरुगम्यरूप पण छे. नय, निक्षेपा अने प्रमाणभेद नवतत्त्वनां ज्ञानमां अवश्यनां छे; अने तेनी यथार्थ समजण ए प्रज्ञावंतोए आपीछे.

शिक्षापाठ ८२ तत्त्वावबोध भाग २.

सर्वज्ञ भगवाने लोकालोकना संपूर्ण भाव जाण्या अने जोया तेनो उपदेश भव्य लोकोने कर्यो. भगवाने अनंत ज्ञानवडे करीने लोकालोकनां स्वरूपविषेना अनंत भेद जाण्या हता; परंतु सामान्य मानवियोने उपदेशथी श्रेणिए चढवा मुख्य देखाता नव पदार्थ तेओए दर्शाव्या. एथी लोकालोकना सर्व भावनो एमां समावेश थइ जाय छे. निर्ग्रंथप्रवचननो जे जे सूक्ष्म बोध छे, ते तत्त्वनी दृष्टिए नवतत्त्वमां समाइ जाय छे; तेमज सघळा धर्ममतोना सूक्ष्म विचार ए नवतत्त्वविज्ञानना एक देशमां आवी जाय छे. आत्मानी जे अनंत शक्तियो ढंकाइ

रहीछे तेने प्रकाशित करवा अर्हत भगवानतो पवित्र बोधछे; ए अनंत शक्तिओ त्यारे प्रफुल्लित थइ शके के ज्यारे नवतत्व विज्ञानमां पारावार ज्ञानी थाय.

सूक्ष्म द्वादशांगी ज्ञान पण ए नवतत्व स्वरुप ज्ञानने सहायरुप छे. भिन्न भिन्न प्रकारे ए नवतत्वस्वरुपना ज्ञाननो बोध करे छे; एथी आ निःशंक मानवा योग्य छे के नवतत्व जेणे अनंत भाव भेदे जाण्यां ते सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थयो.

ए नवतत्व त्रिपदीने भावे लेवा योग्यछे. हेय, ज्ञेय अने उपादेय एटले त्याग करवा योग्य, जाणवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य एम त्रण भेद नवतत्व स्वरुपना विचारमां रहेलाछे.

प्रश्न —जे त्यागवारुप छे तेने जाणीने करवुं शुं? जे गाम न जवुं तेनो मार्ग शा माटे पूछवो?

उत्तरः—ए तमारी शंका सहजमां समाधान थइ शके तेवी छे. त्यागवारुप पण जाणवा अवश्य छे. सर्वज्ञ पण सर्व प्रकारे [illegible] त्यागवारुप वस्तुंने जाणवानुं मूळ [illegible] वर्णी कोइ प्रकार तेवी प्रकार. [illegible] पूरी वाटमां जे [illegible] माग [illegible] पण पूछवा पडशे; नहींतो ज्यां [illegible] पूछवां पण त्यां [illegible] करवां नहीं [illegible] जाणवां पण ग्रहण करवां नहिं. जेम वाटमां [illegible] त्याग कर्यो तेम तेवी पण त्याग करवी जाणवां छ

शिक्षापाठ ८४ तत्त्वावबोध भाग ३.

नवतत्त्वनुं कालभेदे जे सत्पुरुषो गुरुगम्यताथी श्रवण, मनन अने निदिध्यासन पूर्वक ज्ञान लेछे, ते सत्पुरुषो महापुण्यशाळी तेमज धन्यवादने पात्र छे. प्रत्येक सुज्ञपुरुषोने मारो विनयभावभूषित एज बोध छे के नवतत्त्वने स्वबुद्ध्यानुसार यथार्थ जाणवां.

महावीर भगवंतना शासनमां बहु मतमतांतर पडी गयां छे, तेनुं मुख्य कारण तत्त्वज्ञान भणीथी उपासक वर्गनुं लक्ष गयुं ए छे. मात्र क्रियाभाव पर राचता रह्या; जेनुं परिणाम दृष्टिगोचर छे. अंग्रेजोना शोधमां आवेली पृथ्वीनी वस्ति एक अबज अने चाळीश क्रोडनी गणाइ छे; तेमां सर्व गच्छनी मळीने जैनप्रजा मात्र वीश लाख छे. ए प्रजा ते श्रमणोपासक छे. एमांथी हुं धारुं छउं नवतत्त्वने पठनरूपे बे हजार पुरुषो पण मांड जाणता हशे; मनन अने विचारपूर्वक तो आंगळीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण नहीं हशे. ज्यारे आवी पतित स्थिति तत्त्वज्ञान संबंधी थइ गइ छे त्यारेज मतमतांतर वधी पड्यां छे. एक लौकिक कथन छे के "सो शाणे एक मत तेम" अनेक तत्त्वविचारक पुरुषोना मतमां भिन्नता बहुधा आवती नथी.

ए नवतत्त्व विचार संबंधी प्रत्येक मुनिओने मारी विज्ञप्ति छे के विवेक अने गुरुगम्यताथी एनुं ज्ञान विशेष वृद्धिमान करवुं; एथी तेओनां पवित्र पंच महाव्रत दृढ थशे; जिनेश्वरनां

वचनामृतना अनुपम आनंदनी प्रसादि मळशे; मुनित्वआचार पाळवामां सरळ थइ पडशे. ज्ञान अने क्रिया विशुद्ध रहेवाथी सम्यक्त्वनो उदय थशे; परिणामे भवांत थइ जशे.

शिक्षापाठ ८९ तत्त्वावबोध भाग ८.

जे जे श्रमणोपासक नवतत्त्व पठनरूपे पण जाणता नथी तेओए ते अवश्य जाणवां. जाण्या पछी बहु मनन करवां. समजाय तेटला गंभीर आशय गुरुगम्यताथी सद्भावे करीने समजवा. एथी आत्मज्ञान उज्ज्वळता पामशे; अने यमनियमादिकनुं बहु पालन थशे.

नवतत्त्व एटले तेनुं एक सामान्य गूंथनयुक्त पुस्तक होय ते नहीं; परंतु जे जे स्थळे जे जे विचारो ज्ञानीओए प्रणीत कर्या छे, ते ते विचारो नवतत्त्वमांना अमुक एक बे के विशेष तत्त्वना होय छे. केवळी भगवाने ए श्रेणिओथी सकळ जगत्मंडळ दर्शावी दीधुं छे. एथी जेम जेम नयादि भेदथी ए तत्त्वज्ञान मळशे तेम तेम अपूर्व आनंद अने निर्मळतानी प्राप्ति थशे; मात्र विवेक, गुरुगम्यता अने अप्रमाद जोइए. ए नवतत्त्वज्ञान मने बहु प्रिय छे. एना रसानुभवीओ पण मने सदैव प्रिय छे.

कालभेदे करीने आ वखते मात्र मति अने श्रुत ए बे ज्ञान भरतक्षेत्रे विद्यमान छे; बाकीनां त्रण ज्ञान व्यवच्छेद छे; छतां जेम जेम पूर्ण श्रद्धाभावथी आ नवतत्त्वना विचारोनी गुफामां उतराय छे तेम तेम तेना अंदर अद्भुत आत्मप्रकाश,

आनंद, समर्थ तत्त्वज्ञाननी स्फूरणा, उत्तम विनोद अने गंभिर चळकाट दिग् करी दइ शुद्ध सम्यक् ज्ञानना ते विचारो बहु उदय करेछे. स्याद्वादवचनामृतना अनंत सुंदर आशय समजवानी शक्ति आ काळमां आ क्षेत्रथी विच्छेद गयेली छतां ते परत्वे जे जे सुंदर आशयो समजाय छे ते ते आशयो अति अति गंभिर तत्त्वथी भरेला छे. पुनःपुनः ते आशयो मनन करायतो चार्वाकमतिना चंचळ मनुष्यने पण सध्धर्ममां स्थिर करी दे तेवा छे. संक्षेपमां सर्व प्रकारनी सिद्धि, पवित्रता, महाशील निर्मळ ऊंडा अने गंभिर विचार, स्वच्छ वैराग्यनी भेट ए तत्त्वज्ञानथी मळे छे.



शिक्षापाठ ८६ तत्त्वावबोध. भाग ५.

एकवार एक समर्थ विद्वानसाथे निर्ग्रंथप्रवचननी चमत्कृति संबंधी वातचित थइ; तेना संबंधमां ते विद्वाने जणाव्युं के आटलुं हुं मान्य राखुं छउं के महावीर ए एक समर्थ तत्त्वज्ञानी पुरुष हता; एमणे जे बोध कर्यो छे, ते झील्ली लइ प्रज्ञावंत पुरुषोए अंग उपांगनी योजना करी छे; तेना जे विचारो छे ते चमत्कृति भरेला छे; परंतु ए उपरथी लोकालोकनुं ज्ञान एमां रह्युं छे एम हुं कही न शकुं. एम छतां जो तमे कंइ ए संबंधी प्रमाण आपता हो तो हुं ए वातनी कंइ श्रद्धा लावी शकुं. एना उत्तरमां में एम कह्युं के हु कंइ जैन वचनामृतने यथार्थ तो शुं पण विशेष भेदे करीने पण जाणतो नथी; पण जे सामान्य भावे जाणुं छउं एथी पण प्रमाण आपी शकुं खरो. पछी नव-

तत्त्वविज्ञान संबंधी वातचित नीकळी. में कह्युं एमां आखी सृष्टिनुं ज्ञान आवी जाय छे; परंतु यथार्थ समजवानी शक्ति जोइए. पछी तेओए ए कथननुं प्रमाण माग्युं, त्यारे आठ कर्म में कही बताव्यां; तेनी साथे एम सूचव्युं के ए शिवाय एनाथी भिन्न भाव दर्शावे एवुं नवमुं कर्म शोधी आपो; पापनी अने पुण्यनी प्रकृतिओ कहीने कह्युं आ शिवाय एक पण वधारे प्रकृति शोधी आपो. एम कहेतां अनुक्रमे वात लीधी. प्रथम जीवना भेद कही पूछ्युं एमां कंइ न्यूनाधिक कहेवा मागो छो? अजीवद्रव्यना भेद कही पूछ्युं, कंइ विशेषता कहो छो? एम नव तत्त्व संबंधी वातचित थइ त्यारे तेओए थोडीवार विचार करीने कह्युं आ तो महावीरनी कहेवानी अद्भुत चमत्कृति छे के जीवनो एक नवो भेद मळतो नथी; तेम पापपुण्यादिकनी एक प्रकृति विशेष मळती नथी; अने नवमुं कर्म पण मळतुं नथी. आवा आवा तत्त्वज्ञानना सिद्धांतो जैनमां छे ए मारा लक्ष्यमां नहोतुं. आमां आखी सृष्टिनुं तत्त्वज्ञान केटलेक अंशे आवी शके खरं.

शिक्षापाठ ८७ तत्त्वावबोध. भाग ६.

एना उत्तरमां में जणाव्युं के हजु आप आटलुं कहो छो ते पण जैनना तत्त्वविचार आपना हृदय आव्या नथी त्यां सुधी; परंतु हुं मध्यस्थताथी सत्य कहुं छुं के एमां जे विशुद्ध ज्ञान बताव्युं छे ते क्यांय नथी; अने सर्व मतोए जे ज्ञान बताव्युं छे ते महावीरना तत्त्वज्ञानना एक भागमां आवी जाय छे. एमनुं कथन स्याद्वाद छे, एकपक्षी नथी.

तमे कह्युं के केटलेक अंशे सृष्टिनुं तत्त्वज्ञान एमां आवी शके खरुं; परंतु ए मिश्रवचन छे. अमारी समजाववानी अल्पज्ञताथी एम बने खरुं; परंतु एथी ए तत्त्वोमां कंइ अपूर्णता छे एमतो नथीज. आ कंइ पक्षपाती कथन नथी. विचार करी आखी सृष्टिमांथी ए शिवायनुं एक दशमुं तत्त्व शोधतां कोइ काळे ते मळनार नथी. ए संबंधी प्रसंगोपात आपणे ज्यारे वातचित अने मध्यस्थ चर्चा थाय त्यारे निःशंकता थाय.

उत्तरमां तेओए कह्युं के आ उपरथी मने एम तो निःशंकता छे के जैन अद्भुत दर्शन छे. श्रेणिपूर्वक तमे मने केटलाक नवतत्त्वना भाग कही बताव्या एथी हुं एम बेधडक कही शकुं छउं के महावीर गुप्तभेदने पामेला पुरुष हता. एम सहजमात्र वात करीने "उप्पन्नेवा," "विगमेवा" "धुवेवा," ए लब्धिवाक्य मने तेओए कह्युं. ते कही बताव्या पछी तेओए एम जणाव्युं के आ शब्दोना सामान्य अर्थमां तो कंइ चमत्कृति देखाती नथी; उपजवुं, नाश थवुं अने अचळता, एम ए त्रण शब्दोना अर्थ छे. परंतु श्रीमन् गणधरोए तो एम दर्शित कर्युं छे के ए वचनो गुरुमुखथी श्रवण करतां आगळना भाविक शिष्योने द्वादशांगीनुं आशयभरित ज्ञान थतुं हतुं! ए माटे में कंइक विचारो पहोंचा-डी जोया छतां मने तो एम लाग्युं के ए बनवुं असंभवित छे, कारण अति अति सूक्ष्म मानेलुं सिद्धांतिक ज्ञान एमां क्यांथी समाय! ए संबंधी तमे कंइ लक्ष पहोंचाडी शकशो!

शिक्षापाठ ८८ तत्त्वावबोध भाग ७.

उपरमां में कह्युं के आ काळमां त्रण महाज्ञान भारतथी विच्छेद छे; तेम छतां हुं कंइ सर्वज्ञ के महाप्रज्ञावंत नथी छतां मारुं जेटलुं सामान्य लक्ष पहोंचे तेटलुं पहोंचाडी कंइ समाधान करी शकीश एम मने संभव रहेछे. त्यारे तेमणे कह्युं जो तेम संभव थतो होय तो ए त्रिपदी जीवपर "ना" ने "हा" विचारे उतारो. ते एम के जीव शुं उत्पत्तिरूप छे? तो के ना. जीव शुं विप्रणाशरूप छे? तो के ना. जीव शुं ध्रुवतारूप छे? तो के ना. आम एक वखत उतारो अने बीजी वखत जीव शुं उत्पत्तिरूप छे? तो के हा. जीव शुं विप्रणाशरूप छे? तो के हा. जीव शुं ध्रुवतारूप छे? तो के हा. आम उतारो. आ विचारो आखा मंडळे एकत्र करी योज्या छे. ए जो यथार्थ कही न शकाय तो अनेक प्रकारथी दूषण आवी शके. विप्रणाशरूप होय ए वस्तु ध्रुवरूप होय नहीं, ए पहेली शंका. जो उत्पत्ति, विप्रणाश अने ध्रुवता नथी तो जीव कयां प्रमाणथी सिद्ध करशो? ए बीजी शंका. विप्रणाश अने ध्रुवताने परस्पर विरोधाभास ए त्रीजी शंका. जीव केवळ ध्रुव छे तो उत्पत्तिमां हा कही ए असत्य. ए चोथो विरोध. उत्पन्न जीवनो ध्रुवभाव कहो तो उत्पन्न कोणे कर्यो? ए पांचमो विरोध. अनादिपणुं जतुं रहे छे ए छठ्ठी शंका. केवळ ध्रुव विप्रणाशरूप छे एम कहो तो चार्वाकमिश्र वचन थयुं ए सातमो दोष. उत्पत्ति अने विप्रणाशरूप कहेशो तो केवळ चार्वाकनो सिद्धांत ए आठमो दोष. उत्पत्तिनी ना, विप्रणाशनी

ना अने ध्रुवतानी ना कही पछी त्रणेनी हा कही एना वळी पाछा छ दोष. एटले सर्वाळे चौद दोष. केवळ ध्रुवता जतां तीर्थंकरनां वचन त्रुटी जाय ए पंदरमो दोष. उत्पत्तिध्रुवता लेतां कर्त्तानी सिद्धि थाय जेथी सर्वज्ञ वचन त्रुटी जाय ए सोळमो दोष. उत्पत्तिविघ्नतारूपे पापपुण्यादिकनो अभाव एटले धर्माधर्म सघळुं गयुं ए सत्तरमो दोष. उत्पत्ति विघ्नता अने सामान्य स्थितिथी (केवळ अचळ नहीं) त्रिगुणात्मक माया सिद्ध थायछे ए अढारमो दोष.



शिक्षापाठ ८९ तत्त्वाववोध भाग ८.

एटला दोष ए कथनो सिद्ध न थतां आवे छे. एक जैनमुनिए मने अने मारा मित्रमंडळने एम कह्युं हतुं के जैनसप्तभंगी नय अपूर्व छे, अने एथी सर्व पदार्थ सिद्ध थाय छे. नास्ति, अस्तिना एमां अगम्यभेद रह्या छे. आ कथन सांभळी अमे बधा घेर आव्या पछी योजना करतां करतां आ लब्धिवाक्यनी जीवपर योजना करी. हुं धारुं छउं के एवी नास्ति अस्तिना बन्नेभाव जीवपर नहीं उतरी शके. लब्धिवाक्यो पण क्लेशरूप था पडशे. जोकेण ए भणी मारी कंइ तिरस्कारनी दृष्टि नथी.

आनो उत्तरमां मेें कह्युं के आपे जे नास्ति अने अस्ति नय जीवपर उतारवा धार्यो ते सनिक्षेप शैलीथी नथी, एटले कदापि एमांथी एकांतिक पक्ष लेवाय; तेम वळी हुं कंइ स्याद्वाद शैलीनो यथार्थ जाणनार नथी, मंदमतिथी लेश भाग जाणुं

छउं. नास्ति अस्ति नय पण आपे यथार्थ शैली पूर्वक उतार्यो नथी. एटले हुं तर्कथी जे उत्तर दइ शकुं ते आप सांभळो.

उत्पत्तिमां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "जीव अनादि अनंत छे."

विप्नतामां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "एनो कोइ काळे नाश नथी."

ध्रुवतामां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के" एक देहमां ते सदैवने माटे रहेनार नथी."

—:०:—

शिक्षापाठ ९० तत्त्वावबोध भाग ९.

उत्पत्तिमां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "जीवनो मोक्ष थया सुधी एक देहमांथी च्यवन पामी ते बीजा देहमां उपजे छे."

विप्नतामां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के" ते जे देहमांथी आव्यो त्यांथी विप्न पाम्यो; वा क्षण क्षण प्रति एनी आत्मिक ऋद्धि विषयादिक मरणवडे रुंधाइ रही छे, ए रुपे विप्नता योजी शकाय छे."

ध्रुवतामां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "द्रव्ये करी जीव कोइ काळे नाश रुप नथी, त्रिकाळ सिद्ध छे."

हवे एथी करीने एटले ए अपेक्षाओ लक्षमां राखतां योजेला दोष पण हुं धारुं छउं के टळी जशे.

१ जीव विभ्ररूपे नथी माटे ध्रुवता सिद्ध थइ. ए पहेलो दोष टळ्यो.

२ उत्पत्ति, विभ्रता अने ध्रुवता ए भिन्न भिन्न न्याये सिद्ध थइ; एटले जीवनुं सत्यत्व सिद्ध थयुं ए बीजो दोषगयो.

३ जीवनां सत्यस्वरूपे ध्रुवता सिद्ध थइ एटले विभ्रता गइ. ए त्रीजो दोष गयो.

४ द्रव्य भावे जीवनी उत्पत्ति असिद्ध थइ ए चोथो दोष गयो.

५ अनादि जीव सिद्ध थयो एटले उत्पत्ति संबंधीनो पांचमो दोष गयो.

६ उत्पत्ति असिद्ध थइ एटले कर्त्ता संबंधीनो छठ्ठो दोष गयो.

७ ध्रुवता साथे विभ्रता लेतां अबाध थयुं एटले चार्वाक मिश्रवचननो सातमो दोष गयो.

८ उत्पत्ति अने विभ्रता पृथक् पृथक् देहे सिद्ध थइ माटे केवळ चार्वाकसिद्धांत ए नामनो आठमो दोष गयो.

१४ शंकानो परस्परनो विरोधाभास जतां चौदमुधीना दोष गया.

१५ अनादि अनंतता सिद्ध थतां स्याद्वादवचन सत्य थयुं ए पंदरमो दोष गयो.

१६ कर्त्ता नथी ए सिद्ध थतां जिनवचननी सत्यता रही ए सोळमो दोष गयो.

१७ धर्माधर्म, देहादिक पुनरावर्त्तन सिद्ध थतां सत्तरमो दोष गयो.

१८ ए सर्व वात सिद्ध थतां त्रिगुणात्मक माया असिद्ध थइ ए अढारमो दोष गयो.

—:o:—

शिक्षापाठ ९१ तत्त्वावबोध भाग १०.

आपनी योजेली योजना हुं धारुं छउं के आथी समाधान पामी हशे. आ कंइ यथार्थ शैली उतारी नथी, तोपण एमां कंइ पण विनोद मळी शके तेम छे. ए उपर विशेष विवेचनने माटे घोडोळो वखत जोइए एटले वधारे कहेतो नथी; पण एक बे टुंकी वात आपने कहेवानी छे ते जो आ समाधान योग्य थयुं होय तो कहुं. पछी तेओ तरफथी मनमानतो उत्तर मळ्यो, अने एक बे वात जे कहेवानी होय ते सहर्ष कहो एम तेओए कह्युं.

पछी में मारी वात संजीवन करी लब्धि संबंधी कह्युं. आप ए लब्धि संबंधी शंका करो के एने क्लेशरुप कहो तो ए वचनोने अन्याय मळे छे. एमां भति अति उज्वळ आत्मिक शक्ति गुरुगम्यता अने वैराग्य जोइए छीए. ज्यां सुधी तेम नथी, त्यां सुधी लब्धि विषे शंका रहे खरी; पण हुं धारुं छउं के आ वेळा ए संबंधी कहेला बे बोल निरर्थक नहीं जाय. ते ए के जेम आ योजना नास्ति अस्तिपर योजी जोइ, तेम एमां पण बहु सूक्ष्म विचार करवाना छे. देहे देहनी प्रथक प्रथक उत्पत्ति, च्यवन, विश्राम, गर्भाधान, पर्याप्ति, इंद्रिय, सत्ता, ज्ञान, संज्ञा आयुष्य विषय इ० अनेक कर्मप्रकृति प्रत्येक भेद लेतां जे विचारो ए लब्धिथी नीकळे ते अपूर्व छे. ज्यां सुधी लक्ष पहोंचे त्यां सु

थी सघळा विचार करे छे. परंतु द्रव्यार्थिक भावार्थिक नये आ-
खी सृष्टिनुं ज्ञान ए त्रण शब्दोमां रह्युंछे, तेनो विचार कोइज करे
छे;ने सद्गुरु मुखनी पवित्र लब्धिरूपे ज्यारे आवे त्यारे द्वादशांगी
ज्ञान शा माटे न थाय? जगत् एम कहेतांज मनुष्य एक घ-
र, एक वास, एक गाम, एक शेहेर, एक देश, एक खंड एक
पृथ्वि ए सघळुं मूकी दइ असंख्यात द्वीप समुद्रादिथी
भरपूर वस्तु केम समजी जाय छे? एनुं कारण मात्र एटलुंज
के ते ए शब्दनी बहोळताने समज्युं छे, किंवा एनुं लक्ष एवी अ-
मुक बहोळताए पहोंच्युं छे; जेथी जगत् एम कहेतां एवडो
मोटो मर्म समजी शकेछे; तेमज ऋजु अने सरळ सत्पात्र शिष्यो
निर्ग्रंथ गुरुथी ए त्रण शब्दोनी गम्यता लइ द्वादशांगी ज्ञान
पामता हता. आवी रीते ते लब्धि अल्पज्ञता छतां विवेक जोतां
क्लेशरूप पण नथी.

शिक्षापाठ ९२ तत्त्वावबोध भाग ११.

एमज नरकना संबंधीछे. जैनमत कहे छे के "जगत्" अनादि छे. एम बेधडक कही बताव्युं हतुं, तेने पूर्वे शुं ते सर्वज्ञना मूळ भेद विना कह्युं हशे? तेम एनो निर्णयना विषे ज्यारे आप योजशो त्यारे निश्चय एवो विचार करशो के ए परमेश्वर हता. कर्त्ता नहोतो अने जगत अनादि हतुं तो तेम कह्युं. एनां अपक्षपाति अने केवळ तत्त्वमय विचारो आपे अव-श्य विवेकवा योग्य छे. जैन दर्शनना अवर्णवादीओ केवळ नथी जाणता एटले एने अन्याय आपे छे, ते ममत्वथी अधोगति सेवशे.

आ पछी केटलीक वार्तचित्त थइ. प्रसंगोपात ए तत्त्व विचारवानुं वचन लइने सहर्ष अमारुं त्यांथी उठवुं थयुं.

तत्त्वावबोधना संबंधमां आ कथन केहेवायुं. अनंतभेदथी भरेला ए तत्त्व विचारो काळभेदथी जेटला ज्ञेय थाय तेटला जाणवा; ग्राह्य थाय तेटला ग्रहवा; अने त्याज्य देखाय तेटला त्यागवा.

ए तत्वोने जे यथार्थ जाणेछे; ते अनंत चतुष्टयथी विराजमान थाय छे ए सत्य समजवुं; ए नवतत्त्वनां क्रमवार नाम मूकवामां पण अरथुं सूचवन जीवने मोक्षनी निकटतानुं जणायछे!

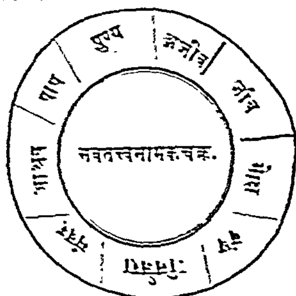


शिक्षापाठ ९३ तत्त्वावबोध भाग १२.

एनो तमारा लक्षमां छे के जीव अजीव ए अनुक्रमथी छेवटे मोक्ष नाम आवे छे. हवे ते एक पछी एक मूकी जइए तो जीव अने मोक्षने अनुक्रमे आद्यंत रहेवुं पडशे.

जीव.
अजीव.
पुण्य.
पाप.
आश्रव.
संवर.
निर्जरा.
बंध.
मोक्ष.

आगळ कहेवायुं छे के एनाम मूकवामां जीव अने मोक्षने निकटता छे. छतां आ निकटता तो न थइ;पण जीव अने अजीवने निकटता थइ.वस्तुतः एम नथी.अज्ञानवडे तो ए बन्नेनेज निकटता रहीछे;पण ज्ञानवडे जीव अने मोक्षने निकटता रहीछे जेमके:—



हवे जुओ ए बन्नेने कंइ निकटता आवी छे? हा कहेली निकटता आवी गइ छे. पण ए निकटता तो द्रव्यरूप छे. ज्यारे भावे निकटता आवे त्यारे सर्व सिद्धि थाय.ए द्रव्य निकटतानुं साधन सत्शास्त्रत्व, सद्‌गुरुत्व अने सद्‌धर्मत्व ओळखी सद्‌हेतु ए छे. भावनिकटता एटले केवळ एकज रूप यथा ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र साधनरूप छे.

ए चक्रथी एवी पण आशंका थाय के ज्यारें बन्ने निकट छे त्यारे शुं बाकीनां त्यागवां? उत्तरमां कहेवानुं के जो सर्व त्यागी शकता होतो त्यागी दो. एटले मोक्षरूप थशो. नहितो हेय, ज्ञेय, उपादेयनो बोध ल्यो. एटले आत्मसिद्धि प्राप्त थशे.

—※—

शिक्षापाठ ९४ तत्वावबोध भाग १३.

जे जे कहेवायुंछे ते ते कंइ केवळ जैनकुळथी जन्म पामेला पुरुषने माटे नथी, परंतु सर्वने माटेछे. तेम आ पण निःशंक मानजो के जे कंइ कहेवाय छे ते अपक्षपाते अने परमार्थबुद्धिथी कहेवाय छे.

तमने जे धर्मतत्व कहेवानुं छे, ते पक्षपात के स्वार्थबुद्धिथी कहेवानुं अमने कंइ प्रयोजन नथी; पक्षपात के स्वार्थथी तमने अधर्मतत्व बोधी अमे अधोगतिने शामाटे साधियें! वारंवार तमने निर्ग्रंथनां वचनामृतो माटे कहेवायछे, तेनुं कारण ते वचनामृतो तत्वमां परिपूर्ण छे, ते छे. जिनेश्वरोने एवुं कोइपण कारण नहोतुं के ते निमित्ते तेओ मृषा के पक्षपाती बोधे; तेम एओ अज्ञानी नहता, के एथी मृषा बोधाइ जवाय. आशंका करशो के ए अज्ञानी नहोता ए शा उपरथी जणाय? तो तेना उत्तरमां एओना पवित्र सिद्धांतोना रहस्यने मनन करवानुं कहियें छिए. अने एम जे करशे ते तो पुनःआशंका लेश पण नहींकरे. जैनमतप्रवर्त्तकोएमने अमारे कंइ रागबुद्धि नथी, के एमाटे पक्षपाते अमे कंइपण तमने कहियें, तेमज अन्यमत प्रवर्त्तकोपरत्वे अमारे कंइ वैरबुद्धि नथी के मिथ्या एनु खंडन करियें बन्नेमां अमेतो मंदमतिमध्यस्थरुप छिए. बहुबहुमननथी अने अमारी मति ज्यां सुधी पहोंची त्यांसुधीना विचारथी अमे विनयथी कहियें छियें के जैन जेवुं एके पूर्ण अने पवित्र दर्शन नथी; वीतराग जेवो एके

देव नथी, तरीने अनंत दुःखथी पार पामवुं होय तो ए सर्वज्ञ दर्शनरुप कल्पवृक्षने सेवो.

शिक्षापाठ ९५ तत्त्वावबोध भाग १४.

जैन ए एटली बधी सूक्ष्म विचारसंकळनाथी भरेलुं दर्शन छे के एमां प्रवेश करतां पण बहु वखत जोइए. उपर उपरथी के कोइ प्रतिपक्षीना कहेवाथी अमुक वस्तु संबंधी अभिप्राय बांधवो के आपवो ए विवेकीनुं कर्त्तव्य नथी. एक तळाव संपूर्ण भर्युं होय, तेनुं जळ उपरथी समान लागे छे; पण जेम जेम आगळ चालीए छीए तेम तेम वधारे वधारे उंडापणुं आवतुं जाय छे; छतां उपरतो जळ सपाटज रहे छे; तेम जगत्ना सघळा धर्ममतो एक तळाव रुप छे, तेने उपरथी सामान्य सपाटी जोइने सरखा कही देवा ए उचित नथी. एम कहेनारा तत्वने पामेला पण नथी. जैनना अेकेका पवित्र सिद्धांतपर विचार करतां आयुष्य पूर्ण थाय, तो पण पार पमाय नहीं तेम रह्युंछे. बाकीना सघळा धर्ममतोना विचार जिनप्रणीत वचनामृतसिंधु आगळ एक बिंदुरुप पण नथी.जैनमत जेणे जाण्यो, अने सेव्यो ते केवळ निरागी अने सर्वज्ञ थइ जाय छे. एना प्रवर्त्तको केवा पवित्र पुरुषो हता! एना सिद्धांतो केवा अखंड संपूर्ण अने दयामय छे!एमां दूषण तो कांइछेज नहिं!केवळ निर्दोष तो मात्र जैनुं दर्शन छे! एवो एके पारमार्थिक विषय नथी के जे जैनमां नहीं होय अने एवुं एके तत्त्व नथी के जे जैनमां नथी; एक विषयने अनंतभेदे परिपूर्ण कहेनार ते जैनदर्शन छे. प्रयोजन-

भूततत्व एना जेवुं क्यांय नथी. एक देहमां बे आत्मा नथी; तेम आखी सृष्टिमां बे जैन एटले जैननी तुल्य बीजुं दर्शन नथी. आम कहेवानुं कारण शुं? तो मात्र तेनी परिपूर्णता, निरागीता, सत्यता अने जगद् हितैषिता.

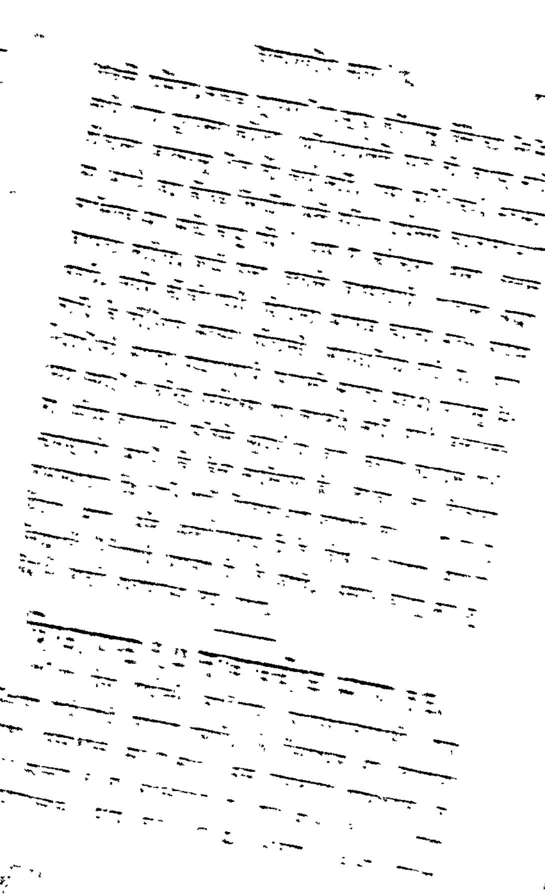


शिक्षापाठ ९६ तत्त्वावबोध भाग १५.

न्यायपूर्वक आटलुं अमारे पण मान्य राखवुं जोइएके ज्यारे एकदर्शनने परिपूर्ण कही वात सिद्ध करवी होय त्यारे प्रतिपक्षनी मध्यस्थ बुद्धिथी अपूर्णता दर्शाववी जोइए. पण ए बे वातपर विवेचन करवा जेटली अहीं जग्यो नथी; तो पण थोडुं थोडुं कहेता आव्या छिए. मुख्यत्वे कहेवानुं के ए वात जेने रुचिकर थती नहोय के असंभवित लागती होय तेणे जैनतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो अने अन्यतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो मध्यस्थ बुद्धिथी मनन करी न्यायने कांटे तोलन करवुं. ए उपरथी अवश्य एटलुं महावाक्य नीकळशे, के जे आगळ नगारा पर दांडी ठोकीने कहेवायुं हतुं ते खरुं छे.

जगत् गाडरियो प्रवाह छे. धर्मना मतभेद संबंधीना शिक्षापाठमां दर्शाव्या प्रमाणे अनेक धर्ममतनी जाल लागी पडी छे. विशुद्ध आत्मा कोइकज थाय छे. विवेकथी तत्वने कोइकज शोधे छे एटले जैन तत्त्वने अन्यदर्शनियो शा माटे जाणता नथी ए खेद के आशंका करवा जेवुंज नथी.

छतां एने बहु आश्चर्य लागे छे के केवळ शुद्ध परमात्म-



विचार करवानी प्रेरणा नथी. पण जो ए उपरथी एम विचारवामां आवे के त्यारे जैन जगतने अनादि अनंत कहे छे ते कया न्यायथी कहेछे ? जगत्कर्त्ता नथी एम कहेवामां एमनुं निमित्त शुं छे ? एम एक पछी एक भेदरूप विचारथी तेओ जैननी पवित्रतापर आवी शके. जगत् रचवानी परमेश्वरने अवश्य शी हती ? रच्युं तो सुख दुःख मूकवानुं कारण शुं हतुं ? रचीने मोत शा माटे मूक्युं ? ए लीला कोने बताववी हती ? रच्युं तो कयां कर्मथी रच्यु ? ते पहेलां रचवानी इच्छा कां नहोती ? ईश्वर कोण ? जगत्ना पदार्थ कोण ? अने इच्छा कोण ? रच्युं तो जगत्मां एकज धर्मनुं प्रवर्त्तन राखवु हतुं; आम भ्रमणामां नाखवानी अवश्य शी हती ? कदापि एम मानो के ए विचारानी भूल थइ ! हशे ! क्षमा करीए ! पण एवुं दोढ डहापण क्यांथी सूझ्युं के एनेज मूळथी उखेडनार एवा महावीर जेवा पुरुषोने जन्म आप्यो ? एवानां कहेला दर्शनने जगत्मां विद्यमानता कां आपी ? पोताना पगपर हाथे करीने कुहाडो मारवानी एने शुं अवश्य हती ? एक तो जाणे ए प्रकारे विचार, अने बाकी बीजा प्रकारे ए विचार के जैनदर्शन प्रवर्त्तकोने एनाथी कंइ द्वेष हतो ? जगत्कर्त्ता होत तो एम कहेवाथी एओना लाभने कंइ हानि पहोंचती हती ? जगत्कर्त्ता नथी, जगत् अनादि अनंत छे; एम कहेवामां एमने कंइ महत्ता मळी जती हती ? आवा अनेक विचारो विचारता जणाइ आवशे के जगतनुं स्वरूप छे तेमज ते पवित्र पुरुषोए कह्युं छे. एमां भिन्नभाव कहेवानुं एमने लेशमात्र प्रयोजन नहोतुं. सूक्ष्ममां सूक्ष्म जंतुनी रक्षा जेणे प-

पीत करीछे, एक रजकणथी करीने आखा जगत्‌ना विचारो जेणे सर्व भेदे कह्याछे तेवा पुरुषोनां पवित्र दर्शनने नास्तिक कहेनारा कयि गतिने पामशे ए विचारतां दया आवे छे !



शिक्षापाठ ९८ तत्त्वाववोध भाग १७.

ते न्यायथी जय मेळवी शकतो नथी; ते पछी गाळो भांडे छे; तेम पवित्र जैनना अखंड तत्त्वसिद्धांतो शंकराचार्य, दयानंद संन्यासी वगरे ज्यारे तोडी न शक्या त्यारे पछी जैन नास्तिक है, सो चार्वाकमेंसे उत्पन्न हुआ है एम कहेवा मांडयुं. पण ए स्थळे कोइ प्रश्न करे, के महाराज ! ए विवेचन तमे पछी करो. एवा शब्दो कहेवामां कंइ वखत विवेक के ज्ञान जोतुं नथी; पण आनो उत्तर आपो के जैनवेदथी कयि वस्तुमां उतरतो छे; एनुं ज्ञान, एनो बोध; एनुं रहस्य; अने एनुं सत्शील केवुं छे ते एकवार कहो ? आपना वेद विचारो कयी बाबतमां जैनथी चढे छे ? आम ज्यारे मर्मस्थानपर आवे त्यारे मौनता शीवाय तेओ पासे बीजुं कंइ साधन रहे नहीं. जे सत्पुरुषोनां वचनामृत अने योगबळथी आ सृष्टिमां सत्दया, तत्त्वज्ञान अने महाशील उदय पामेछे, ते पुरुषो करतां जे पुरुषो शृंगारमां राच्या पड्या छे, सामान्य तत्त्वज्ञानने पण नथी जाणता, जेनो आचार पण पूर्ण नथी. तेने चढता कहेवा.—परमेश्वरने नामे स्थापवा अने सत्यस्वरूपनां श्रवण [illegible] परमानंद स्वरूप पामेला ते नास्तिक कहेवा. ए एमना [illegible] वधा [illegible] वचन [illegible] छे त्यां [illegible] छे

ममत्व के राग छे त्यां सत्य तत्त्व नथी. ए वात आपणे शा माटे न विचारवी !

हुं एक मुख्य वात तमने कहुं छउं के जे ममत्वरहितनी अने न्यायनी छे. ते ए छे के गमे ते दर्शनने तमे मानो; गमे तो पछी तमारी दृष्टिमां आवे तेम जैनने कहो, सर्व दर्शनना शास्त्रतत्त्वने जुओ तेम जैनतत्त्वने पण जुओ. स्वतंत्र आत्मिकशक्तिए जे योग्य लागे ते अंगीकार करो. मारुं के बीजा गमे तेनुं भले एकदम तमे मान्य न करो पण तत्त्वने विचारो !

शिक्षापाठ ९९ समाजनी अगत्य.

आंग्लभौमियो संसारसंबंधी अनेक कळा कौशल्यमां शाथी विजय पाम्या छे ! ए विचार करतां आपणने तत्काळ जणाशे के तेओनो बहु उत्साह अने ए उत्साहमां अनेकनुं मळवुं. कळाकौशल्यना ए उत्साही कामोमां ए अनेक पुरुषोनी ऊभी करेली सभा के समाजे परिणाम शुं मेळव्युं ? तो उत्तरमां एम आवशे के लक्ष्मी, कीर्ति अने अधिकार. ए एमना उदाहरण उपरथी ए जातिनां कळाकौशल्यो शोधवानो हुं अहीं बोध करतो नथी; परंतु सर्वज्ञ भगवाननुं कहेलुं गुप्त तत्त्व प्रमादस्थितिमां आवी पड्युं छे, तेने प्रकाशित करवा तथा पूर्वाचार्योनां गूंथेलां महान शास्त्रो एकत्र करवा, पडेला गच्छना मतमतांतरने टाळवा तथा धर्मविद्याने प्रफुल्लित करवा सदाचारी श्रीमान अने धीमान बन्नेए मळीने एक महान समाज स्थापन करवानी आवश्यकता छे एम दर्शावुं छुं. पवित्र स्याद्वादमतनुं ढं-

कापवुं तत्त्व प्रसिद्धिमां आणवा त्यां सुधी प्रयोजन नथी, त्यां सुधी शासननी उन्नति पण नथी. लक्ष्मी, कीर्ति अने अधिकार संसारी कलाकौशल्यथी मळे छे, परंतु आ धर्मकलाकौशल्यथी तो सर्व सिद्धि सांपडशे. महान् समाजना अंतर्गत उपसमाज स्थापवा, वाडामां बेसी रहेवा करतां मतमतांतर तजी एम करवुं उचित छे. हुं इच्छुं छउं के ते कृत्यनी सिद्धि थइ जैनांतर्गच्छ मतभेद टळो; सत्य वस्तु उपर मनुष्यमंडळनुं लक्ष आवो; अने ममत्व जाओ!



शिक्षापाठ १०० मनोनिग्रहनां विघ्न.

वारंवार जे बोध करवामां आव्यो छे तेमांथी मुख्य तात्पर्य नीकळे छे ते ए छे के आत्माने तारो अने तारवा माटे तत्त्वज्ञाननो प्रकाश करो; तथा सत्शीलने सेवो. ए प्राप्त करवा जे जे मार्ग दर्शाव्या ते ते मार्ग मनोनिग्रहताने आधीन छे. मनोनिग्रहता थवा लक्षनी बहोळता करवी जरूरनी छे. ए बहोळतामां विघ्नरूप नीचेना दोष छे.

१ आळस.	११ तुच्छ वस्तुथी आनंद.
२ अनियमित ऊंघ.	१२ रसगारवलुब्धता.
३ विशेष आहार.	१३ अतिभोग.
४ उन्माद प्रकृति.	१४ पारकुं अनिष्ट इच्छवुं.
५ मायाप्रपंच.	१५ कारणविनानुं रळवुं.
६ अनियमित काम	१६ झाझानो स्नेह.
७ अकरणीयविलास.	१७ अयोग्यस्थळे जवुं.

८ मान.
९ मर्यादाउपरांतकाम.
१० आपवडाइ.

१८ एके उत्तम नियम साध्य न करवो.

ज्यां सुधी आ अष्टादश विघ्नथी मननो संबंधछे, त्यां सुधी अष्टादश पापस्थानक क्षय थवानां नथी. आ अष्टादश दोष जवाथी मनोनिग्रहता अने धारेली सिद्धि थइ शके छे. ए दोष ज्यांसुधी मनथी निकटता धरावेछे त्यां सुधी कोइपण मनुष्य आत्मसार्थक करवानो नथी. अति भोगने स्थळे सामान्य भोग नहीं, पण केवळभोग सागवृत्त जेणे धर्युंछे, तेमज ए एके दोषनुं मूळ जेनां हृदयमां नथी ते सत्पुरुष महद्‌भागी छे.

शिक्षापाठ १०१ स्मृतिमां राखवांयोग्य महावाक्यो.

१ एक भेदे नियम एज आ जगतनो प्रवर्त्तक छे.

२ जे मनुष्य सत्पुरुषोनां चरित्ररहस्यने पामेछे ते मनुष्य परमेश्वर थाय छे.

३ चंचळ चित्त एज सर्व विषम दुःखनुं मूळियुं छे.

४ झाझानो मेळाप अने थोडा साथे अति समागम ए बन्ने समान दुःखदायक छे.

५ समस्वभाविनुं मळवुं एने ज्ञानीओ एकांत कहेछे.

६ इंद्रियो तमने जीते अने सुख मानो ते करतां तेने तमे जीतवामांज सुख, आनंद अने परमपद प्राप्त करशो.

७ रागविना संसार नथी अने संसारविना राग नथी.

८ पुत्रावयनो सर्व संग परित्याग परमपदने आपेछे.

९ ते वस्तुना विचारमां पहोंचो के जे वस्तु अतींद्रिय स्वरुप छे.

१० गुणीना गुणमां अनुरक्त थाओ.

शिक्षापाठ १०२ विविध प्रश्नो भाग १.

आजे तमने हुं केटलांक प्रश्नो निर्ग्रंथप्रवचनानुसार उत्तर आपवा माटे पूछुं छउं. कहो धर्मनी अगत्य शी छे?

उ—अनादि काळथी आत्मानी कर्मजाळ टाळवा माटे.

प्र—जीव पहेलो के कर्म?

उ—बन्ने अनादि छेज. जीव पेहेलो होय तो ए विमळ वस्तुने मळ वळगवानुं कंइ निमित्त जोइए. कर्म पेहेलां कहो तो जीव विना कर्म कर्या कोणे? ए न्यायथी बन्ने अनादि छेज.

प्र—जीव रुपी के अरुपी?

उ—रुपी पण खरो; अने अरुपी पण खरो.

प्र—रुपी कया न्यायथी अने अरुपी कया न्यायथी ते कहो?

उ—देह निमित्ते रुपी अने स्वस्वरुपे अरुपी.

प्र—देह निमित्त शाथी छे?

उ—स्वकर्मना विपाकथी.

प्र—कर्मनी मुख्य प्रकृतियो केटली छे?

उ—आठ.

प्र—कयि कयि?

उ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनीय, मोहनीय, नाम,

गोत्र, आयुष्य अने अंतराय.

प्र—ए आठे कर्मनो सामान्य समज कहो?

उ—ज्ञानावरणी, एटले आत्मानी ज्ञान संबंधीनी जे अनंतशक्ति छे तेने आच्छादन थइ जवुं ते. दर्शनावरणी एटले आत्मानी जे अनंत दर्शनशक्तिछे तेने आच्छादन थइ जवुं ते. वेदनीय एटले देहनिमित्ते शाता अशाता बे प्रकारनां वेदनीय कर्म एथी अव्याबाध सुखरुप आत्मानी शक्ति रोकाइ रहेवी ते. मोहनीय कर्म एटले आत्मचारित्र रुप शक्ति रोकाइ रहेवी ते. नामकर्म एटले अमूर्तिरुप दिव्य शक्ति रोकाइ रहेवी ते. गोत्रकर्म एटले अटल अवगाहनारुप आत्मिकशक्ति रोकाइ रहेवी ते. आयुकर्म एटले अक्षय स्थिति गुण रोकाइ रहेवो ते. अंतराय कर्म एटले अनंत दान, लाभ, वीर्य, भागोपभोग शक्ति रोकाइ रहेवी ते.

शिक्षापाठ १०३ विविध प्रश्नो भाग २

प्र—ए कर्मो टळवाथी आत्मा क्यां जाय छे?

उ—अनंत अने शाश्वत मोक्षमां

प्र—आ आत्मानो मोक्ष कोइवार थयो छे?

उ—ना

प्र—कारण?

उ—मोक्ष थयेलो आत्मा कर्ममळ रहित छे. एथी पुनर्जन्म एने नथी.

प्र—केवळीनां लक्षण शुं?

उ—चार घनघाती कर्मनो क्षय करी शेष चार कर्मने पातळां

पाळे ते पुरुष त्रयोदश गुणस्थानकवर्ति विहार करेछे ते.

प्र—गुणस्थानक केटलां?

उ—चौद.

प्र—तेनां नाम कहो?

उ—१ मिथ्यात्वगुणस्थानक. २ सास्वादनगुणस्थानक. ३ मिश्रगुणस्थानक. ४ अविरतिसम्यग्दृष्टि गुणस्थानक. ५ देशविरतिगुणस्थानक. ६ प्रमत्तसंयतगुणस्थानक. ७ अप्रमत्तसंयतगुणस्थानक. ८ अपूर्वकरणगुणस्थानक. ९ अनिवृत्तिबादरगुणस्थानक. १० सूक्ष्मसंपरायगुणस्थानक. ११ उपशांतमोहगुणस्थानक. १२ क्षीणमोहगुणस्थानक. १३ सयोगीकेवळीगुणस्थानक. १४ अयोगी केवळीगुणस्थानक.

शिक्षापाठ १०४ विविध प्रश्नो भाग ३.

प्र—केवळी अने तीर्थंकर ए बंनेमां फेर शो?

उ—केवळी अने तीर्थंकर शक्तिमां समान छे; परंतु तीर्थंकरे पूर्वे तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्युं छे; तेथी विशेषमां बार गुण अने अनेक अतिशय प्राप्त करेछे.

प्र—तीर्थंकर पर्यटन करीने शा माटे उपदेश आपे छे? ए तो निरागी छे.

उ—तीर्थंकरनामकर्म जे पूर्वे बांध्युं छे ते वेदवा माटे तेओने अवश्य तेम करवुं पडे छे.

प्र—हमणां प्रवर्ते छे ते शासन कोनुं छे?

उ—श्रमण भगवान महावीरनुं.

प्र—महावीर पहेलां जैनदर्शन हतुं?

उ—हा.

प्र—ते कोणे उत्पन्न कर्युं हतुं?

उ—ते पहेलांना तीर्थंकरोए.

प्र—तेओना अने महावीरना उपदेशमां कंई भिन्नता खरी के?

उ—तत्त्वस्वरूपे एकज छे. भिन्न भिन्न पात्रने लईने उपदेश होवाथी अने कंईक काळभेद होवाथी सामान्य मनुष्यने भिन्नता लागे खरी; परंतु न्यायथी जोतां ए भिन्नता नथी.

प्र—एओनो मुख्य उपदेश शुं छे?

उ—आत्माने तारो; आत्मानी अनंतशक्तिओनो प्रकाश करो; एने कर्मरूप अनंत दुःखथी मुक्त करो ए.

प्र—ए माटे तेओए कयां साधनो दर्शाव्यां छे?

उ—व्यवहारनयथी सद्देव, सद्धर्म, अने सद्गुरुनुं स्वरूप जाणवुं; सद्देवना गुणग्राम करवा; त्रिविध धर्म आचरवो अने निर्ग्रंथ गुरुथी धर्मनी गम्यता पामवी ते.

प्र—त्रिविध धर्म कयो?

उ—सम्यग्ज्ञानरूप, सम्यग्दर्शनरूप अने सम्यक्चारित्ररूप.



शिक्षापाठ १०५ विविध प्रश्नो भाग ४.

प्र—आवुं जैनदर्शन ज्यारे सर्वोत्तम छे, त्यारे सर्व आत्माओ एना बोधने कां मानता नथी?

उ—कर्मनी बाहुल्यताथी, मिथ्यात्वनां जामेलां दळियांथी, अने सत्समागमना अभावथी.

प्र—जैनना मुनियोना मुख्य आचार शुं छे?

उ—पांच महाव्रत, दशविधि यतिधर्म, सप्तदशविधिसंयम, दशविधि वैयावृत्य, नवविधि ब्रह्मचर्य, द्वादश प्रकारना तप, क्रोधादिक चार प्रकार कषायनो निग्रह. विशेषमां ज्ञान, दर्शन चारित्रनुं आराधन इत्यादिक अनेक भेदछे.

प्र—जैनमुनियोना जेवांज संन्यासियोनां पंचयाम छे; अने बौद्धधर्मना पांच महाशील छे. एटले ए आचारमां तो जैनमुनियो अने संन्यासियो तेमज बौद्धमुनियो सरखा खरा के?

उ—नहीं.

प्र—केम नहीं?

उ—एओनां पंचयाम अने पंचमहाशील अपूर्ण छे. महाव्रतना प्रतिभेद जैनमां अति सूक्ष्म छे. पेला बेना स्थूळ छे.

प्र—सूक्ष्मताने माटे दृष्टांत आपो जोइए?

उ—दृष्टांत देखीतुंज छे. पंचयामियो कंदमूळादिक अभक्ष्य खाय छे; सुखशय्यामां पोढे छे; विविध जातनां वाहनो अने पुष्पनो उपभोग ले छे; केवळ शीतळ जळथी व्यवहार करे छे. रात्रिए भोजन ले छे. एमां थतो असंख्याता जंतुनो विनाश, ब्रह्मचर्यनो भंग एआदिनी सूक्ष्मता तेओ जाणता नथी. तेमज मांसादिक अभक्ष्य अने सुखशीलिया साधनोथी बौद्धमुनियो युक्त छे. जैन मुनियो तो केवळ एथी विरक्तज छे.

शिक्षापाठ १०६ विविध प्रश्नो भाग ५.

[illegible]

उ—[illegible]

असत्य प्रतिपक्षी गणायछे, तेम जैनदर्शनथी वेदनो संबंध छे.

प्र--ए बेमां सत्यरूप तमे कोने कहोछो ?

उ--पवित्र जैनदर्शनने.

प्र--वेददर्शनियो वेदने कहेछे तेनुं केम ?

उ--एतो मतभेद अने जैनना तिरस्कार माटेछे; परंतु न्यायपूर्वक बन्नेनां मूळतत्त्वो आप जोइ जशो.

प्र-आटलुं तो मने लागेछे के महावीरादिक जिनेश्वरनुं कथन न्यायना कांटापर छे; परंतु जगत्कर्त्तानी तेओ ना कहेछे, अने जगत् अनादि अनंतछे एम कहेछे ते विषे कंइ कंइ शंका थायछे के आ असंख्यात द्वीपसमुद्रयुक्त जगत् वगर बनाव्ये क्यांथी होय?

उ-आपने ज्यांसुधी आत्मानी अनंत शक्तिनो लेश पण दिव्य प्रसादी मळी नथी त्यांसुधी एम लागे छे; परंतु तत्त्वज्ञाने एम नहीं लागे. "सम्मतितर्क" आदिग्रंथनो आप अनुभव करशो एटले ए शंका नीकळी जशे.

प्र-परंतु समर्थ विद्वानो पोतानी मृषा वातने पण दृष्टांतादिकथी सिद्धांतिक करी दे छे; एथी ए त्रुटी शके नहीं, पण सत्य केम कहेवाय ?

उ-पण आने कंइ मृषा कथवानुं प्रयोजन नहोतुं, अने पळभर एम मानीये, के एम आपणने शंका थइ के ए कथन मृषा हशे ? तो पछी जगत्कर्त्ताए एवा पुरुषने जन्मपण कां आप्यो? नामबोळक पुत्रने जन्म आपवा शुं प्रयोजन हतुं ? तेम वळी ए पुरुषो सर्वज्ञ हता; जगत्कर्त्ता सिद्ध होत तो एम कहेवाथी तेओने कंइ हानि नहोती

शिक्षापाठ १०७ जिनेश्वरनी वाणी.

मनहर छंद.

अनंत अनंत भाव भेदथी भरेली भली,
अनंत अनंत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,
सकळ जगत हितकारिणी हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे;
उपमा आप्यानी जेने, तमा राखवी ते व्यर्थ,
आपवाथी निज मति मपाइ मे मानी छे.
अहो ! राजचंद्र बाळ, ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी, जाणी तेणे जाणी छे. १

शिक्षापाठ १०८ पूर्णमालिका मंगळ.

उपजाति.

तपोपध्याने रविरूप थाय,
ए साधीने सोम रही सुहाय;
महान ते मंगळ पंक्ति पामे,
आवे पछी ते बुधना प्रणामे. १
निर्ग्रंथ ज्ञाता गुरु सिद्धि दाता,
कां तो स्वयं शुक्र प्रपूर्ण ख्याता;
त्रियोग त्यां केवळ मंद पामे,
स्वरूप सिद्धे विचरी विरामे. २

[illegible]

[illegible]

समाप्त.